मासिक

शिविरा पत्रिका

वर्ष : 53 नवम्बर, 2012 अंक : 5

प्रकाशन तिथि : 2 नवम्बर, 2012

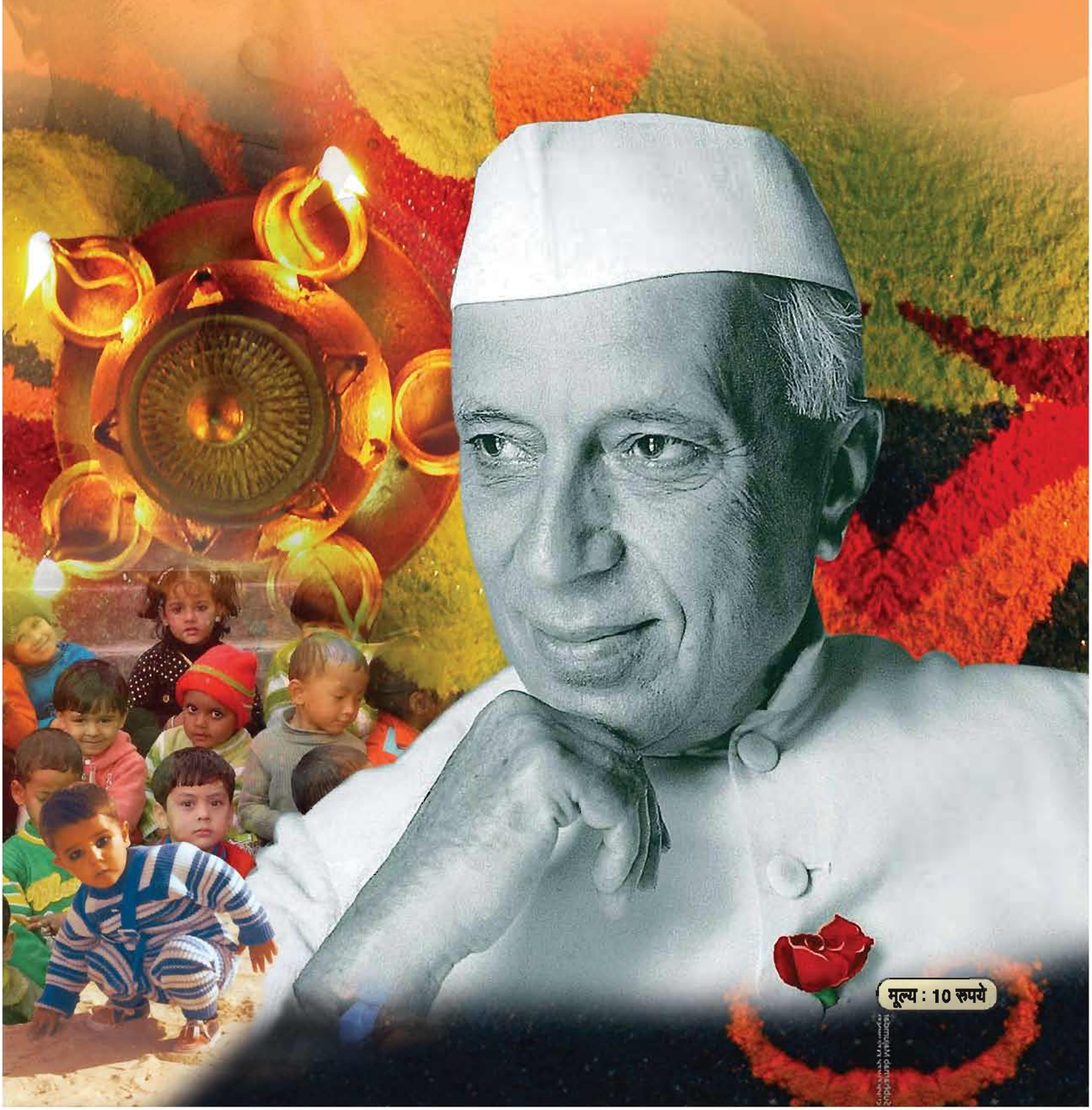

मूल्य : 10 रुपये

राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय
मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह, 2012

(बाएं) समारोह के मुख्य अतिथि माननीय गृह एवं यातायात राज्यमंत्री, राजस्थान सरकार वीरेन्द्र बेनीवाल, विशिष्ट अतिथि अध्यक्ष यू.आई.टी., बीकानेर हाजी मकसूद अहमद, कुलपति, वेटेरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर डॉ. ए.के. गहलोत, समारोह अध्यक्ष एवं निदेशक मा. शिक्षा राज. डॉ. वीना प्रधान, दीपप्रज्वलन करते हुए। *(दाएं)* गरिमामय मंच पर उपस्थित अतिथिगण के कर कमलों से कर्मचारियों के सम्मान में प्रकाशित प्रशस्ति पुस्तिका का लोकार्पण।

समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि माननीय गृह एवं यातायात राज्य मंत्री श्री वीरेन्द्र बेनीवाल, विशिष्ट अतिथि कुलपति वेटेरनरी वि.वि. बीकानेर डॉ. ए.के. गहलोत, विशिष्ट अतिथि अध्यक्ष यू.आई.टी., बीकानेर हाजी मकसूद अहमद, समारोह अध्यक्ष एवं निदेशक मा.शि. राज. डॉ. वीना प्रधान, विशिष्ट अतिथि निदेशक प्रा.शि. राज. डॉ. रविकुमार सुरपुर तथा अतिरिक्त निदेशक मा.शि. प्रेमसुख बिश्नोई।

खचाखच भरे सभागार में उपस्थित अधिकारी, सम्मानित कर्मचारी, परिवारजन एवं शुभचिंतक।

शिविरा पत्रिका

प्रारम्भिक एवं माध्यमिक शिक्षा का समाचार-विचार मासिक

वर्ष : 53 अंक : 5

नवम्बर, 2012

प्रकाशन तिथि : 2 नवम्बर, 2012

प्रधान सम्पादक
डॉ. वीना प्रधान

●

वरिष्ठ सम्पादक
ओमप्रकाश सारस्वत

●

सहायक
सांग सिंह
मुकेश व्यास

- एक प्रति 10 रु.
- वार्षिक चंदा
  - शिक्षकों/लिपिकों के लिए 50 रु.
  - संस्थाओं/अन्य व्यक्तियों के लिए 100 रु.
- मनी ऑर्डर/बैंक ड्रॉफ्ट **निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर** के नाम देय है।
- पोस्टल ऑर्डर/चैक स्वीकार्य नहीं हैं।
- कृपया पूर्ण पता मय पिन कोड लिखें।

पत्र व्यवहार हेतु पता

वरिष्ठ सम्पादक, शिविरा पत्रिका
माध्यमिक शिक्षा, राज. बीकानेर-334 011
दूरभाष : 0151-2528875
E-mail : teacher.today@yahoo.com

शिविरा पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने विचार होते हैं। अभिव्यक्त विचारों से शिक्षा विभाग राजस्थान का सहमत होना आवश्यक नहीं है। –व.सं.

न हि ज्ञानेन सदृशं पवित्रमिह विद्यते
श्रीमद्भगवद्गीता 4/38

इस संसार में ज्ञान के समान पवित्र करने वाला निःसंदेह कुछ भी नहीं है।
In this world there is no purifier as great as knowledge.

इस अंक में

गुणमयी शिक्षा से जीवन में सफलता	5	**दिशाकल्प**
शिक्षक के रूप में पं. जवाहरलाल नेहरू	6	**ओमप्रकाश सारस्वत**
इन्दिरा जी का पत्र बच्चों के नाम	10	**मदनलाल पुरोहित**
मन सम्पर्क के धनी : अनिल बोर्दिया	11	**शिवरतन थानवी**
विद्यार्थियों के जीवन की नई राह गढ़ते शिक्षक	16	**सुधा तैलंग**
पूर्व प्राथमिक शिक्षा : एक महत्वपूर्ण आयाम	18	**अनिल शर्मा**
ठहराव निश्चयन कैसे?	20	**देवेन्द्र पण्ड्या**
बापू की सीख-17 वाचन और विचार	34	**मो.क. गाँधी**
विद्यालय के समक्ष चुनौतियाँ	35	**रूपनारायण काबरा**
खेलों में वैकल्पिक रोज़गार	36	**वी. कुमार**
सुबह की सैर, शरीर को रखे तरोताज़ा	38	**राजेन्द्र सिंह उदावत**
कलम मेरी, पीड़ा बालकों की	38	**रघुवर दयाल सिंहल**
राष्ट्रीय एकता की संजीवनी - हिन्दी	39	**नीलम बिश्नोई**
वैदिक गणित	40	**डॉ. के.डी. शर्मा**
रपट- राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2012	43	**मुकेश व्यास**
ब्लॉक स्तरीय 'आओ देखो सीखो' कार्यक्रम सम्पन्न	45	**सुभाष जोशी**
प्रतिध्वनि- पिसनहारी का कुआँ	50	**ओमप्रकाश सारस्वत**

स्थाई स्तम्भ

पाठक पीठ - 4/आदेश परिपत्र 21-32/पुस्तक परिचय - 46
चतुर्दिक 47-48/ भामाशाह - 49

मुखावरण : नभांशु श्रीमाली

पाठक पीठ

शिविरा पत्रिका का माह अक्टूबर 2012 का अंक प्राप्त हुआ। डॉ. के.के. पाठक का लेख ''वैष्णव जन तो तैने कहिए'' प्रासंगिक है। अपने लिए तो सभी जीते हैं किन्तु दूसरों के लिए सभी नहीं जीते हैं। अपने दुःख का बखान सभी करते हैं, बाँटना भी चाहते हैं किन्तु दूसरों के दुःख में भागीदार न होकर दूसरे को और दुःखी करने का प्रयास करते हैं। यह सार्थकता नहीं है।

अनेक लघु कथाओं के माध्यम से डॉ. पाठक ने यह सिद्ध करने का पूर्ण प्रयास किया है कि हिंसा दुनिया का सार नहीं है, दुनिया का सार तो अहिंसा है यदि सभी कुछ हिंसा में ही निहित होता तो आप और हम नहीं होते, शून्य की स्थिति होती। हिंसा हिंसा की जननी है, यह किसी समस्या का निदान नहीं है।

आज के परिप्रेक्ष्य में गाँधीवाद दृष्टिकोण हर समस्याओं का समाधान है, शांति का मार्ग है। हिंसा सर्वनाश का मार्ग है, अहिंसा सर्व विकास का मार्ग है।

–महेन्द्र कुमार शर्मा, भवानी खेड़ा (अजमेर)

'शिविरा' का अक्टूबर 2012 अंक हाथ में आया। वैसे तो 'शिविरा' के सभी अंक पठनीय व संग्रहणीय होते हैं। मगर इस अंक में निदेशक महोदय का 'आत्मावलोकन का समय' दिशाकल्प शिक्षकों को झंझोड़ने वाला है। सम्बलन अभियान के प्रथम चरण की समीक्षा में उ.प्रा. स्तर की कक्षाओं में पढ़ने वाले सभी छात्र-छात्राओं का भाषा व गणित में वाँछित स्तर नहीं मिलने पर चिन्ता व चिन्तन की बात कही है। हमारा स्तर अपेक्षा से बहुत कम रहा। आपने नवाचारों के माध्यम से उत्कृष्टता की ओर बढ़ाने का आह्वान भी किया है।

डॉ. के.के. पाठक का आलेख ''वैष्णव जन तो तैने कहिए'' और श्री ओमप्रकाश सारस्वत का आलेख ''सबको सन्मति दे भगवान'' गाँधी दर्शन पर अच्छी रचना लगी। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन से सम्बन्धित काफी साहित्य अंक में प्राप्त हुआ। लेखकों व सम्पादक मण्डल को धन्यवाद।

–रेणु मिश्रा, डाइट, अलवर

यह चापलूसी नहीं बल्कि यथार्थ है कि 'शिविरा पत्रिका' शिक्षा जगत से सम्बन्धित ऐसी सामग्री ही प्रकाशित करती है जिसका एक-एक शब्द तौल-तौल कर लेख स्वीकृत किया जाता है। मुझे तीन बार ऐसा सौभाग्य मिल चुका है। आभारी हूँ। शिविरा का यह सौभाग्य अमर रहे यही प्रार्थना है।

–रघुवरदयाल सिंहल, जयपुर

शिविरा अक्टूबर 2012 अंक में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन विषय पर लगभग एक दर्जन महत्वपूर्ण आलेख पाकर मन प्रसन्न हो गया। शिक्षा का अधिकार अधिनियम के तहत इस महत्वपूर्ण उपागम को सरलता से समझने एवं सहेज कर रखने के लिए शिविरा ने उपयोगी अंक उपलब्ध करवाया। इसके लिए संपादक मण्डल के प्रति आभारी हैं।

–शान्तिलाल शर्मा, बीकानेर

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जीवन दर्शन पर डॉ. के.के. पाठक एवं श्री ओमप्रकाश सारस्वत के मार्मिक आलेख शिविरा पत्रिका के अक्टूबर 2012 अंक के प्राण हैं। लघु कथाओं एवं प्रभावशाली भाषा में गूढ़ विषयों को समझाने का दोनों लेखकों का प्रयास उत्तम एवं स्तुत्य है। आशा है भविष्य में भी शिविरा ऐसी संग्रहणीय सामग्री प्रकाशित करती रहेगी।

–मनोज कुमार गर्ग, पाली

शिविरा पत्रिका में प्रकाशित सामग्री सामयिक एवं उपयोगी होती है। लगभग हर अंक अपने आप में विशेषांक की तरह लगता है। महात्मा गाँधी के बारे में डॉ. के.के. पाठक का 'वैष्णव जन तो तैने कहिए' बार-बार पढ़ने का मन करता है। शिक्षकों को ऐसे आलेख पढ़ने और उन पर चर्चा कर अहिंसा, उपकार एवं त्यागभावना के संस्कार बच्चों में भरने चाहिए।

–नारायण उपाध्याय, अलवर

शिविरा पत्रिका अक्टूबर 2012 अंक पढ़ा। आलेख ''वैष्णव जन तो तैने कहिए'' डॉ. के.के. पाठक द्वारा अहिंसा एवं परोपकार के सत्य को कहानी एवं तर्कों द्वारा वर्तमान सन्दर्भ में सम्पूर्ण मानव जगत को स्मरण कराया। यह भी साबित किया कि वैश्विक समस्याओं का समाधान गाँधीगिरी में ही है। मानव जब दूसरे की पीड़ा को स्वयं की पीड़ा समझेगा तो पीड़ा रहेगी ही नहीं। शौर्य की पुरातन परिभाषा मानवता में परिवर्तित हो रही है इसका मूल भी अगर है तो गाँधीजी के विचारों में ही है।

यह आलेख मानव मन से हिंसा के भाव को सदैव के लिए समाप्त कर अहिंसा के भाव और विचार उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होगा।

डॉ. चतर सिंह मेहता द्वारा शिक्षा का निराला व्यक्तित्व - अनिल बोर्दिया। आलेख उनकी स्वर्णिम शैक्षिक उपलब्धियों से जगमगा रहा था। राज्य की शिक्षा प्रगति के सुहाने सफर में आपका योगदान सदैव प्रेरणास्रोत बना रहेगा।

'सतत एवं व्यापक मूल्यांकन' विषय पर विभिन्न आलेख शिक्षण में नवाचार बन बालकों के व्यक्तित्व एवं प्रतिभा निखारने में सहायक सिद्ध होंगे। दिशाकल्प में निदेशक महोदय का यह आह्वान कि अब समीक्षा एवं आत्मावलोकन का समय है कर्तव्य बोध कराकर हमें शिक्षा में वाँछित गुणवत्ता बढ़ाने हेतु संकल्प लेने की प्रेरणा दे रहा है।

–सीताराम उपाध्याय, कोथून, चाकसू

परिचय

डॉ. रविकुमार सुरपुर
निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा

प्रारम्भिक शिक्षा निदेशक के पद पर डॉ. रविकुमार सुरपुर ने दिनांक 5 अक्टूबर 2012 को कार्य ग्रहण किया। आपका जन्म 19 अक्टूबर 1977 को धारवाड़ (कर्नाटक) में हुआ। कर्नाटका इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइन्सेज, हुबली से एम.बी.बी.एस. डॉ. सुरपुर 2004 में भारतीय प्रशासनिक सेवा में चयनित हुए। संवेदनशील एवं ऊर्जस्वी अधिकारी के रूप में प्रतिष्ठित डॉ. रविकुमार सुरपुर ने जैसलमेर, हनुमानगढ़ एवं सवाईमाधोपुर जिलों के जिला कलक्टर, वित्त विभाग में शासन उप सचिव (कर एवं व्यय) जैसे महत्वपूर्ण पदों पर उल्लेखनीय सेवाएँ दी हैं। आप शिक्षा एवं चिकित्सा सेवाओं के विस्तार एवं उनमें गुणवत्ता के प्रबल पक्षधर हैं। आपकी क्रीड़ा गतिविधियों तथा पठन-पाठन में रुचि है।

सत्यमेव जयते

डॉ. वीना प्रधान
निदेशक, माध्यमिक शिक्षा

परिचय

डॉ. वीना प्रधान ने 04 अक्टूबर, 2012 को निदेशक, माध्यमिक शिक्षा एवं पदेन राज्य परियोजना निदेशक, राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान का कार्यभार ग्रहण किया। आपका जन्म 15 अगस्त, 1962 को ब्यावर (अजमेर) में हुआ। आप रसायन विज्ञान में अधिस्नातक तथा पीएच.डी. के साथ प्रबन्ध में मास्टर डिग्री प्राप्त हैं। आप जिला कलक्टर, बाड़मेर एवं निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा, राज. बीकानेर के पदों पर भी कार्य कर चुकी हैं। आपकी सामाजिक चेतना जाग्रति एवं शिक्षा के लोकव्यापीकरण में गहरी रुचि है। श्रेष्ठ कार्य निष्पादन कर आप महामहिम राज्यपाल एवं माननीय प्रधानमंत्री उत्कृष्ट सेवा पुरस्कारों से सम्मानित हुईं। आपने हॉकी में राष्ट्रीय स्तर तक प्रतिनिधित्व किया। आपकी संगीत में गहरी रुचि है।

दिशाकल्प

गुणमयी शिक्षा से जीवन में सफलता

माध्यमिक शिक्षा विभाग में निदेशक के रूप में लाखों शिक्षकों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं के विशाल परिवार से जुड़कर मुझे आत्मिक प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है। इससे पूर्व भी वर्ष 2011 में मुझे प्रारम्भिक शिक्षा विभाग में निदेशक के पद पर कार्य करने का सौभाग्य मिला था। मैं शिविरा के माध्यम से प्रदेश के कोने-कोने में शिक्षा की अलख जगा रहे लाखों शिक्षक भाई-बहिनों का अभिनन्दन करते हुए राजस्थान को सर्वशिक्षित राज्य बनाने के लिए उनके अहर्निश अवदान की कामना करती हूँ और मुझे पूर्ण विश्वास है कि मरुभूमि राजस्थान के शिक्षक इस दिशा में अपना सम्पूर्ण योगदान करेंगे।

वर्तमान शैक्षणिक सत्र 2012-13 के चार माह व्यतीत हो चुके हैं। इस अवधि में खेलकूद सहित विभिन्न पाठ्यक्रम सहगामी गतिविधियों की प्रतियोगिताएँ सम्पन्न हो चुकी हैं। अकादमिक दृष्टि से देखें तो प्रथम एवं द्वितीय टेस्ट भी हो चुके हैं तथा दिसम्बर माह में अर्द्धवार्षिक परीक्षा आयोजित होगी। शिक्षकों से मेरी अपील है कि वे अपनी शिक्षण की धार को और पैना करें तथा तद्नुरूप विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर उनकी गुणमयी शिक्षा तथा जीवन में सफलता का मार्ग प्रशस्त करें। मुझे शिक्षकों की योग्यता एवं क्षमता पर पूरा भरोसा है। समर्पण एवं प्रतिबद्धतापूर्वक कार्य करने की महान परम्परा के वे अनुगामी हैं। इस उत्तम भाव को सदैव हृदय में संजोए रखना आवश्यक है।

शिक्षा विभाग एक विशाल विभाग है। इसे मातृ विभाग भी कहा जाता है। वस्तुतः जीवन निर्माण करने का कार्य तो इसी विभाग के द्वारा किया जाता है। अतः शिक्षक होना सौभाग्य की बात है। मैं चाहती हूँ कि विभाग में कार्यरत शिक्षक एवं कर्मचारी समस्यामुक्त होकर अपने कर्त्तव्य पथ पर आगे बढ़ें। प्रतिदिन बड़ी संख्या में राज्य के भिन्न-भिन्न जिलों के शिक्षक एवं कर्मचारी अपनी-अपनी समस्याएँ लेकर मेरे पास आते हैं। इनमें वेतन स्थिरीकरण, पदोन्नति, ए.सी.पी., ए.सी.आर. विधिक मामले, पेंशन आदि से सम्बन्धित प्रकरण मुख्यतः होते हैं। मैं चाहती हूँ कि इन परिवेदनाओं का उचित समाधान शीघ्रातिशीघ्र हो। इसके लिए निदेशालय में एक नवीन व्यवस्था स्थापित की गई है जिसके अनुसार प्रतिदिन प्राप्त होने वाली समस्याओं को दर्ज किया जाकर उनकी साप्ताहिक समीक्षा मेरे स्तर पर की जाएगी। मेरा यह प्रयास रहेगा कि लम्बित प्रकरणों की संख्या शून्य हो जाए।

इस माह में हमारे प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहर लाल नेहरू का जन्मदिन है। उन्हें बच्चों से बड़ा प्रेम था। इसीलिए उनका जन्मदिन हम बाल दिवस के रूप में मनाते हैं। आइये, हम शिक्षा एवं संस्कार के रूप में बच्चों के जीवन निर्माण में भागीदार बनें। यह सदैव याद रखें कि आज का बच्चा ही कल का समाज और राष्ट्र है।

दीपों का त्यौहार दीपावली हम इसी माह मनाएँगे। मेरी यह कामना है कि जगमग करते दीपों की झिलमिलाती रोशनी से आप सभी का जीवन पथ आलोकित हो। एक बार पुनः हार्दिक शुभकामनाएँ।

(डॉ. वीना प्रधान)

जन्म दिवस विशेष

पिता के पत्र पुत्री के नाम

शिक्षक के रूप में पं. जवाहरलाल नेहरू

❑ ओमप्रकाश सारस्वत

चौदह नवम्बर यानी बाल दिवस। बाल दिवस यानी पं. जवाहर लाल नेहरू का जन्म दिन। पं. जवाहर लाल नेहरू भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महान पुरोधा एवं हमारे देश के प्रथम प्रधानमंत्री थे। वे 1947 से 1964 तक हमारे भाग्यविधाता रहे। उनके पिता पं. मोतीलाल नेहरू अपने जमाने के विख्यात वकील एवं धनी पुरुष थे। इस प्रकार बालक जवाहर का बाल्यकाल बहुत लाड़ प्यार एवं सुख सुविधाओं में बीता। उनके लिए किसी चीज की कमी नहीं थी। वे स्वयं लिखते हैं कि मेरा बचपन अत्यन्त सुख में व्यतीत हुआ। अपने जन्मदिन का जिक्र करते हुए वे लिखते हैं कि इस दिन घर में तरह-तरह की मिठाइयाँ बनतीं, नाचगान के साथ खुशियाँ मनाई जातीं और उन्हें कीमती कपड़े पहनाए जाते।

बालक से किशोर और किशोर से युवावस्था की ओर बढ़ने के साथ ही जवाहर का घर भारत के स्वतंत्रता संग्राम की गतिविधियों का केन्द्र बन गया। मोतीलाल नेहरू के दौर में जवाहर बाबू को देश प्रेम की जो लौ लगी, वह ताजिन्दगी बरकरार रही और वे स्वतंत्र भारत के अग्रणीय नायक बनकर उभरे।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 44वें अधिवेशन, जो 29-31 दिसम्बर 1929 तक लाहौर में रावी नदी के तट पर आयोजित हुआ था, में कांग्रेस अध्यक्ष के रूप में पं. नेहरू का ऐतिहासिक भाषण भारत का अनमोल दस्तावेज है, जिसमें उन्होंने पूर्ण स्वतंत्रता एवं सामाजिक क्रान्ति का शंखनाद किया था जो अन्ततः भारतीयों की आत्मा को झकझोर कर देश की आजादी का मूलमंत्र बना। वे चार बार भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष तथा दो बार महासचिव रहे। स्वतंत्रता संग्राम के महान नेता - भारत माता के अमर सपूत पं. जवाहर लाल नेहरू का योगदान इस महान देश की अनमोल थाती है। भारत निर्माण में उनके सत्रह वर्ष के प्रधानमंत्री काल की जितनी चर्चा करें, थोड़ी ही होगी। ग्रंथ के ग्रंथ लिखे जा सकते हैं, महीनों बखान किया जा सकता है।

प्रधानमंत्री के रूप में पं. जवाहर लाल नेहरू का योगदान शिक्षा के क्षेत्र में तो उल्लेखनीय है ही मगर निजी तौर पर स्वयं उनका शिक्षकीय स्वरूप भी उपलब्ध साहित्य में देखने को मिलता है। कहा जाता है कि परिवार बच्चे की प्रथम पाठशाला तथा माँ-बाप पहले शिक्षक होते हैं और उसमें भी माँ का स्थान सिरे माना जाता है। बालकों के हितैषी पं. नेहरू के इकलौती सन्तान बेटी इन्दिरा थी। इन्दिरा यानी श्रीमती इन्दिरा गाँधी, भारत की यशस्वी प्रधानमंत्री एवं लोकप्रिय जन नेता। नेहरू जी बालिका इन्दिरा को बहुत प्यार करते थे। वे इन्दिरा में दुनिया के तमाम बच्चों की झलक देखते थे। इलाहाबाद के आनन्द भवन में इन्दिरा की परवरिश के दौरान देश में स्वतंत्रता संग्राम जोर पकड़ने लगा था। इन्दिरा का जन्म 19 नवम्बर 1917 को हुआ था। यह गाँधी का प्रारम्भिक दौर था। महात्माजी 1915 में द. अफ्रीका से भारत आये थे और अपने राजनैतिक गुरु श्री गोपालकृष्ण गोखले के परामर्शानुसार भारत भ्रमण कर रहे थे। इसी वर्ष 10 अप्रैल को चम्पारन सत्याग्रह कर बापू जन-जन की जुबान पर आ गये। इलाहाबाद, आनन्द भवन और नेहरू परिवार स्वतन्त्रता आन्दोलन की डगर पर चल पड़े। ऐसे में बालिका इन्दिरा को पिता का रू-ब-रू सान्निध्य कम ही मिल पाया। आजादी के दीवाने पिता इस दर से उस दर, इस व्यक्ति से उस व्यक्ति आजादी की अलख जगाते यायावर की भाँति दौड़ते-भटकते और अंग्रेजों की कोप दृष्टि के शिकार बनकर जेल यात्रा करते। बड़ा कठिन जीवन था उन दिनों जवाहर बाबू का।

इन्दिरा जब 8-9 वर्ष की हुई, तो उसे मसूरी पढ़ने को भेज दिया। नन्हीं बालिका मसूरी में और पिता इलाहाबाद में। दोनों एक-दूसरे को बहुत याद करते। बालिका इन्दिरा तो तकिये में मुँह छिपाकर रोती; घर और माँ-बाप की याद जो आती। ऐसे में दोनों के मित्र और सहयोगी बने वे पत्र जो समय-समय पर पिता पं. जवाहर लाल ने पुत्री इन्दिरा को लिखे। इन पत्रों के बारे में स्वयं इन्दिरा जी ने लिखा है, ये चिट्ठियाँ जब मैं 8-9 साल की थी, तब मुझे लिखी गई थीं। इनमें बताया गया कि पृथ्वी की शुरुआत कैसे हुई और यह भी बताया गया है कि मनुष्य ने अपने आपको कैसे धीरे-धीरे समझा-पहचाना। ये चिट्ठयाँ केवल पढ़कर रख देने के लिए नहीं हैं। ये चिट्ठियाँ एक नई दृष्टि प्रदान करती है और लोगों के बारे में सोचने विचारने की भावना पैदा करती है। इनसे विश्व में चारों ओर क्या हो रहा है, इसके बारे में जानने की अभिरुचि उत्पन्न होती है। इन चिट्ठियों से यह शिक्षा भी मिलती है कि प्रकृति की पुस्तक समझकर उसका अध्ययन करना चाहिए। मैं कंकड़-पत्थरों, पेड़-पौधों तथा कीड़े-मकोड़ों के जीवन तथा रात्रि में सितारों का दिलचस्प अध्ययन करने में घंटों व्यतीत कर देती थी।

बालिका इन्दिरा को लिखे पत्र पं. नेहरू को एक शिक्षक पिता प्रमाणित करते हैं। दरअसल ये पत्र शिक्षा व ज्ञान से भरे हुए हैं। ज्ञान तो है सो है; मगर उसकी प्रस्तुति बालमन गहराई की थाह को समझकर की गई है। सरलता एवं सहजता पर कथ्य को हावी नहीं होने दिया है। ऐसा तो बाल मनों का ज्ञाता कोई कुशल शिक्षक ही कर सकता है। अतः हम नेहरू को शिक्षक कह सकते हैं। नेहरू बड़े संवेदनशील है बच्चों के प्रति और उसमें भी अपनी इकलौती लाड़ली

बेटी के लिए कितनी भावुकता होगी, आप अंदाज लगा सकते हैं। वे पत्र इसलिए लिखते हैं कि उन्हें पढ़कर घर से दूर बोर्डिंग में रह रही बेटी को दिलासा मिलने के साथ ज्ञान भी मिले। ज्ञान के साथ एक जिज्ञासा मिले, जो उसे व्यस्त रखने और आगे बढ़ने की आधार बने। एक साधारण पिता हो तो पत्र में कई जगह लिखें कि तुम्हारी याद आती है; तुम कैसी हो, पढ़ाई का ध्यान रखना, खानपान का ध्यान रखना आदि-आदि। ये बातें तो बच्चे को रुलाने वाली होती है। इन्हें पढ़कर रोना, मचलना बढ़ता है, लेकिन नेहरू ऐसा कतई नहीं करते। वे एक शिक्षक की तरह लिख रहे हैं इन पत्रों को।

शिक्षक किसी विषय/उप विषय पर अध्यापन करने से पहले सम्बन्धित विद्यार्थियों के मानसिक स्तर का अध्ययन करता है जो पढ़ाया जा रहा है; उसे पढ़ने वाला ग्राह्य कर सकेगा या नहीं, इस बात का परीक्षण स्वयं पर करके देखता है। नेहरू आठ-नौ वर्षीय बालिका के मानसिक स्तर, जिज्ञासा एजेण्डे, अधिगम क्षमता को परखकर पत्र लिखते हैं।

देखा जाए तो थे पत्र, पत्र न होकर कोई पाठ्यपुस्तक ही है। एक पत्र 'संसार पुस्तक है' शीर्षक से है। यह पहला पत्र है जिसकी शुरुआत में पिता (नेहरू) पुत्री (इन्दिरा) को लिखते हैं, जब तुम मेरे साथ रहती हो तो अक्सर मुझसे बहुत-सी बातें पूछा करती हो और मैं उनका जवाब देने की कोशिश करता हूँ; लेकिन, अब, जब तुम मसूरी में हो और मैं इलाहाबाद में, हम दोनों उस तरह बातचीत नहीं कर सकते। इसलिए मैंने इरादा किया है कि कभी-कभी तुम्हें इस दुनिया की और उन छोटे-बड़े देशों की जो इस दुनिया में हैं के बारे में छोटी-छोटी कथाएँ लिखा करूँ।'' यह कथन सिद्ध करता है कि शिक्षण की वैकल्पिक व्यवस्था कर रहे हैं शिक्षक नेहरू। आदर्श शिक्षक वह है जो तरह-तरह की (वैकल्पिक) शिक्षण विधियाँ (Educational Techniques) इजाद कर बच्चे का शिक्षण सुनिश्चित करता है। जब विद्यार्थी पास में नहीं है तब पत्रों द्वारा यानी दूरस्थ शिक्षा (Distance Education) विधि से शिक्षण करवाता है।

शिक्षक का काम है कि शिक्षण-अधिगम में मूल्य (Values) कायम रहें। मूल्यपरक शिक्षा के हिमायती पं. नेहरू अपने एक पत्र में बालिका को लिखते हैं, ''दुनिया एक है और दूसरे लोग जो इसमें आबाद है, वे हमारे भाई-बहन हैं। जब तुम बड़ी हो जाओगी तो तुम दुनिया और उसके आदमियों का हाल मोटी-मोटी पुस्तकों में पढ़ोगी। उनमें तुम्हें जितना आनन्द मिलेगा उतना किसी कहानी या उपन्यास में भी नहीं मिलेगा।'' इस कथन में दुनिया के एक होने और आबाद होने के तथ्य के साथ यह मूल्य सीखने को मिलता है कि दुनिया में रहने वाले सभी स्त्री-पुरुष आपस में भाई-बहन हैं। तु वसुधैव कुटुम्बकम् का पाठ पढ़ाता है नेहरू का यह कथन। वे यह भी लिखते हैं जो आनन्द आदमियों के बारे में पढ़ने को मिलेगा, वह अन्य विषयों में नहीं मिल सकता।

सच्चा शिक्षक वह है जो बच्चों में जिज्ञासा के भाव जगाए तथा जागृत जिज्ञासा को शान्त करने के लिए रास्ता भी दिखाए। इससे न केवल बच्चों का मानसिक विकास ही होता है अपितु उनका आत्मबल एवं स्वाध्याय भी स्वतः बढ़ता है। आप दो बात बताइये, मगर बताइये इस तरीके से कि बच्चों में चार बातें सीखने का भाव उमड़े। नेहरू एक पत्र में लिखते हैं, ''ये पहाड़, समुद्र, सितारे, नदियाँ, जंगल, मृत जानवरों की हड्डियाँ और इसी तरह की और भी कितनी ही चीजें हैं, जिनसे हमें दुनिया का हाल मालूम होता है मगर हाल जानने का असली तरीका यह नहीं है कि हम केवल दूसरों की लिखी हुई किताबें पढ़ लें, बल्कि खुद संसार रूपी पुस्तक पढ़ें। मुझे आशा है कि पत्थरों और पहाड़ों को पढ़कर तुम थोड़े दिनों में उनका हाल जानना सीख जाओगी। सोचो, कितनी मजे की बात है। एक छोटा सा रोड़ा जिसे तुम सड़क पर या पहाड़ के नीचे पड़ा हुआ देखती हो, शायद संसार की पुस्तक का छोटा पृष्ठ हो। शायद उससे तुम्हें कोई नई बात मालूम हो जाए। शर्त यही है कि तुम्हें उसे पढ़ना आता हो।'' पत्र का यह भाग एक प्राकृतिक बिम्ब पर प्रकाश डालते हुए अनेक बिम्बों पर स्वाध्याय-खोजबीन कर अधिगम करने का संदेश देने वाला है। रेखांकित अंश प्रकृति प्रेम को उजागर करते हैं– एक छोटा सा कंकड़ संसार की पुस्तक का पृष्ठ तथा उसे पढ़ पाने की कुबत। शिक्षक का काम होता है कि वह अपने शिष्यों में प्रकृति, वन्य जीव, पर्यावरण, पशु-पक्षी आदि के बारे में प्रेम व संरक्षण भाव जगाए। यहाँ शिक्षक नेहरू यही तो कह रहे हैं मगर बड़ी चतुराई के साथ।

भूगोल और प्राकृतिक शिक्षण के बाद इतिहास लेखन पर एक बहुत ही सुन्दर पत्र लिखा गया, जिसका शीर्षक है शुरू का इतिहास कैसे लिखा गया। पहले ही पहले जानवर आया और उसके पश्चात् आदमी; मगर आदमी और जानवर में जो आधारभूत अन्तर था वह था उसमें सोचने-विचारने की ताकत। नेहरू लिखते हैं, ''यह असली ताकत थी जिसने उन्हें बड़े से बड़े और भयानक से भयानक जानवरों से ज्यादा बलशाली बना दिया। तुम देखती हो कि एक छोटा-सा आदमी एक बड़े हाथी के सिर पर बैठकर उससे जो चाहता है, करा लेता है। हाथी बड़े डील डौल का जानवर है और उस महावत से कहीं ज्यादा बलवान है जो उसकी गर्दन पर सवार है। मगर महावत में सोचने की ताकत है और इसी की बदौलत वह मालिक है और हाथी उसका नौकर। भोजपत्र, ताड़ के पत्तों पर लिखे जाने, पत्थरों के शिलाखण्ड से वर्तमान कागज पर मुद्रण तक का बड़ा सजीव चित्रण किया गया है। वे लिखते हैं कि, ''कई सौ साल हुए अशोक हिन्दुस्तान का एक बड़ा राजा था। उसने पत्थर के एक खम्भे पर एक आदेश खुदवा दिया था। अगर तुम लखनऊ के अजायबघर जाओ तो तुम्हें बहुत से टुकड़े मिलेंगे जिन पर अक्षर खुदे हैं। शायद तुम्हें याद होगा कि तुमने इलाहाबाद के किले में अशोक की बड़ी लाट देखी है।'' यहाँ इलाहाबाद के किले का ज्ञान बालिका के पास पहले से है और उसके बल पर जिज्ञासा पैदा कर उसे लखनऊ के अजायबघर जाने की प्रेरणा दे रहे हैं। शिक्षक की यही कुशलता होती है कि वह अपने पाठ की शुरुआत उन बातों से करता है जिनकी जानकारी बालकों को पहले से है। ऐसे में वे शुरू में उत्साहित रहकर हाँ-हाँ करते हैं और फिर धीरे से नई बात परोस दी जाती है जिसे आत्मसात करने में बच्चे को देर नहीं लगती। ज्ञात से अज्ञात अथवा सरल से कठिन

उपागम द्वारा किया जा रहा शिक्षण थकाऊ अथवा उबाऊ नहीं होता बल्कि बच्चे हँसते-इठलाते, नाचते-कूदते सब कुछ सीखते रहते हैं।

शिक्षण अधिगम के असरकारी बनाने में एक महत्वपूर्ण बात शिक्षक की पाठ तैयारी का परिश्रमपूर्वक व सुनियोजित होना है। शिक्षक को इसके लिए खूब सोचना पड़ता है। शिक्षक नेहरू के ये पत्र किसी पाठ योजना (Lesson Plan) से कम नहीं लगते। उनमें आगे की सामग्री का पीछे की सामग्री से सांगोपांग तादात्मय है। इससे प्रतीत होता है कि ये पत्र उन्होंने कितनी मेहनत के साथ लिखे होंगे। इन्हें तैयार करने के लिए सामग्री की कितनी सुनिश्चितता तथा उसकी प्रामाणिकता उन्होंने देखी होगी। बाल हृदय के कोमल कैनवास पर देश प्रेम अंकुरित करने के लिए पत्र की ये लाइनें देखिए, ''रामायण और महाभारत काल में हिन्दुस्तान बलवान और धनवान देश था। मगर आज हमारा मुल्क गरीब है। विदेशी हम पर शासन कर रहे हैं; मगर हम पूरी कोशिश करें तो शायद हमारा देश फिर आजाद हो जाए, जिससे गरीबों की दशा सुधर सकें तथा हिन्दुस्तान में रहना उतना ही आरामदेह हो जाए, जितना कि आज यूरोप के देशों में है।'' इन पंक्तियों को पढ़कर देश की शानदार विरासत पर गर्व, वर्तमान पर क्षोभ तथा भावी उत्थान के लिए कर्तव्यभाव का निश्चय ही प्रस्फुटन होता है। इतिहास को यत्नपूर्वक संरक्षित रखने का घोष भारतीय मनीषा में हुआ है। महाभारत में वेदव्यास जी लिखते हैं–

वृतं यत्नेन संरक्षेत वित्त मायाति याति च।
अक्षीणो वित्ततः क्षीणः वृत्ततस्तु हतो हतः॥

अर्थात् इतिहास की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिए। धन तो आता और जाता है। धन से हीन होने पर कोई नष्ट नहीं होता किन्तु इतिहास और अपना प्राचीन गौरव नष्ट कर देने पर विनाश निश्चित है। पं. नेहरू इसी शास्त्रीय संदेश को अपनी भाव-भाषा में आठ-नौ वर्षीय प्रिय बिटिया को कहते हैं जो प्रतीक रूप में एक शिक्षक पिता ही नहीं अपितु प्रत्येक पेशेवर शिक्षक द्वारा सभी शिष्यों को कहा जाने योग्य है।

बहुत पहले पृथ्वी आग के गोले सदृश गर्म थी। इस पर जीव नाम की वस्तु का होना सम्भव नहीं था। किस प्रकार और शृंखला रूप में कौन-कौन सी चीजों के बाद जीव का प्रादुर्भाव पृथ्वी पर हुआ, की बड़ी मनोरम और समझाऊ ढंग से कथा नेहरू के पत्र ''जानदार चीजें कैसे पैदा हुईं'' में प्रस्तुत की गई है। विज्ञान की ये चीजें नेहरू जी ने जिस सरस तरीके से अपने खत में लिखी है, वे आज के विज्ञान शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए शिक्षण-अधिगम सामग्री (TLM) बन सकती है। इसमें लगातार तीन पत्रों यथा जानवर कब पैदा हुए; आदमी कब पैदा हुआ तथा शुरू के आदमी शीर्षक के पत्र अपने उद्देश्य में पूर्ण सफल है।

अब से आठ-नौ दशक पहले स्वतंत्रता संग्राम के दौर के दौरान भारत माता को गुलामी से मुक्त करवाने के लिए लगे झुझारू देशभक्त बड़े अध्ययनशील थे। घण्टों पढ़ने और भाँति-भाँति का ज्ञानार्जन करने से वे थकते नहीं थे। नेहरू द्वारा लिखे इन विविध विषयक पत्रों और उनकी संरचना के साथ ही उनमें संचित ज्ञान को देखने व उनके प्रस्तुति के नायाब ढंग को देखकर अचम्भा हुए बिना नहीं रहता। उनके बहुआयामी व्यक्तित्व की एक झलक उनमें देखने को मिलती है।

शिक्षण के विविध प्रकारों में कक्षागत शिक्षण ही प्रमुख है जिसमें वार्षिक पाठ्यक्रम विभाजन, पाठ्यक्रमानुसार विषयों का दैनिक, मासिक योजनाबद्ध ढंग से पढ़ाना, टेस्ट एवं परीक्षाएँ तथा परीक्षा परिणाम के आधार पर कक्षोन्नति अर्थात् उत्तीर्ण-अनुत्तीर्ण घोषित करना। दूसरा स्वरूप दूरस्थ शिक्षा का है जिसमें डाक से अथवा सूचना प्रौद्योगिकी (IT) के माध्यम से घर बैठे पढ़ाई करना। इसमें भी परीक्षा अथवा मूल्यांकन प्रक्रिया समान्तर चलती है और तद्नुसार सर्टिफिकेटिंग किया जाता है। मगर इनसे हटकर एक और शिक्षण विधि भी हमारे यहाँ रही है और वह है एकल गुरुजी द्वारा शिक्षा प्रदान करना। इसमें ज्ञानार्जन व अधिगम पर अधिक जोर दिया जाता है, परीक्षा व प्रमाण-पत्र पर कम। राजस्थान में इसे माड़जा प्रणाली के नाम से हम जान सकते हैं। इसमें एक ही गुरुजी होते हैं जो भाषा, गणित, सामान्य ज्ञान, भूगोल, अर्थशास्त्र आदि का ज्ञान अपने शिष्यों को कराते हैं। इस विधि में गुरु-शिष्य का सम्बन्ध परिवारजन जैसा होता है। पिता-पुत्र जैसा कहें तो कदाचित अतिशयोक्ति नहीं होगी। ये गुरु जी ऑल इन वन होते हैं। सभी विषयों का ज्ञान रखते हैं और समस्त प्रकार के शिक्षण कौशल के पारखी होते हैं। वे तपस्यावत परिश्रम करते हैं। उन्हें साधक कह सकते हैं क्योंकि बिना साधना के सिद्धि नहीं मिलती। साधना के बिना साधन केवल ढाँचे होते हैं।

पं. जवाहर लाल नेहरू ने जिस अधिकार के साथ विविध विषयों पर पत्रों के रूप में पाठ योजनाएँ तैयार कर अपनी प्रिय बेटी को दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से शिक्षण करवाया है, वह उन्हें आदर्श परिश्रमी शिक्षक प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है। इनमें भूगोल और इतिहास के अलावा सभ्यता और संस्कृति के उज्ज्वल पक्षों को छुआ गया है। जातियाँ, धर्म, रहन-सहन, खानपान, खेतीबाड़ी, भाषाएँ, अन्तर्सम्बन्ध, गिनती-गणित, पौराणिक ग्रंथ, सामाजिक व्यवस्था, विदेशी सम्बन्ध, शासन व्यवस्था, राजा-महाराजा, पृथ्वी, व्योम, अंतरिक्ष सबके बारे में आकर्षक व सुग्राह्य ढंग से प्रकाश इन पत्रों में डाला गया है। शिक्षा का काम दरअसल एक साधना है और इन पत्रों में उल्लेखित ज्ञान किसी साधना से कम नहीं है।

पं. नेहरू ने ये पत्र अंग्रेजी भाषा में लिखे थे जिनके हिन्दी सहित विभिन्न भाषाओं में अनुवाद प्रकाशित हुए हैं और शिक्षकों, बच्चों एवं उनके अभिभावकों द्वारा बहुत सराहे गये हैं। इन पत्रों को उनमें समाहित कथ्य के अनुसार शीर्षक दिए गए हैं। प्रकाशित पत्रों की संख्या 30 है जिनके शीर्षक इस प्रकार हैं– 1. संसार पुस्तक है। 2. शुरू का इतिहास कैसा लिखा गया। 3. जमीन कैसे बनी। 4. जानदार चीजें कैसे कैसे पैदा हुई। 5. जानवर कब पैदा हुए। 6. आदमी कब पैदा हुआ। 7. शुरू के आदमी। 8. तरह-तरह की कौमें क्योंकर बनीं। 9. आदमियों की कौमें और जबानें। 10. जबानों का आपस में रिश्ता। 11. सभ्यता क्या है। 12. जातियों का बनना। 13. मजहब की शुरुआत और काम का बँटवारा। 14. खेती से पैदा हुई तब्दीलियाँ। 15. खानदान का सरग़ना

कैसे बना। 16. सरग़ना का इख्तियार कैसे बढ़ा। 17. सरग़ना राजा हो गया। 18. शुरू का रहन-सहन। 19. पुरानी दुनिया के बड़े-बड़े शहर। 20. मिस्र और क्रीट। 21. चीन और हिन्दुस्तान। 22. समुद्री सफर और व्यापार। 23. भाषा, लिखावट और गिनती। 24. आदमियों के अलग-अलग दरजे। 25. राजा, मंदिर और पुजारी। 26. पीछे की तरफ एक नजर। 27. फॉसिल और पुराने खंडहर। 28. आर्यों का हिन्दुस्तान में आना। 29. हिन्दुस्तान आर्य कैसे थे? 30. रामायण और महाभारत।

शिक्षक का एक काम अपने विद्यार्थी को व्यस्त रखना और वह भी क्रियात्मक दिशा में व्यस्त रखना होता है। यह काम तब और भी बढ़ जाता है, जब विद्यार्थी घर से दूर हो। उसे उदासी से बचाने और प्रफुल्लता प्रदान करने का काम शिक्षक का ही होता है। इन सबमें बाल मनोविज्ञान का समावेश आवश्यक होता है। शिक्षक बने पिता नेहरू इस भूमिका में सफल सिद्ध होते हैं। स्वयं इन्दिरा गाँधी ने नंदन पत्रिका में छपे अपने एक पत्र में इन पत्रों का उल्लेख करते हुए पिता को शिक्षक बताया है, शिक्षक यानी जो सिखाने-पढ़ाने का काम करें। वे लिखती हैं, ''मेरी पढ़ाई-लिखाई के बारे में वे (नेहरू जी) बड़ा ध्यान रखते थे। उन दिनों समूचे हिन्दुस्तान में आजादी की लड़ाई छिड़ी थी। पापू लड़ाई के नेता थे। मैं उन दिनों इलाहाबाद के एक स्कूल में पढ़ती थी, मगर हर दिन कुछ न कुछ रुकावटें सामने आ जाती थीं। जब मैं दस वर्ष की हो गई तो पापू ने अपने मीठे-मीठे पत्रों द्वारा मुझे पढ़ाना शुरू किया गया। वह चाहते थे कि मैं पढ़ाई में कमजोर न रह जाऊँ। उनके ये पत्र भारतीय साहित्य की निधि है।''

दार्शनिक धरातल पर यह जुमला बहुत अच्छा लगता है कि परिवार बच्चे की प्रथम पाठशाला एवं माँ-बाप पहले शिक्षक होते हैं। मगर व्यावहारिक रूप से ऐसे कितने माँ-बाप, विशेषकर बाप होंगे जो नेहरू की तरह अपने बच्चों को पास होने पर वार्तालाप के द्वारा तथा दूर होने पर पत्रों के माध्यम से पढ़ाने-सिखाने का काम करते हैं और इसके लिए बाकायदा पाठ्ययोजना की तरह तैयारी करते हैं।

पत्र विज्ञान (Letter Science) कहता है कि वह समाचार-संदेश सम्प्रेषित करने के साथ ही प्राप्तकर्ता को एक तरह से प्रेषक से मिलने की आत्मीय प्रतीति कराता है। तभी तो लोकमानस में पत्रों के लिए प्रतिष्ठा का भाव रहा है। लोग अक्सर परस्पर पूछते रहते हैं कि फलां का पत्र आया क्या? जवाब में हाँ मिलने पर लगता है जैसे उनका मिलना हो गया हो। जैसे विवाह होकर ससुराल गई पुत्री का अपने पीहर वालों के साथ पत्रों से मिलने का सुकून एक परम्परा रही है। बेटी का राजी खुशी का पत्र पाकर माँ-बाप हर्षित हो जाते हैं। हमने देखा है कि बेटी का पत्र नहीं आने के कारण आकुल माँ-बाप जैसे ही डाकिया उसका पत्र लाकर देता है, हर्षित हो जाते हैं और ऐसा ही बेटी के लिए भी है। पत्र मिलन की ऊष्मा व ताजगी देते हैं। ऐसे में लेखक-प्रेषक का उत्तरदायित्व बनता है कि वह बड़े धैर्य के साथ सोच-समझकर पत्र लिखें ताकि उसे पा-पढ़कर प्राप्तकर्ता को सुख मिले, उसका ज्ञान बढ़े और मन मालिन्य मिटे। यद्यपि हाल के वर्षों में सूचना प्रौद्योगिकी– मोबाइल, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग आदि ने पत्रों का वह महत्व नहीं रहने दिया है तथापि पत्रों का इतिहास उसका महत्व निरूपित करता ही है। इतिहास अमर जो होता है।

इस दृष्टि से देखें तो पं. जवाहर लाल नेहरू द्वारा लिखे जाने वाले पत्र प्रथमतः तो प्राप्तकर्ता बेटी इन्दिरा को अपने पिता और परिवार से मिलन की मधुर प्रतीति कराते थे और क्रमशः पढ़ने पर ज्ञान व जिज्ञासा को बढ़ावा देते थे। इतने विविध विषयों का चयन करने तथा बाल मनोविज्ञान के साथ उनकी सिलसिलेवार पत्रों के रूप में क्रमशः प्रस्तुति नेहरू जी को एक उत्तम पिता एवं आदर्श शिक्षक प्रमाणित करने वाली है। ये पत्र आज भी बड़े सार्थक एवं उपयोगी लगने वाले हैं। आठवीं से दसवीं कक्षा में पढ़ने वाले बालक-बालिकाओं को पुत्री के नाम पिता के इन पत्रों को पढ़ने के लिए अवश्य उपलब्ध करवाया जाना चाहिए।

–वरिष्ठ सम्पादक (शिविरा)

प्रेरक प्रसंग

विदेशी कपड़ों की होली

नब्बे वर्ष पहले, सन् 1922 की बात है। विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आन्दोलन देश में चलाया जा रहा था। विदेशी कपड़ों की तो जैसे जगह-जगह होली जलाई जा रही थी। कोलकाता (तब कलकत्ता) के कपड़ा व्यापारियों ने एक मीटिंग आयोजित कर इस स्थिति पर विचार किया। बैठक में हुए निर्णय के अनुसार व्यापारियों का एक शिष्ट मण्डल सहायता की गुहार लेने पं. मदनमोहन मालवीय से मिला।

''पंडित जी, हमारी रक्षा कीजिए। हम कहीं के नहीं रहेंगे। बस मारे जाएँगे। अब आगे हम विदेशी कपड़ों का नया स्टॉक नहीं मँगाएँगे।'' उन्होंने हाथ जोड़कर प्रार्थना की।

मालवीय जी ने फरमाया कि यह तो अन्तिम निर्णय हो चुका और यह अटल है। इसमें छूट मिलनी असम्भव है; फिर भी वे पं. मोतीलाल नेहरू से मिल सकते हैं। वे उनकी कोई सहायता करें, तो करें।

मरता क्या नहीं करता। यहाँ उत्तर मिल जाने पर हाथ जोड़े पहुँच गए, आनन्द भवन, इलाहाबाद पं. मोतीलाल नेहरू के पास। मोतीलाल जी स्वाधीनता आन्दोलन के केन्द्र पुरुष थे उस समय।

''आदरणीय पंडित जी, इस बार हमारी रक्षा करो। हमें डूबने से बचाओ। आठ करोड़ रुपये का चाबी छाप लट्ठा हमारे स्टॉक में पड़ा है जो विदेश से आयातित है।'' वे गिड़गिड़ाए।

''तो मैं क्या करूँ?'' पंडित जी बोले।

''आप मेहरबानी करके सात दिन का समय दे दीजिए। इस दौरान हम इसे सलटा देंगे। अन्यथा हम तो बरबाद हो जाएँगे। व्यापारी तो समझो रो ही रहे थे।''

''आप लोग इस आनन्द भवन को देख रहे हो न ? इसे मैंने मेरे इकलौते बेटे जवाहर लाल के लिए बड़े मन व धन से बनाया था और वह इस समय जेल में कष्ट भुगत रहा है।'' रुँधे कंठ से मोतीलाल जी ने उनसे कहा।

व्यापारियों को ज्ञान हो गया। हाथ जोड़ माफी माँगते बोले, ''पंडित जी, हमें क्षमा करें। सारे विदेशी कपड़े की कल ही होली जला देंगे।''

–सुरेन्द्र शर्मा, व.अ.
रा.मा.वि., 3-सी-छोटी, श्रीगंगानगर

बाल दिवस विशेष

इन्दिरा जी का पत्र बच्चों के नाम

बच्चों के नाम प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी का यह पत्र नंदन पत्रिका में छपा था, जो नंदन के प्रति आभार के साथ यहाँ प्रकाशित किया जा रहा है। उन्नीस नवम्बर को इन्दिरा जी का जन्मदिवस भी है। इसलिए पत्र का महत्व और बढ़ जाता है। यह महत्त्वपूर्ण पत्र बच्चों के लिए भिजवाने के लिए हम प्रेषक श्री मदनलाल पुरोहित, प्र.अ., रा.मा.वि., फतेहपुर (हनुमानगढ़) के प्रति भी अनुगृहीत हैं। –*ब.सं.*

प्रिय बच्चो !

बचपन याद आता है तो आँखों के सामने अजीब-अजीब सी तस्वीरें उभर आती हैं। मैं बचपन में बहुत दुबली पतली थी। दादी अम्मा मुझ पर जान देती थीं। मैं उन्हें 'डोल-अम्मा' कहती थी। तार की जाली वाली अलमारी को हम लोग डोली नहीं, डोल कहते थे। अम्मा डोल में तरह-तरह की मिठाइयाँ रखती थीं, किन्तु मुझे उन चीजों को खाने की मनाही थी। डोल अम्मा चुपके-चुपके मुझे वे चीजें खिलातीं। पापू (नेहरू जी) अक्सर अम्मा को टोकते– ''इतना लाड़-प्यार अच्छा नहीं।'' मगर यह तो उनका अधिकार था। असल में वह भी मुझको बहुत प्यार करते थे। सन् 1922 में जब पापू लखनऊ जेल में थे, तो उन्हें मेरी याद सताया करती थी। हर खत में वह मेरी चर्चा करते थे– 'कल उसे देखे तीन महीने हो जाएँगे। वह बहुत कमजोर और दुबली है।' आदि।

पापू का प्यार-दुलार मैंने भरपूर पाया। चाहे वह कहीं भी रहे। जेल में रहे, स्वाधीनता संग्राम के हंगामी दौरों पर रहे या प्रधानमंत्री बनने के बाद दिन-रात आफिस में काम करते हुए। मेरे बारे में वह बेहद सोचते रहे। मगर अम्मा का प्यार में अधिक दिन न पा सकी। कभी-कभी तो ऐसा भी हुआ, जब पापू और अम्मा दोनों को अंग्रेज सरकार ने गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया। घर पर मैं अकेली रह गई। पंद्रह दिन में केवल एक बार मैं पापू और अम्मा से मिल पाती थी, मगर मैंने साहस नहीं छोड़ा।

छोड़ती भी कैसे, ऐसी हालत में पापू मुझे जेल से मीठे-मीठे पत्र भेजा करते। उनके उन पत्रों से मुझे बड़ा दिलासा मिलता था। मेरा अकेलापन जैसे छूमंतर हो जाता था। मैं उन पत्रों को बार-बार पढ़ा करती थी। एक पत्र में पापू ने मुझे लिखा था– 'तुम अपने आपको अकेली अनुभव कर रही होगी। पंद्रह दिन में तुम एक दफा मुझसे और एक दफा अपनी मम्मी से मिल सकोगी और हम दोनों के संदेश एक दूसरे तक पहुँचा दिया करोगी। मैं तो कागज कलम लेकर बैठ जाया करूँगा और तुम्हारा ध्यान किया करूँगा। तब तुम चुपके से मेरे पास आ बैठोगी और हम एक-दूसरे से बहुत-सी चीजों के बारे में बातचीत करेंगे।'

मेरी पढ़ाई लिखाई के बारे में भी वह बड़ा ध्यान रखते थे। उन दिनों समूचे हिन्दुस्तान में आजादी की लड़ाई छिड़ी थी। पापू लड़ाई के नेता थे। मैं उन दिनों इलाहाबाद के एक स्कूल में पढ़ती थी, मगर हर दिन कुछ न कुछ रुकावटें सामने आ जाती थीं। जब मैं दस वर्ष की हो गई तो पापू ने अपने मीठे-मीठे पत्रों द्वारा मुझे पढ़ाना शुरू कर दिया। वह चाहते थे कि मैं पढ़ाई में कमजोर न रह जाऊँ। उनके ये पत्र भारतीय साहित्य की निधि हैं। 'पिता के पत्र पुत्री के नाम'– शीर्षक से इन पत्रों का प्रकाशन संसार की प्रमुख-प्रमुख भाषाओं में हुआ है।

एक बार तो ऐसा हुआ कि अंग्रेज सरकार ने कांग्रेस को गैर-कानूनी करार दे दिया। पापू तो जेल में थे ही, अम्मा उन दिनों मुम्बई में बीमार पड़ी थीं। घर पर दोनों बुआएँ (श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित और श्रीमती कृष्णा हठीसिंह) थी। वे भी गिरफ्तार कर ली गईं। मैं और बड़ी बुआ की तीन छोटी-छोटी लड़कियाँ घर पर रह गईं। अब समस्या उठी कि हमारी पढ़ाई कैसे जारी रखी जाए? उन दिनों एक अफवाह फैली थी कि सरकार हमारे घर को ले लेगी। गाँधी जी के कहने पर हम चारों को पूना के बोर्डिंग स्कूल 'प्यूपिल्स ओन स्कूल' में भिजवा दिया गया। शुरू-शुरू में वहाँ मुझे घर की याद आती। मैं बिस्तर में मुँह छिपाकर खूब रोती। मगर फिर मन लगने लगा। मुझे अपनी योग्यता दिखाने का वहाँ पूरा अवसर मिला। शीघ्र ही मैंने वहाँ भी सबका प्यार पा लिया।

मगर उन दिनों मेरे अंदर एक ज्वालामुखी बन रहा था। देश की आजादी माँगने वालों के खिलाफ अंग्रेज सरकार के अत्याचार मेरे विचारों को तेजी के साथ मथ रहे थे। जब मैं चार साल की थी, तभी से मेरे दिल में गोरी सरकार के प्रति घृणा पैदा हो गई थी। वह 6 दिसम्बर, 1921 का दिन था। इस दिन मेरा पहला दीक्षा समारोह हो रहा था कि हमारे घर में दादा जी (पं. मोतीलाल नेहरू) और पापू को गिरफ्तार करने के लिए पुलिस आ धमकी। दूसरे दिन दादाजी और पापू पर मुकदमा चलाने का नाटक खेला गया। उनको छह-छह महीने की कैद और 500-500 रुपए जुर्माने की सजाएँ दी गईं।

हम अपने घर लौटे तो घर खाली-खाली और सूना लग रहा था। दूसरे दिन पुलिस फिर आई और जुर्माना अदा न करने के एवज में हमारे घर का कुछ कीमती सामान जब्त करके ले गई। सभी चुपचाप गुस्से से उबलते देखते रहे। मगर मैं गुस्सा जब्त न कर सकी। पैर पटकते हुए चिल्लाई– ''तुम इन चीजों को नहीं ले जा सकते। ये हमारी हैं।'' घूँसा तानकर मैं पुलिस दरोगा पर झपट पड़ी। चार साल की बच्ची इससे अधिक कर भी क्या सकती थी।

ये सब बचपन की यादें हैं। बातें बहुत हैं, वक्त अब बहुत कम है और अब हमारा देश आजाद है। हमारे विशाल देश भारत की अनेकता के मूल में एकता है। प्रदेश, भाषा और धर्म अलग-अलग होते हुए भी देश के बच्चों के खेल, इच्छाएँ और सपने एक ही हैं। देश के लिए तुम सबके मन में गहरा प्यार है। इसी प्यार को शक्तिशाली बनाकर तुम देश का भविष्य उज्ज्वल करोगे, मुझे इसका विश्वास है।

तुम्हारी

इन्दिरा गाँधी

प्रस्तुति : मदनलाल पुरोहित, प्र.अ.
रा.मा.वि., फतेहपुर, जिला – हनुमानगढ़

शिविरा के जन्मदाता

मनसम्पर्क के धनी : अनिल बोर्दिया

(1934-2012)

❑ शिवरतन थानवी

श्री अनिल बोर्दिया ने शिक्षा-क्षेत्र में इतनी व्यापक रुचि ली कि वे कई कार्यक्रमों के जन्मदाता और कइयों के सहायक-समर्थक तथा शक्तिदाता रहे। शिविरा पत्रिका हो चाहे शिक्षक दिवस प्रकाशन, वरिष्ठता सूचियों का निर्माण अभियान हो चाहे बिहार शिक्षा अभियान या महिला समाख्या आंदोलन, शिक्षाकर्मी, लोकजुम्बिश, संधान, अनौपचारिक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति निर्माण आदि अनेक कार्यक्रमों-अभियानों और आंदोलनों से उनका नाम जुड़ा है। शिक्षा-जगत में सचमुच वे अद्भुत स्वप्नदृष्टा व कर्मयोगी बनकर उभरे और प्रतिष्ठित हुए।

जयपुर में 2 सितम्बर, 2012 को उनका निधन हो गया। वे 78 वर्ष के थे। उनका जन्म 5 मई, 1934 को इंदौर में हुआ था। उनकी शिक्षा विद्याभवन, उदयपुर में तथा सेंट स्टीफंज, दिल्ली में हुई। भारतीय प्रशासनिक सेवा में वे 1957 में आए और राजस्थान शिक्षा विभाग में निदेशक पद पर 1964 से 1968 तक रहे। शिविरा पत्रिका की शुरुआत उन्होंने उन्हीं दिनों की। केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय में संयुक्त सचिव पद पर 1974 में गए। सन् 1977 में वे प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम के महानिदेशक बने तब देश की प्रौढ़ शिक्षा नीति का निर्माण किया। सन् 1980 से 1982 तक उन्होंने पेरिस की यूनेस्को इंस्टीट्यूट फॉर एज्यूकेशनल प्लानिंग में पढ़ाया। सन् 1982 से 1985 तक राजस्थान में विकास आयुक्त रहे तब महिला विकास कार्यक्रम चलाया। सन् 1985 में केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्रालय (शिक्षा मंत्रालय) में सचिव बनें तब 1986 में शिक्षा नीति का निर्माण कराया जिसे संसद ने सर्वसम्मति से स्वीकृत कर पारित किया। सचिव के पद पर 1992 तक रहे जिस दौरान

इस नीति की देश में सफल क्रियान्विति हुई और सम्पूर्ण साक्षरता कार्यक्रम व्यापक स्तर पर चला।

सेवा निवृत्ति के तत्काल बाद 1992 में उन्होंने 'लोक जुम्बिश' नाम का एक नया जन-अभियान राजस्थान सरकार की सहभागिता से प्रारम्भ किया जिसने लोकभागीदारी शिक्षक-सम्मान व गांव-गांव, ढाणी-ढाणी तक गुणात्मक शिक्षा के सार्वजनीकरण पर बल दिया।

शिक्षा-क्षेत्र में इतने सारे महत्त्वपूर्ण कार्य करने के फलस्वरूप यूनेस्को ने उन्हें 1999 में 'एविसेना एवार्ड' से तथा 2010 में गाँधी सेवा मंडल से सम्मानित किया और भारत सरकार ने भी उसी वर्ष आपको शिक्षा व संस्कृति के क्षेत्र में विशिष्ट सेवाओं के लिए 'पद्मभूषण' सम्मान से अलंकृत किया।

वे हैम्वर्ग की यूनेस्को इंस्टीट्यूट ऑफ एज्यूकेशन के उपाध्यक्ष रहे और जिनेवा की इंटरनेशनल ब्यूरो ऑफ एज्यूकेशन के अध्यक्ष भी रहे। आप अपने पीछे संघ लोक सेवा आयोग की पूर्व सदस्य पत्नी ओर्जिमा बोर्दिया, पुत्री मैत्रेयी और पुत्र श्रेयस छोड़ गए हैं।

शिविरा के तो वे जन्मदाता थे। अब वे इस दुनिया में नहीं रहे। सभी शिक्षाप्रेमी उन्हें कई रूपों में याद करेंगे। वे स्वप्नदृष्टा थे, कई योजनाओं और कार्यक्रमों के सृष्टा थे, संचालक थे। वे जीवन भर सक्रिय रहे। हँसते-हँसते फिर किसी भावी शिक्षा-योजना की चर्चा मित्रों से कर रहे थे कि अटैक आ गया और अस्पताल पहुँच कर खेल खत्म।

शिविरा को वे शिक्षकों की शिक्षा का महाविद्यालय बनाना चाहते थे। वे इसे कोई ऐसी पत्रिका नहीं बनाना चाहते थे जो जयंतियाँ मना लें, महापुरुषों की जीवनियाँ दे दे और 'विद्यालय पत्रिका' की तरह सामान्य सी सूचनाएँ देकर 'इतिश्री' कर ले। शिक्षा, शिक्षक और शिक्षण केन्द्रित उच्च कोटि का लेखन वे इसमें चाहते थे। शिक्षकों में से ही वे शिक्षण के विविध पहलुओं पर विविध विधाओं में लिखने वाले लेखक, पत्रकार, विकसित करने का सपना देखा करते थे।

शिक्षकों के लेखन का एक और मंच बनाया उन्होंने 'नया शिक्षक/टीचर टुडे' को जिसमें शिक्षक-लेखक वैचारिक दृष्टि से और अधिक गहरे जा सकते थे, विस्तार से अपनी बात कह सकते थे और शैक्षिक शोधों के विवरण भी विस्तार से दे सकते थे। बहस कर सकते थे, पुस्तकों की समीक्षाएँ और पत्र लिख सकते थे तथा शिक्षा-जगत के राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के मूल्यवान शैक्षिक दस्तावेज भी प्राप्त कर सकते थे।

शिक्षा निदेशालय बीकानेर में मुझे श्री अनिल बोर्दिया ने लाकर 1965 में बिठाया था। उनकी विशेषता यह थी कि उन्होंने उस व्यक्ति को 'शिविरा पत्रिका' का श्रीगणेश करने के लिए चुना जो शिक्षा विभाग तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की नीतियों व कार्यक्रमों के विरोध में लिखा करता था, और उसे काम करने की सम्पूर्ण स्वतंत्रता दी इस निर्णय के साथ कि निदेशक

मात्र परामर्श देंगे और जरा भी हस्तक्षेप नहीं करेंगे। निर्माण, प्रगति और विकास में आलोचना तथा विरोध-प्रतिरोध का महत्त्व वे पहचानते थे। किसी भी पत्रिका में प्राण-प्रतिष्ठा तभी होती है जब उसमें पक्ष के साथ विपक्ष की भी पर्याप्त प्रस्तुति हो। सरकारी पत्र में भी विपक्ष की प्रस्तुति का मूल्य उन्होंने ही पहचाना था। पक्ष की आवश्यकता और महत्ता मैं भी जानता था किन्तु विपक्ष का सम्मान करने की उनकी शक्ति और सहमति देख कर ही मैं आने को राजी हुआ था। मैं कई गांव-शहर होता हुआ बोरुंदा (जि. जोधपुर) पहुँचा था और व्याख्याता (तब वरिष्ठ अध्यापक) रूप में वहाँ अंग्रेजी पढ़ा रहा था। शिक्षा पर मेरे लेख पढ़कर या उनके बारे में सुनकर और शिक्षा तत्व के अध्ययन-अनुशीलन में मेरी रुचि देखकर एक शैक्षिक पत्रिका का सपना लिए वे मुझसे बात करने बोरुंदा आ पहुँचे। हम दोनों की मोटी-मोटी बातों पर सहमति हो गई तो बीकानेर आकर मैंने साल भर 'विभागीय गजट' को उसी नाम से पत्रिका रूप देने का काम किया, फिर मैंने नाम तथा 'लोगो' बदलने की अनुमति भी उनसे ले ली।

उसकी भी एक कहानी है। हुआ यों कि हमने 'विभागीय गजट' को पत्रिका रूप देना चाहा उससे पहले वह सरकारी रंग-रूप का 'गजट' ही था, मात्र राज्य सरकार के व शिक्षा विभाग के आदेश-परिपत्रों का संकलन और अशोक चिह्न तथा राजस्थान के नक्शे व कीर्तिस्तम्भ आदि वाले एक 'लोगो' से अलंकृत। विद्यालयों में जाता था तो केवल संस्था-प्रधान अथवा बाजू की आलमारी में रहता था। स्टाफ को कुछ पढ़वाना जरूरी होता तो नोटिस-बुक में नोटिस निकाल कर उसके साथ 'विभागीय गजट' सभी की सूचनार्थ चपरासी के हाथों संस्था-प्रधान घुमवा दिया करते थे। पल भर का दर्शन और फिर आलमारी में बंद। हम जब 'विभागीय गजट' नाम से ही उसे शैक्षिक पत्रिका रूप में समाचार, समीक्षाएँ, लेख, चित्र, कार्टून, पाठकों के पत्र व संपादकीय आदि के साथ कुछ चुनिंदा आदेश-परिपत्र भी देते हुए निकाल चुके तो मैंने नवीनता लाने के लिए और शिक्षकों के हित की दृष्टि से दो प्रस्ताव और रखे बोर्दिया जी के सामने। अभी तक अशोक चिह्न व कीर्तिस्तम्भ आदि सहित जो राजस्थान के नक्शे वाला 'लोगो' जाया करता था वह मुझे लगा कि पत्रिका को शिक्षकों की पत्रिका बनाने में बाधक था। वह 'लोगो' उसे हर बार सरकारी विभाग का अंग घोषित करता था। एक तरह से यह विभाग के सरकारीपन की मोहर भी थी। मुझे यह विभाग और शिक्षक-पाठकों के बीच दीवार सी लगी। मैंने उसे हटाने का प्रस्ताव किया ये सब बातें बताकर। बोर्दिया जी मान गए। दूसरा प्रस्ताव किया मैंने नाम 'विभागीय गजट' हटाकर कोई नया नाम रखने का। वह नाम भी विभाग की अधिकार-वृत्ति का संप्रेषण करता था। नाम और 'लोगो' दोनों उसे 'सरकारी' पहले बनाते थे और पत्रिका बाद में। यह सरकारीपन न हो तो पत्रिका की विषयवस्तु का संप्रेषण सहज होगा। बोर्दिया जी ने दोनों बातें मान लीं।

अब सवाल आया कि नया नाम क्या हो, और मैंने आत्यंतिक जिज्ञासा का प्रतीक नाम 'नचिकेता' उनके सामने रखा। उसे लेकर कुछ अन्य विद्वानों से सलाह करने वे यात्रा पर निकल गए। निश्चित ही उन्हें सभी जगह 'हाँ' ही मिली होगी, मातहत प्रायः हाँ में हाँ ही मिलाते हैं। उदयपुर में उन्हें विपरीत सलाह मिली। एस.आई.ई.आर.टी. (तब एस.आई.ई.) के निदेशक और शिक्षा विभाग के वरिष्ठ शिक्षाधिकारी व शिक्षाविद् श्री बालगोविन्द तिवारी के सामने उन्होंने हमारा 'नचिकेता' वाला प्रस्ताव रखा। तिवारी जी हिंदी, अंग्रेजी के साथ प्राचीन भारतीय वाङ्मय के भी प्रकाण्ड पंडित थे और शिक्षाशास्त्र का भी गहरा ज्ञान रखते थे। उन्होंने खूब सोच-विचार कर सलाह दी कि यों तो 'नचिकेता' सीखने की अदम्य आकांक्षा का बहुत सही प्रतीक है किन्तु नचिकेता की आकांक्षा व जिज्ञासा में इतना अतिरेक था, इतनी आत्यंकिता थी, कि उसके पिता ने उसके प्रश्नों से थक कर उसे यम के पास भेज दिया था। यह यम का साहचर्य यहाँ भयानक है। इससे इसमें 'मोर्बिडिटी' (मृत्यु की प्रतीति) आ जाती है।

बोर्दिया जी लौटे और समस्या बताई। मेरे साथी चतरसिंह मेहता और मैंने कई नामों पर विचार किया और 13-14 नामों की सूची लेकर रात 10-11 बजे हम उनके घर पहुँचे। हमें बिना पूछे कभी भी उनसे मिलने की छूट थी। यह इस तथ्य का द्योतक था कि वे शैक्षिक पत्रकारिता की यह नई नींव रखने में कितनी गहरी रुचि रख रहे थे और इस अभियान को सफल बनाने को कितनी उत्कटता से उत्सुक थे। ज्योंही हम दिन भर सोचते-सोचते सूची बना चुके खूब सारे नामों की, तो जोश-जोश में देर रात ही दौड़ पड़े उन्हें बताने को। वैसे हम पत्रिका की रीति-नीति व सामग्री पर विचार-विमर्श को उनके घर पर देर रात 10-11 बजे तक कई बार बैठा करते थे। उस दिन हमारा यों दौड़कर जाना सार्थक हो गया। उन्हें उस लम्बी सूची में से 'शिविरा' नाम बहुत सही लगा। अगले ही दिन उन्होंने अपनी कार पर लिखवा दिया 'शिविरा' और दफ्तर की तमाम फाइलों पर भी संख्या अंकित करने की प्रणाली बदलते हुए आदेश जारी कर दिया कि अब से 'ईडीबी' की जगह हर संख्या 'शिविरा' से प्रारम्भ की जाया करे। बदली गई यही प्रणाली शिक्षा निदेशालय की फाइलों पर आज भी जारी है।

हमने 'लोगो' हटा दिया और पत्रिका का नाम 'विभागीय गजट' से बदल कर 'शिविरा पत्रिका' रजिस्टर करवा दिया। यह कहानी है उनकी परिवर्तनप्रियता के इस नए कदम की।

अब दूसरा कदम। अब कहानी शुरू होती है 'शिविरा' के स्वरूप निर्माण की और 'नया शिक्षक' को नया रूप देने की। ऊपर हम बता चुके कि 'शिविरा' पहले 'गजट' रूप में किस भूमिका में कैसे विद्यमान थी और बोर्दियाजी के उसे क्या रूप देकर बदलाव के क्या प्रयास प्रारम्भ किए। 'नया शिक्षक' का प्रकाशन तो कई वर्ष पहले प्रारम्भ हो गया था लेकिन सम्पादन-प्रकाशन का कोई समुचित प्रबंध न होने के कारण न वह मासिक हो पाया और न त्रैमासिक। साल दो साल में जाकर एकाधवार ही प्रकाशित हो पाता था। यादृच्छिक रूप से जो हाथ आया वही छाप दिया जाता था। सामग्री चयन के पीछे कोई गहरा विचार नहीं था। बोर्दिया जी ने

नियमितता व सामग्री दोनों पर ध्यान देने में हमारी खूब मदद की। सामग्री पैदा की गई, त्रैमासिक अवधि पर नियमितता निश्चित की गई, तो लिखने वाले भी आगे आए और हमने भी ढूँढ़-ढूँढ़कर अनुभवी लेखकों से लिखवाए। सचित्र अंक भी छापे। विशेषांक भी निकाले। कभी प्रौढ़ शिक्षा, कभी श्रव्य-दृश्य शिक्षा, कभी गाइडेंस तो कभी शैक्षिक समाजशास्त्र। 'नया शिक्षक' का हर अंक एक स्वतंत्र पुस्तक का सा रूप लेने लगा। ग्राहक संख्या जो मात्र 13 थी एक रुपया वार्षिक पर भी वह सैकड़ों और हजारों में पहुँचने लगी वार्षिक शुल्क बढ़ता गया तो भी।

स्वरूप बदलने की कई योजनाएँ बनीं। बनती गईं और कार्य रूप में परिणित होती गईं।

'शिविरा' के स्वरूप पर भी कई दृष्टियों से विचार हुआ, लेखक तलाशे गए, विभिन्न विषयों की खोज हुई और स्तर को ऊँचा उठाने के उपाय किए गए। बोर्दिया जी का विश्वास था कि शैक्षिक लेखन समाज में नया मोड़ ला सकता है। यदि यथास्थिति बदलने की इच्छा और साहस हो तो शिक्षक अपने चिंतन और व्यवहार दोनों में अच्छा प्रभावकारी परिवर्तन ला सकते हैं। अब तक की परिपाटी से शिक्षा सिद्धान्त और शिक्षण प्रक्रिया को आजाद करने की इच्छा तो हो। शिविरा यह इच्छा पैदा करने का काम करे। शिक्षा, साहित्य और संस्कृति की समृद्धि में इन विभागीय पत्रिकाओं का भी कोई सक्रिय, कोई जीवंत, योगदान हो। निष्क्रिय बैठना बोर्दियाजी के स्वभाव में नहीं था। नवीनता, नवाचार और परिवर्तन द्वारा प्रगति की तरफ बढ़ने को साहसी कदम उठाने की उनमें अजस्र ऊर्जा थी और क्षमता भी थी।

शिविरा को क्या रूप दिया जा सकता था? एक तो यह कि वह सीधी-सादी 'सरकारी' पत्रिका बनी रहे, सर्वथा निरापद जैसी प्रायः हर सरकारी पत्रिका परम्परा से होती आई है। अर्थात् विभागीय गतिविधियों की तथा शिक्षा-जगत की हलचलों की सुहानी-सुहानी खबरें दे दे, विभाग व सरकार की रीति-नीतियों का खुलासा मात्र या मंत्रियों व अधिकारियों के भाषण विस्तार से देती रहे। पुस्तक-समीक्षाएँ, पाठकों के पत्र आदि कुछ स्तम्भ भी हों, किन्तु सबकी विषय-वस्तु ऐसी हो जो मात्र सूचना दे, विभाग व सरकार का प्रचार करने वाला हो, इनके अनुकूल हो। प्रतिकूल करने की जहाँ गुंजाइश न हो।

दूसरा रूप यह हो सकता था कि वर्तमान गतिविधियाँ प्रस्तुत करने का दायरा राज्य से बाहर देश-विदेश तक बढ़ाया जाए। इसके लिए अन्य राज्यों तथा विदेशों की भी शैक्षिक पत्रिकाएँ मँगाई गईं व दैनिक पत्रों से कतरनों का एक संदर्भ संग्रहालय भी रखा जाने लगा। निर्णय हुआ कि केवल वही प्रस्तुत न किया जाए जो है बल्कि वह भी प्रस्तुत किया जाए जो हो और जो हो सकता है। तात्पर्य स्पष्ट था : केवल सूचना और समाचार ही नहीं, विचार को भी स्थान मिले। विकल्पों पर विचार व विवाद की अभिव्यक्ति को भी अवसर मिले। ऐसा हो तो देश-विदेश की हर तरह की गतिविधियों की आलोचना-प्रत्यालोचना भी होगी, नई-नई रीति-नीतियों के सपने भी इसमें होंगे और खुलकर वाद-विवाद के लिए भी इसे लेखकों का मंच बनाया जाएगा।

हमने यह दूसरा मार्ग चुना। यह जानते हुए चुना कि भिन्न-भिन्न सम्मतियों को देना, सहमतियों के साथ असहमतियों को व्यक्त करना अर्थात् विरोध और विपक्ष की प्रस्तुति करना सरकारी उद्देश्यों के प्रतिकूल जाना नहीं है, कि सरकार का उद्देश्य यदि समाज और शिक्षा की उन्नति है तो वाद-विवाद और संवाद द्वारा यह काम अधिक अच्छे रूप में सम्पन्न होगा, कि वैचारिक चिंतन-मनन के विकास में विचार-मंथन का भी प्रमुख स्थान होता है जो कई प्रकार के विरोधी-प्रतिरोधी तर्क-वितर्क के द्वारा ही आगे ले जाया जा सकता है। तय रहा कि शिविरा के लेखकों की अभिव्यक्ति अधिक से अधिक निर्भीक और स्वतंत्र जरूर होगी। तय रहा कि शिविरा अपने पाठकों को मन निर्भय और सिर ऊँचा रखने की प्रेरणा व शक्ति देगी गुरुदेव टैगोर को याद करते हुए। जहाँ एक ओर इसके लेखक अपने इर्द-गिर्द की या दुनिया में कहीं की भी घटनाओं का वर्णन-विवरण देंगे वहाँ दूसरी ओर उनमें सुधार की दृष्टि से, परिवर्तन की दृष्टि से, खुद की तथा दूसरों की भिन्न राय होगी तो उसे भी वे निर्भय दे सकेंगे।

बोर्दिया जी चाहते थे कि 'शिविरा' व 'नया शिक्षक' के माध्यम से शिक्षक-पाठकों की सेवारत अनवरत शिक्षा हो। वे तो यह भी चाहते थे कि गिजुभाई जैसा लेखन करने वाले ऐसे लेखक विकसित हों जो न केवल शिक्षकोपयोगी बल्कि बालोपयोगी व माता-पिताओं के लाभ की रचनाएँ भी लिखें। उनकी इसी मनोकामना के अनुरूप शिक्षक-दिवस प्रकाशनों की पाँच पुस्तकों में एक पुस्तक बालोपयोगी रचनाओं के संकलन की होने लगी जो आज भी होती है। और माता-पिताओं को शिविरा से जोड़ने के लिए 'घर-विद्यालय सेतु निर्माण अभियान' चलाया तो कई अभिभावक शिविरा के ग्राहक बने। बच्चों की शिक्षा में शिक्षकों की भी रुचि बढ़े तो कितना अच्छा हो? शिक्षण के नए-नए तरीकों का लोगों को ज्ञान हो और इस पर परस्पर चर्चा करें यह वे चाहते थे। चिंतन-मनन अध्ययन-लेखन शिक्षा की प्रक्रिया के विषय में ऐसा हो जो शिक्षक को भी लाभकारी हो और माता-पिता को भी लाभकारी हो। शिक्षा व सामाजिक-सांस्कृतिक विषयों पर कुछ पढ़ने-लिखने की आदत का विकास हो। अपने कार्य और व्यवसाय के बारे में शिक्षकों में जागरूकता आए, ज्ञान की वृद्धि में उनकी रुचि बढ़े। रुचिवान-निष्ठावान पाठकों की संख्या बढ़े। शिविरा, नया शिक्षक दोनों उनकी व्यावसायिक उन्नति के उत्तम साधन बनें। वे आधुनिक चिंतन-धाराओं पर निरन्तर ध्यान रखते थे किन्तु परम्परागत विचारों से ऊर्जा लेने में भी उन्हें कोई आपत्ति नहीं थी। एक तरफ गीता का कोई श्लोक कहीं उद्धृत करते तो दूसरी तरफ अफ्रीका में प्रचलित, प्रख्यात और जन-जन के प्रेरणा-स्रोत मुहावरे का उपयोग कर 'दूसरा दशक' के मुख्यालय की पत्रिका का नाम ही 'उबुंटू' रख दिया। 'उबुंटू' का अर्थ होता है शांति, अहिंसा और भाईचारा। सूत्र रूप में इसका अर्थ होता है– 'मैं हूँ क्योंकि हम हैं'। ठीक ही है, सब के सहकार और सहयोग बिना एक का क्या अस्तित्व है? जीवन के प्रति एक पूरा दर्शन है 'उबुंटू' जो कहता है कि मनुष्य का जीवन

उसके पड़ौसी और प्रियजनों से ही सार्थक होता है। 'उबुंटू' माने 'मन-सम्पर्क'। या जनसम्पर्क की बजाय मनसम्पर्क उन्हें अधिक प्रिय था। इसीलिए चुना उन्होंने कई अफ्रीकी भाषाओं के मेल से बना यह शब्द 'उबुंटू'। यह बोर्दिया जी के अंतर्राष्ट्रीय सौहार्द्र का प्रतीक था। कई अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में काम करने के कारण उनका दुनिया के कई देशों से सक्रिय सम्पर्क रहा। दक्षिण अफ्रीका, नाईजीरिया और बांग्लादेश के सलाहकार भी रहे। गुजराती और उर्दू का शब्द लिया 'जुम्बिश' और 'लोक जुम्बिश' नाम से राजस्थान में प्राथमिक शिक्षा को जन-जन तक पहुँचाने का अभियान चलाया। इस प्रकार वे संस्कृतियों के अंतरावलंबन का व्यावहारिक प्रयोग भी किया करते थे।

शिक्षा की साधना में, प्रबंधन में, जो कुछ उदात्त है, सुंदर और सुघड़ है, वह बोर्दियाजी के कर्तृत्व में देखा जा सकता है। हमारे देश में शिक्षा का आज जो वातावरण है उसमें बोर्दिया जी एक अद्‌भुत विभूति थे। आज इक्कीसवीं सदी में भी पुराणपंथी असहिष्णुता तथा अंधविश्वास आपको अच्छे-अच्छे शिक्षित लोगों में प्रायः दिखाई दे जाएगा। ऐसे शिक्षकों, शिक्षाशास्त्रियों व शिक्षा-प्रशासकों की कमी नहीं है जो इतिहासबोध से अनजान हो पुराण-बोध से चिपके रहते हैं। बोर्दियाजी इस मामले में पूर्णतया सजग, सतर्क और सावधान थे। इतिहास-बोध से अनजान नहीं थे। अपने समय की आवश्यकता-अपेक्षा जानते थे और परम्परा से प्राप्त शाश्वत को भी नजरअंदाज नहीं करते थे। शाश्वत के नाम से भी पुराणपंथ और रूढ़िवादिता का मोह उन्हें कभी आकृष्ट नहीं कर सका। बल्कि इन दोनों से वे पल्लू बचाकर ही चलते थे। किन्तु उदारता भी थी। जो साथी-सहयोगी पुराणपंथी और रूढ़िवादी भी थे तो वे उनकी उस कमजोरी को जानकर भी उनका साथ नहीं छोड़ते थे। करते यह थे कि उनको साथ रखने के लिए उनके गुणों पर बल दिया करते थे। जिन्होंने भारी भूलें की बाजदफा उनकी भूलों को जानबूझ कर भुला देते और लगभग अनजान बनकर, उनकी मदद की, उनका भला ही किया। कभी-कभी तो मौका आने पर उनको उनके अनुकूल नया काम भी सौंप दिया। नहीं था तो नया काम पैदा कर दिया। और ऐसा जिस व्यक्ति के साथ हुआ उसने अपराध-बोध की प्रतीति के साथ जीवनभर उनके बताए सारे काम पूरी निष्ठा से किए और उत्कृष्ट स्तर के किए। यह विधा थी लोकतंत्रात्मक विधि से, मानवीय गुणों से परिपूर्ण भाव के साथ, समूह-संचालन की उनकी। वे जानते थे कि मनुष्य में कमियाँ भी होती हैं, गुण भी होते हैं। वे गुणों पर ही विशेष नजर रखते थे। फल यह होता था कि उनके साथियों-सहयोगियों का ध्यान अपने पूर्वग्रहों से हटकर यथार्थ पर ही रहता था। उन्हें हाथ का ठीक काम ही अधिक नजर आता था। अपनी कमजोरियों को या अपने रूढ़िवादी भावों को प्रकट करने का मौका ही नहीं मिलता था। उसकी जरूरत ही नहीं पड़ती थी। बोर्दिया जी उसकी जरूरत उन्हें पड़ने ही नहीं देते थे।

वे अपने साथियों और सहयोगियों को अधिक से अधिक स्वतंत्रता, स्वायत्तता और सम्मान देते थे। खुद संचालक, नियामक और नियंता की भूमिका में रहते हुए भी अधिकारिता या आधिपत्य का भाव न रखकर सदैव विनम्र बने रहते थे। काम को ऊँचाई पर पहुँचाने के लिए हमेशा इस बात पर ध्यान रखते थे कि सभी को साथ लेना, सबकी सुनना और सबको ठीक लगे वह निर्णय लेना। उनकी कार्यशैली में पग-पग पर हमें हृदय की छूने वाला लोकतांत्रिक भाव नजर आता है। यही उनकी नेतृत्व कला थी। जिन्होंने भी उनकी कार्यप्रणाली को नजदीक से देखा है वे वैसा नहीं, उतना नहीं, तो जैसा और जितना भी संभव हो सकता है, करें और अवश्य करें।

बोर्दिया जी इस बात में विश्वास करते थे कि शिक्षा ऐसी हो जो केवल सूचना ही नहीं दे, शिक्षार्थी की समझ भी बढ़ाए। जहाँ एक ओर उन्हें पूरे देश की शिक्षा के सभी स्तरों के स्वरूप में देश की बदली परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन की चिंता थी वहीं दूसरी ओर प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण की ओर भी उनका पूरा ध्यान था। तभी तो उन्होंने 1986 में नई शिक्षा नीति का निर्माण कराया, 'शिक्षा का अधिकार' कानून के निर्माण में मुख्य भूमिका निभाई और थाइलैण्ड में 'जोमतिएन घोषणा' में 'सबके लिए शिक्षा' पर बल देने में भी अग्रणी रहे। बिहार और राजस्थान में प्राथमिक शिक्षा के प्रसार के लिए व्यापक अभियान चलाया। राजस्थान में 1987 में इसी उद्देश्य से उन्होंने 'शिक्षाकर्मी परियोजना' प्रारम्भ की। उन्हें राष्ट्रीय प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का महानिदेशक बनाया गया। सेवानिवृत्ति के तत्काल बाद उन्होंने राजस्थान सरकार के सहयोग से 'लोकजुम्बिश' परियोजना शुरू की। 'दूसरा दशक' नाम के कार्यक्रम चलाया और गांव-गांव के वंचित किशोर-किशोरियों की शिक्षा के अभियान में सक्रिय हो गए।

महिलाओं को भी वे भूले नहीं। शिक्षा के जितने भी कार्यक्रम, परियोजना या अभियान उन्होंने सरकार में रहते चलाए, सरकार के साथ चलाए या स्वतंत्र चलाए, इनमें महिलाओं को सीखने वाले तथा सिखाने वाले समूहों में बराबर याद रखा और अधिक से अधिक संख्या में उन्हें प्रोत्साहित करते रहे। राजस्थान सरकार में 1976 में विकास आयुक्त के पद पर थे तब 'एक हजार गृह उद्योग परियोजना' प्रारम्भ की थी जिसका उद्देश्य था शहरी क्षेत्र में रहने वाली गरीब और निम्न-मध्यमवर्गीय महिलाओं को आर्थिक रूप से सबल बनाना। विजयलक्ष्मी जोशी ने इसी परियोजना में उनको काम करते देखा था। जयपुर के मासिक ग्रामीण समाचार पत्र 'उजाला छड़ी' (10 सितम्बर, 2012) में विजयलक्ष्मी जोशी ने लिखा है कि अनिल बोर्दिया एक व्यक्ति नहीं युग थे। महिलाएँ और बच्चियाँ भी शिक्षित होकर सबल बनें यह उनके जीवन का लक्ष्य रहा। अजमेर के खादिम मोहल्ले की मुस्लिम बहनों का केन्द्र देखकर लौटे तो विजयलक्ष्मी से कहा, ''अरे, सफेद दाढ़ी वाले लोगों की दीदी कैसे हो गई? तुम उम्र में छोटी सी लड़की और तुम उन्हें चाचा कहती हो और वे तुम्हें दीदी? अजीब रिश्ता है।'' खादिम मोहल्ले की बहनों से फिर मिले तो इनसे उन्होंने कहा, ''कमाल कर दिया 'दीदी' ने, सबको बिना बुर्के के खूब बात करने वाली बना दिया !''

यों वे छोटी-छोटी बातों पर हौसला बढ़ाया करते थे। विजयलक्ष्मी लिखती हैं कि सरकार में एक प्रशासनिक अधिकारी होते हुए भी श्री बोर्दिया को लगता रहा कि स्वैच्छिक संस्थाओं की भागीदारी विकास में और विशेष रूप से शिक्षा में जरूरी है। शिक्षा में भी उनकी दृष्टि बालिका शिक्षा और औरतों की शिक्षा पर ज्यादा केन्द्रित रही। शिक्षाकर्मी परियोजना में गांव की महिलाओं को तैयार कर शिक्षक रूप में उन्हें खड़ा करना अपने आप में चुनौतीपूर्ण काम था। शिक्षा के साथ महिलाओं का सशक्त होना और विकास में बराबर की भागीदारी एवं अत्याचार के विरोध में संगठित होने की जरूरत का विचार 1983-84 में उनके मन में आया और 'महिला विकास कार्यक्रम' के नाम का एक अनूठा कार्यक्रम राजस्थान में शुरू किया। इस पूरे कार्यक्रम में स्वायत्तता बनी रहे इसका ढाँचा इसी तरह विकसित किया।

इनकी पारखी नजर ने जगह-जगह से ऐसी महिलाओं को चुना जिनमें जुनून था कुछ करने का। विजयलक्ष्मी को आज भी पदमपुरा का पहला साथिन प्रशिक्षण याद है जब वे, ममता और स्व. सुष्मिता बनर्जी पहला साथिन प्रशिक्षण ले रही थीं। उनका नियम था कि सत्र के बीच में कोई नहीं आएगा। श्री बोर्दिया एवं श्रीमती रुक्मणी हल्दिया (तत्कालीन निदेशक, महिला विकास कार्यक्रम) लंच से पहले सत्र के बीच में आ गए। इनसे पूछा कि वे अभी उनके साथ बैठ सकते हैं? इन्होंने कहा वे लंच के बाद वाले सत्र में ही बैठ सकते हैं क्योंकि कोई नया व्यक्ति आता है तो उन्हें अपनी साथिनों को तैयार करना होता है, सहज रहने और सहज चर्चा करने के लिए। बोर्दिया जी ने बिल्कुल बुरा नहीं माना और कमरे के बाहर सीढ़ियों पर बैठकर सत्र के खत्म होने का इंतजार करते रहे। शिक्षा में गुणवत्ता हो, बालिकाएँ और महिलाएँ शिक्षा के माध्यम से सशक्त बनें, यह कोशिश उनकी ताउम्र रही। भारत सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय में सचिव बने तब राजस्थान के इस महिला विकास कार्यक्रम को देश भर में 'महिला समाख्या कार्यक्रम' नाम से शुरू कर दिया।

ग्रामीण इलाकों में जब हम जाते हैं तो अक्सर यह महसूस होता है कि ऊर्जा का एक बहुत बड़ा स्रोत अनछुआ पड़ा है। 'लोक जुम्बिश' के माध्यम से भी वे ऊर्जा के उन स्रोतों तक पहुँचे और 'दूसरा दशक' के माध्यम से भी पहुँचे। जब वे इस दिशा में बढ़ने की बात सोच रहे थे तब उनके सामने कोई उदाहरण नहीं था। कोई ऐसा उदाहरण मौजूद नहीं था जो शिक्षा को स्वास्थ्य, जीवन कौशल और पर्यावरण जैसे मुद्दों से जोड़ता हो और जो युवा लोगों को इस बात के लिए उत्साहित कर सके कि जो कुछ उन्होंने अब तक शैक्षिक व्यवस्था का हिस्सा होकर सीखा है उसका उपयोग वे जिंदगी में कर पाएँ। बोर्दियाजी ने एक जगह लिखा है कि यह उनके लिए एक जबरदस्त चुनौती थी और उन्होंने इसे खोजने-सीखने की एक प्रक्रिया की तरह स्वीकार किया जो आने वाले समय में स्थानीय जरूरतों व स्थितियों के हिसाब से जरूरी रद्दोबदल के बाद बड़े स्तर पर सभी व्यक्तियों के साथ काम की संभावनाओं को एक दिशा दे सकती है। इस परियोजना की जरूरत दो खास कारणों से हुई– 1. देश में प्राथमिक शिक्षा एवं साक्षरता के सार्वजनीकरण के लक्ष्य का पूरा न हो पाना, 2. आयु समूह 11-20 में आने वाले व्यक्तियों के साथ काम करने की जरूरत अनुभव होना। अगर सही तरीके से इनकी ऊर्जा का इस्तेमाल हो तो ये देश के आर्थिक व सामाजिक विकास में सकारात्मक रूप से भागीदार हो सकते हैं। इन्हें जरूरत होती है अभिप्रेरणा की और अपने इर्द-गिर्द ऐसे व्यक्तियों की मौजूदगी की जिन्हें वे 'रोल-मॉडल' के रूप में देख सकें और उनका आत्मविश्वास बढ़े। मुस्लिम व अन्य लड़कियाँ जो कभी भी मुखरित नहीं हो सकती थीं उन्हें 'दूसरा दशक' की गतिविधियों के माध्यम से मुखरित होने का अवसर मिला है, यह एक बड़ा सामाजिक बदलाव है। विज्ञान मेलों ने गांव-ढाणी में वैज्ञानिक दृष्टि का प्रसार किया है। ढाणी पुस्तकालयों ने नई चेतना जगाई है।

प्रशासनिक अधिकारी होते हुए भी उन्होंने शिक्षा, शिक्षार्थी और शिक्षक की सेवा में पूरा जीवन अर्पित कर दिया। वे सच्चे शिक्षाकर्मी साबित हुए। देश की शिक्षा के इतिहास में उनका नाम अमर रहेगा।

–मोची स्ट्रीट, फलोदी-342301, जोधपुर (राज.)

देशभक्ति

एक बार भारत के महान संत स्वामी रामतीर्थ जापान की यात्रा पर गए। वहाँ स्कूल के एक समारोह में उन्हें बुलाया गया तो वहाँ एक दस-बारह साल का बच्चा पास में खड़ा था। स्वामी जी ने उससे पूछा कि ''तुम बुद्ध को क्या समझते हो और तुम्हारा धर्म क्या है?'' बच्चे ने जवाब दिया, ''बुद्ध तो भगवान हैं और बौद्ध मेरा धर्म है।''

स्वामी जी ने नया प्रश्न किया, ''तुम कन्फ्यूशियस को क्या समझते हो?'' बच्चे ने फिर एक बार उत्सुकता से उत्तर दिया– ''कन्फ्यूशियस एक महान संत हैं।'' स्वामी जी का अगला प्रश्न था, ''अगर किसी दूसरे देश से तुम्हारे देश जापान को जीतने के लिए सेना आए और उसके कमाण्डर बुद्ध और जनरल कन्फ्यूशियस हों तो तुम क्या करोगे?''

उस विद्यार्थी का चेहरा गुस्से से लाल हो गया और पूरे जोश के साथ जवाब दिया। ''अगर मेरे देश जापान को जीतने के लिए किसी दूसरे देश की सेना के कमाण्डर भगवान बुद्ध तथा जनरल संत कन्फ्यूशियस हों तो मैं क्या करूँगा?'' तब मैं अपनी तलवार से बुद्ध का सिर काट दूँगा और कन्फ्यूशिस को पैरों से रौंद कर कुचल दूँगा।''

स्वामी रामतीर्थ के मुँह से निकल पड़ा– ''वाह रे, जिस जापान देश के विद्यार्थियों में ऐसी देशभक्ति व ऊँचे चरित्र का निर्माण हुआ है। वह देश कभी किसी का गुलाम रह ही नहीं सकता तथा उन्नति की चोटी पर अवश्य पहुँचेगा।''

–संग्राम सिंह सोढा, अध्यापक
सोढांण लोक साहित्य सदन
चक सचियापुरा, पो. बज्जू, बीकानेर

विद्यार्थियों के जीवन की नई राह गढ़ते शिक्षक

❑ सुधा तैलंग

विद्यालय शिक्षा के केन्द्र हैं। शिक्षा बच्चों की प्रसुप्त रुचियों, गुणों, ज्ञान व अन्तर्निहित शक्तियों को उभार कर उन्हें प्रस्फुटित करती है। आज के प्रतियोगी युग में कोरे किताबी ज्ञान का महत्त्व नहीं है। बल्कि पढ़ाई के संग दूसरे क्षेत्रों में भी व्यावहारिक ज्ञान जरूरी हो गया है। आज के बच्चों की व उनके माता-पिता की यही आकांक्षा रहती है बच्चे पढ़ाई के साथ खेलकूद, नृत्य संगीत, वाद-विवाद, ड्राइंग-पेन्टिंग, लेखन सभी एक्टीविटीज में आगे आयें। आलराउण्डर बनें। उनकी छिपी प्रतिभा, रुचि सबके सामने आ सके इसकी वो भरसक कोशिश करते हैं। आज के विद्यालयों में पढ़ाई के साथ अन्य गतिविधियों पर पूरा जोर दिया जाता है। तरह-तरह की साल भर तक प्रतियोगिताएँ आयोजित होती हैं। बच्चों को भी प्रोत्साहित किया जाता है।

शाला का प्रांगण, मंच बच्चों के व्यक्तित्व के विकास का एक अहम् हिस्सेदार होता है। जहाँ आकर विद्यार्थी ईश वन्दना के साथ अपनी पढ़ाई की शुरुआत कर भक्ति, शक्ति, अनुशासन व एकता, शांति, भाईचारे का पाठ सीखता है। राष्ट्रप्रेम व सांस्कृतिक एकता के साथ खुद को अभिव्यक्त करने का अवसर पाता है। अपनी झिझक को दूर करता है। नन्हें-मुन्नों के भीतर कुछ न कुछ प्रतिभा जन्मजात होती है। और वो घर में माता-पिता के प्रोत्साहन से व स्कूल में शिक्षकों या साथियों के प्रोत्साहन से ही उभर कर सामने आती है। दबी हुई प्रतिभा प्रस्फुटित होकर एक हुनर का रूप लेकर बच्चों के व्यक्तित्व का विकास करती है।

प्रायः देखा जाता है कि कुछ बच्चे पढ़ाई में तो सामान्य होते हैं। पर वो ही खेलकूद, ड्राईंग, अभिनय या लेखन, भाषण या नृत्य संगीत में बेहद प्रतिभाशाली होते हैं। ऐसे में उन बच्चों को यदि पढ़ाई के संग अन्य रुचि के क्षेत्रों में प्रोत्साहन दिया जाए तो आगे जाकर वो निश्चय ही एक बेहतर खिलाड़ी या गायक या लेखक बन सकते हैं। अपनी हॉबीज को विकसित कर सकते हैं।

मेरे तीस साल के अध्यापन काल के दौरान मुझे ऐसे ढेरों बच्चों को पढ़ाने का मौका मिला जो पढ़ाई में तो औसत थे पर किसी दूसरे क्षेत्र में हमेशा अव्वल आते। मैंने ऐसे बच्चों को पहचाना। उन्हें प्रोत्साहन देना शुरू किया। मुझे बेहतर परिणाम मिले। मेरे स्कूल की एक आदिवासी छात्रा मुनिया जिसके पिता एक किसान थे। घर का माहौल पढ़ाई का नहीं था। वो पढ़ने में एक औसत दर्जे की छात्रा थी। पर ढोलक बजाने व लोकगीत गाने में उसका मुकाबला स्कूल क्या पूरी तहसील में भी कोई नहीं कर पाता था। मैंने उसे स्कूल के कार्यक्रमों के साथ अन्तर्विद्यालयीय व जिला स्तरीय संगीत प्रतियोगिताओं में भाग लेने को प्रेरित किया। वो बुन्देलखंडी लोकगीत प्रतियोगिता में पूरे जिले में अव्वल आई। धीरे-धीरे उसकी पढ़ने में भी रुचि जागी। उसने बारहवीं परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। अब वो संविदा शिक्षाकर्मी पद पर काम कर रही है। आदिवासी ग्रामीण इलाके के पिछड़े क्षेत्र में शादी के बाद भी वो घर व बाहर का काम बखूबी सँभाल रही है। जब भी मुझसे मिलती है तो कहना नहीं भूलती– ''मैडम यदि आप प्रोत्साहित नहीं करतीं तो मैं पढ़ाई भी पूरी नहीं कर पाती, नौकरी की तो बात छोड़ो।'' मुझे खुशी होती है कि जब हमारे पढ़ाये हुए बच्चे किसी भी क्षेत्र में कोई मुकाम हासिल करते हैं। यही शिक्षक के लिए असली गुरु-दक्षिणा होती है।

कई बार देखने में आता है कि कई अभिभावक बच्चों के केवल पढ़ने पर ही जोर देते हैं। बच्चों का खेलना, कूदना गीत-संगीत, स्कूल के कार्यक्रमों में भाग लेने पर रोक लगाते हैं। उनकी इसी धारणा के चलते वो बच्चे पढ़ाई में तो अव्वल आ जाते हैं पर व्यावहारिक जीवन के क्षेत्र में पिछड़ जाते हैं। मेरे ही स्कूल की एक छात्रा ने 12वीं में टॉप किया पर जब उसे कभी भाषण के लिए या कोई प्रोग्राम संचालन करने के लिए बोला जाता था तब स्टेज में आते ही उसके हाथ-पाँव काँपने लगते। उसकी ये कमजोरी उसे आगे पीएससी परीक्षा के इन्टरव्यू फेस करने के समय भारी पड़ी। यदि उसके अभिभावक पढ़ने के साथ पाठ्यसहगामी गतिविधियों में भी उसे भाग लेने का मौका देते तो वो जीवन जीने की व्यावहारिक-कला में भी अव्वल आती। उसे परेशानी न उठानी पड़ती।

विद्यालयों में पढ़ाई के साथ-साथ पूरे साल महापुरुषों की जयन्ती, दिवस, सेमीनार, विज्ञान मॉडल प्रदर्शनी, मेले, प्रश्नमंच, खेलकूद, गीत-संगीत-नृत्य की प्रतियोगिताएँ होती रहती हैं। बाल-सभा के आयोजन प्रति सप्ताह बच्चों को अपनी प्रतिभा, हुनर की अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करते हैं। स्कूल के मंच में ही बच्चों को अपनी प्रतिभा का पता चलता है। पर शिक्षकों द्वारा प्रोत्साहित न करने पर उनमें हीन भावना पैदा हो जाती है। वो पिछड़ जाते हैं। ऐसे में हम शिक्षकों का पूरा दायित्व बनता है कि हम ऐसे बच्चों को आगे लाने का अवसर प्रदान करें जो किसी कारण से अपने को अभिव्यक्त नहीं कर पा रहे हैं।

हमारे स्कूल में कुछ ब्लाइंड छात्र भी पढ़ते हैं। वो तबला, हारमोनियम बजाने के साथ गाने में भी रुचि रखते हैं। क्योंकि उनके पास संगीत विषय भी हैं। पर संकोच के कारण व टीचर्स द्वारा प्रोत्साहित न किए जाने के कारण वो हमेशा कार्यक्रमों से दूरी बनाए रखते हैं। मैंने ये सब देखा तो ऐसे बच्चों को प्रोत्साहित कर आगे लाने की कोशिश की। कुछ ही दिनों में वे स्वयं हर कार्यक्रमों में भागीदारी करने लगे। इन घटनाओं को देखते हुए मेरा ये मानना है कि शिक्षक चाहे तो बच्चों में सोई हुई प्रतिभा को

जगाकर उन्हें आगे बढ़ने में मदद कर सकता है।

मेरी क्लास का ही एक छात्र अमित बेहद शरारती था। पूरे बच्चे व टीचर्स यहाँ तक कि पैरेन्ट्स भी उससे परेशान थे। सजा देने या डाँट का असर नहीं पड़ता। जब भी मैं पढ़ाती तब देखती कि वो कॉपी में कुछ न कुछ कलाकारी करता रहता। एक दिन उठकर मैंने उसकी कॉपी देखी बेहद सुन्दर स्केच बनाया हुआ था। मैंने डाँटने की बजाय उसे शाबासी देते हुए कहा– अमित तुम तो बहुत अच्छी ड्राईंग बनाते हो। तुमने पहले क्यों नहीं बताया। मैंने उसको स्कूल की पर्यावरण व मोगली उत्सव की प्रतियोगिता में चित्र बनाने की बात कही। उस दिन वो बेहद खुश हुआ। बस मेरी कोशिश रंग लाई। शैतानी के लिए पूरे स्कूल में प्रसिद्ध अमित अब पेन्टिंग्स में अपनी पहचान बना चुका था। धीरे-धीरे उसके व्यवहार में भी बदलाव आया। पढ़ाई में भी वो रुचि लेने लगा। ऐसी बातें जताती हैं कि टीचर्स को अपना धैर्य, आपा न खोकर बच्चों की खास तौर पर समस्यामूलक बच्चों की रुचियों को ढूँढ़कर उनमें परिवर्तन की कोशिश करनी चाहिए तो मनोवैज्ञानिक तौर पर ऐसे बच्चों की प्रतिभा को भी विकसित किया जा सकता है।

यही हाल एक और छात्र शुभम का भी रहा। वो पढ़ाई में तो अच्छा था। पर क्लास में दूसरे बच्चों को डिस्टर्ब करता था। डाँटने का उस पर असर नहीं होता था। ऐसे में उसे क्लास का सैकण्ड मॉनीटर बना दिया। बोल दिया कि जो भी बच्चे बात करें या शैतानी हर पीरियेड में ऐसे बच्चों के नाम मुझे लिखकर देना। बस उस दिन से वो अपनी शैतानी भूल कर दूसरे बच्चों की मॉनीटरिंग करने लगा। बच्चों को नई दिशा देकर उनको सुधारने की एक शिक्षक ही कोशिश करें तो निश्चित ही उसे सफलता अवश्य मिल सकती है।

एक शिक्षक को विषय अध्यापन में भी दिक्कत आ सकती है। यही हाल विगत वर्ष कक्षा 11वीं के कला संकाय के हिन्दी विषय अध्यापन में हुआ। हिन्दी के पीरियेड में बच्चों की रुचि कम ही रहती। कुछ बच्चे प्रायः कहते मैडम हिन्दी तो सरल है हम घर में ही तैयार कर लेंगे। ग्यारहवीं के बच्चों का हिन्दी उच्चारण अशुद्ध, लेखन भी अशुद्ध देख मुझे क्षोभ होता। मैंने उनमें रुचि जगाने हेतु हरिशंकर परसाईं जी का व्यंग्य ''भोलाराम का जीव'' का विद्यार्थियों से ही नाटक तैयार करने को कहा। बस फिर क्या था। मेरी कोशिश काम आई। बच्चों ने स्वयं संवाद लिखे। क्लास में पात्र गढ़कर बड़े सहज ढंग से नाटक को अभिनीत भी किया। उसके बाद उनकी रुचि हिन्दी विषय में जागी। वार्षिक उत्सव में उनके नाटक को पुरस्कार भी मिला। शिक्षक चाहे तो विषय को सरस, रोचक बनाकर छात्रों में रुचि जगा सकता है।

कक्षा में बच्चों को प्रेरित करते हुए शिक्षक का ये कर्तव्य बनता है कि वो छात्र-छात्राओं में भेदभाव न करें। पक्षपात न करें। वरना बच्चों में हीन-भावना आ सकती है। साथ ही पैरेन्ट्स मीटिंग में भी हमें बच्चों के माता-पिता को उनके हुनर, हॉबीज को प्रोत्साहन देने की बात जरूर करनी चाहिए। हमारी एक छोटी सी कोशिश, प्रयास उन नौनिहालों को एक नई दिशा प्रदान कर सकता है। उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व को, जीवन को बदल सकता है।

मेरे शिक्षक बनने के पीछे भी मेरे एक गुरु की प्रेरणा रही है। बीकानेर के ही प्राइमरी स्कूल के ही हेडमास्टर श्रद्धेय श्री बी.के. व्यास जी ने पढ़ाई के साथ-साथ तकली से सूत कातने से लेकर, क्राफ्ट, ड्राईंग, पेन्टिंग, सुलेख, खेलकूद के साथ लेखन के लिए हमेशा मुझे प्रोत्साहित किया। खेल-खेल में एक बार कुर्सी पर बैठकर टीचर बनकर क्लास को पढ़ाने पर उनके द्वारा डाँट तो पड़ी पर साथ ही टीचर बनने का सपना मैंने बचपन में देखा वो उनकी प्रेरणा से ही सन् 1982 में म.प्र. स्कूल शिक्षा विभाग में संस्कृत शिक्षक बनकर पूरा हो गया। शिक्षकों की प्रेरणा ही छात्रों के लिए एक अनमोल धरोहर होती है। जिसे वो जीवन भर सँभाल कर सहेज कर रखते हैं।

पर आज के दौर में गुरु-शिष्य के रिश्ते बदल रहे हैं। विद्यालय व्यवसाय के केन्द्र बन रहे हैं। फिर भी शिक्षकों का ये पूरा कर्तव्य बन जाता है कि वो बच्चों को किताबी ज्ञान के साथ-साथ उन्हें व्यावहारिक ज्ञान भी देने की कोशिश करें। देखा जाए तो आज के शिक्षकों के पास पढ़ाने के अलावा ढेरों दूसरे काम भी हैं। फिर भी इस कम्प्यूटर युग में आज की बाल-पीढ़ी भी बेहद प्रतिभाशाली व महत्त्वाकांक्षी हैं। जो पुरानी पीढ़ी से कहीं ज्यादा चतुर व हर क्षेत्र में आगे हैं। आज की बाल-पीढ़ी बेहद प्रतिभावान हैं बस जरूरत है शिक्षकों द्वारा उन्हें प्रेरित कर आगे बढ़ाने की मौका देने की। हमारी कोशिश से हो सकता है कोई छात्र आगे जाकर एक नामी खिलाड़ी बन जाए तो कोई गायक या पेन्टर या लेखक या अभिनेता। क्योंकि शिक्षक ही छात्रों का भविष्य निर्माण कर उनके लिए नई राह गढ़ सकता है।

–अध्यापिका
राजा भोज शा.उ.मा. विद्यालय, भोपाल

प्रकृति की रक्षा करना धर्म

प्रकृति प्राणीमात्र का जीवन है। इसलिए इसका रक्षण करना हमारा कर्तव्य ही नहीं, परम धर्म है। जबसे हमने प्रकृति के साथ छेड़छाड़ कर उसका अंधाधुंध दोहन आरम्भ किया है, तब से वह समाज पर कुपित है तथा मौसम ने भी अपना विपरीत, विनाशक और उग्र रूप धारण कर लिया है। यही कारण है कि जहाँ हमारे तीन मौसम और छः ऋतुओं का समय-चक्र निश्चित था, वह सब परिवर्तित हो गया। इसीलिए अतिवृष्टि, अनावृष्टि, भीषण गर्मी या प्राकृतिक प्रकोप से कई प्रकार की हानियाँ होती रहती हैं, जिनका अनुमान लगाना भारतीय मौसम विभाग के वैज्ञानिकों के लिए मुश्किल हो रहा है।

इन स्थितियों के बारे में हम गंभीर चिन्तन करें तथा जंगल, जल, जमीन और जीवों को बचाने का दृढ़ संकल्प लें, तब ही हमारी प्रकृति सुरक्षित रह सकती है।

–परबत सिंह राठौड़, व.अ.
रा.उ.मा.वि., शिवगंज (सिरोही)

औपचारिक शिक्षा की तैयारी

पूर्व प्राथमिक शिक्षा : एक महत्त्वपूर्ण आयाम

❑ अनिल शर्मा

शिशु शिक्षा या पूर्व प्राथमिक शिक्षा से आशय 6 से 14 आयु वर्ग से पूर्व की आयु वर्ग की शिक्षा से है। जिसमें 0-6 वर्ष के बालक-बालिका को खेल-खेल में प्राथमिक शिक्षा के लिए तैयार किया जाता है। 0-6 आयु वर्ग के बच्चों को संविधान की धारा 21 के प्रावधानों से बाहर रखा गया है। साथ ही पूर्व प्राथमिक शिक्षा का सीधा सम्बन्ध बच्चों के स्कूल में नामांकन और शिक्षण के परिणामों से है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था के लिए शिक्षा उपलब्ध कराने के लिहाज से केवल यही आवश्यक नहीं है कि इस उद्देश्य के लिए धन आवंटित किया जाये बल्कि विभिन्न प्रकार की रणनीतियाँ बनाकर गुणवत्ता के पाँच बुनियादी आयामों को सुनिश्चित किया जाये– विकासमूलक दृष्टिकोण से उपयुक्त पाठ्यचर्या, प्रशिक्षित और उपयुक्त वेतन प्राप्त शिक्षक, उपयुक्त शिक्षक विद्यार्थी अनुपात, बच्चों की आवश्यकताओं के अनुकूल साधन तथा ऐसी निरीक्षण विधि जो उत्साहवर्द्धक हो साथ ही विकेन्द्रीकरण, लचीलेपन और संदर्भपरकता की आवश्यकता है। इसके साथ ही उपयुक्त मानक व निर्देशक सिद्धान्त विकसित किये जावें और नियामक ढाँचा लागू हो जिससे बच्चों के विकास में कोई भी समझौता न करना पड़े।

एन.सी.एफ. 2005 के अनुसार पूर्व प्राथमिक शिक्षा 0-6 वर्ष की उम्र का समय बहुत ही संवेदनशील और निर्णायक होता है, जब जीवनभर के विकास के आधार और समस्त संभावनाओं के द्वार खुलते हैं। एक बालक-बालिका के मस्तिष्क का 90 प्रतिशत से ज्यादा विकास 5 वर्ष की आयु तक ही हो जाता है। इस दृष्टि से यह आयु वर्ग सबसे संवेदनशील कहा जाता है। अगर इस आयु में (0-6) सहयोग न मिले या उपेक्षा बरती जाए तो नकारात्मक परिणाम हो सकते हैं, पूर्व प्राथमिक शिक्षा का उद्देश्य है कि छोटे-छोटे बच्चों की उचित देखभाल हो, उनके सर्वांगीण विकास के लिए पर्याप्त अवसर और अनुभव दिये जावें। सर्वांगीण विकास में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक विकास एवं प्राथमिक विद्यालय के लिए तैयारी शामिल है।

एक समग्र और सर्वांगीण परिप्रेक्ष्य में देखें तो हम पाते हैं कि बच्चों की स्वास्थ्य एवं पोषण की जरूरतें उनके मनोवैज्ञानिक-सामाजिक और शैक्षणिक विकास से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई हैं। बच्चों में सीखने की और अपने आसपास की दुनिया को समझने की स्वाभाविक इच्छा होती है इसलिए शुरुआती वर्षों में अधिगम बच्चों की अभिरुचियों और बच्चों के अनुभवों में संदर्भित होना चाहिए। बच्चों को कुछ करने व खुलकर अपने आपको अभिव्यक्त करने के अवसर प्रदान करना व सामाजिक सम्बन्धों में रचाबसा वातावरण उपलब्ध करवाना जिससे उन्हें स्नेह, संरक्षण और विश्वास की अनुभूति हो। खेलकूद संगीत, कलाओं तथा अन्य गतिविधियाँ, जो स्थानीय सामग्री, कला और ज्ञान पर आधारित हो, का निर्माण किया जाना चाहिए। प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षा का माध्यम उसके बोलचाल की भाषा ही हो।

शाला पूर्व शिक्षा की आवश्यकता : 1. माता-पिता की व्यस्तता तथा जीवन शैली में बदलाव। 2. संयुक्त परिवार प्रथा का ह्रास होना व पृथक परिवार की बहुलता। 3. भौतिक सुविधाओं की उपलब्धता जैसे– खेल, पुस्तकें, खिलौने आदि एक ही स्थान पर मिल जाते हैं जो बालक-बालिका के विकास में मददगार होते हैं। 4. परिवार में व्यवस्थित एक क्रमबद्ध योजना का अभाव जिससे विकास कौशलों के विकास में बाधा। 5. माता-पिता के अनपढ़ होने से बालक-बालिका के साथ अन्तःक्रिया न करवाना। 6. माता-पिता के पास विकास व पालन-पोषण की जानकारी का अभाव। 7. ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर परिवार पलायन ने भी शालापूर्व शिक्षा की आवश्यकता को उभारा है।

वर्तमान में पूर्व प्राथमिक शिक्षा : राजस्थान में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए कुछ विद्यालयों में कक्षा एक से पहले शिशु कक्षाओं का संचालन किया जा रहा है लेकिन एनसीएफ 2005 में पूर्व प्राथमिक कक्षा के जिस स्वरूप की चर्चा की गई व उस रूप में इन शिशु कक्षाओं में कार्य नहीं हुआ है। अतः पूर्व प्राथमिक शिक्षा का उत्तरदायित्व महिला एवं बाल विकास विभाग के समेकित बाल विकास कार्यक्रम के अन्तर्गत ही पाँच कार्यों में से एक कार्यक्रम के रूप में चल रहा है। राजस्थान में 60,000 आंगनवाड़ी संचालित हैं जहाँ पूर्व प्राथमिक शिक्षा का संचालन किया जा रहा है। पूर्व प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए राजकीय प्राथमिक उ.प्रा.वि. परिसर में इन आंगनवाड़ियों को स्थानान्तरित किया गया है। 45000 आंगनवाड़ियाँ विद्यालय परिसर या इनके निकटस्थ स्थान पर संचालित हैं। 12000 आंगनवाड़ियाँ विद्यालय परिसर में ही संचालित हैं।

वर्तमान में आंगनवाड़ियों में ईसीसीई पर उतना ध्यान नहीं है जितना होना चाहिए क्योंकि आंगनवाड़ियों में अन्य कार्यों जैसे– टीकाकरण, पोषाहार, जननी सुरक्षा आदि पर अधिक ध्यान दिया जाता है। इस तथ्य को आईसीडीएस विभाग भी स्वीकार करता है। सत्र 2012-13 में सतत एवं व्यापक मूल्यांकन हेतु 3059 विद्यालयों का चयन किया गया है और इस क्रम में इन विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु 3059 आंगनवाड़ियों को चुना गया है।

आंगनवाड़ियों की वर्तमान स्थिति व पूर्व प्राथमिक शिक्षा के लिए इनका सुदृढ़ीकरण : आंगनवाड़ियों के सुदृढ़ीकरण हेतु एसएसए व आईसीडीएस विभाग मिलकर योजना बना रहे हैं। आंगनवाड़ी में पूर्व प्राथमिक शिक्षा के कमजोर रहने या प्रभावी संचालन न होने के पीछे निम्न कारण रहे हैं– 1. अधिकांश आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं का शैक्षिक पक्ष कमजोर होना। 2. आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को पूर्व प्राथमिक शिक्षा में प्रशिक्षित न करना। 3. आईसीडीएस की मॉनिटरिंग में ईसीसीई पर ध्यान नहीं देना। 4. आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं द्वारा समाज से ईसीसीई पर संवाद नहीं रखना। 5. आंगनवाड़ी कार्यकर्ता का राजनैतिक हस्तक्षेप रखना। 6. संज्ञानात्मक विकास के लिए आंगनवाड़ी केन्द्र पर टीएलएम का अभाव। 7. आंगनवाड़ी केन्द्रों पर घटता नामांकन। 8. आदिवासी बाहुल्य जिलों में आंगनवाड़ियों का संचालन योग्य कार्यकर्ता के अभाव में नहीं हो पा रहा है।

उक्त कारणों की समीक्षा कर वर्तमान में प्रमुख शासन सचिव, आईसीडीएस व प्रमुख शासन सचिव, शिक्षा की संयुक्त बैठकों में पुनः आंगनवाड़ी केन्द्रों को प्रभावी बनाने हेतु निम्न कदम उठाये गये हैं– 1. 3059 एडब्लूसी पर कार्यरत आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को ईसीसीई का 6 दिवसीय प्रशिक्षण दिया जायेगा जो सितम्बर माह 2012 में प्रस्तावित है। 2. 3059 आंगनवाड़ी केन्द्रों पर सुपरविजन करने वाले महिला पर्यवेक्षकों को भी ईसीसीई का 6 दिवसीय प्रशिक्षण दिया जायेगा। 3. 3059 आंगनवाड़ी केन्द्रों का सुदृढ़ीकरण करने हेतु एसएसए द्वारा रुपये 2400/- का एक टीएलएम किट दिया जाएगा। 4. 3059 आंगनवाड़ी केन्द्रों पर आईसीडीएस विभाग द्वारा रुपये 1000/- का एक संज्ञानात्मक किट दिया जाएगा। 5. आंगनवाड़ी केन्द्र पर योग्य कार्यकर्ता न मिलने पर विशेष रूप से ट्राईबल जिलों में एनटीटी प्रशिक्षित शिक्षक लगाये जाएँगे जिनका चयन आईसीडीएस करेगा।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा का संचालन आंगनवाड़ी केन्द्र पर निम्नानुसार होगा– 0-6 आयु वर्ग के बालक-बालिकाओं की गतिविधियों को दो भागों में विभक्त किया गया है– (1) 0-3 आयु वर्ग – संचालन परिवार के माध्यम से (अन्तःक्रिया का वातावरण, पालन-पोषण, देखभाल, स्वास्थ्य, स्वच्छता, संस्कार, भाषा सीखता है।) (2) 3-6 आयु वर्ग – शाला पूर्व शिक्षा कार्यक्रम आंगनवाड़ी कार्यकर्ता द्वारा क्रियान्वित किया जाएगा।

पूर्व प्राथमिक शिक्षा में 3-6 आयु वर्ग के बच्चों पर विशेष गतिविधि आधारित शिक्षण करवाया जाता है क्योंकि इस आयु वर्ग के बच्चे– • अधिक समय एक स्थान पर नहीं बैठ सकते हैं और न ही एक क्रिया को लम्बे समय तक कर सकते हैं। • ये आत्मकेन्द्रित प्रवृत्ति के होते हैं। अतः हर वस्तु को अपने नजरिये से देखते हैं। • प्रतीकों एवं प्रत्यक्ष वस्तुओं और अनुभवों से सीखते हैं। • छोटे समूह में सक्रिय रहते हैं। अन्जान व्यक्ति से दूरी बनाये रखते हैं। • सहज स्वाभाविक अभिव्यक्ति देते हैं। • पुनरावृत्ति पसंद करते हैं। लय, ताल, संगीत के प्रति स्वाभाविक प्रतिक्रिया देते हैं। • सीखने की जिज्ञासा व उत्सुकता होती है। • दबाव में कार्य नहीं करते।

बच्चों की उक्त विशेषताओं को ध्यान में रखकर पूर्व प्राथमिक शिक्षा का पाठ्यक्रम निर्माण किया जाता है जिसमें निम्न कौशलों एवं क्षमता को प्राप्त करने का उद्देश्य रखा गया है–

1. संज्ञानात्मक विकास– 1.1 इन्द्रिय विकास : 1. दृश्य विभेदीकरण, 2. ध्वनि विभेदीकरण, 3. स्पर्श विभेदीकरण, 4. स्वादेन्द्रीय, 5. घ्राणेन्द्रीय।

प्रमुख अवधारणाओं का विकास– 1.2. अवलोकन एवं स्मरण, 1.3. वर्गीकरण, 1.4. क्रमिक चिन्तन, 1.5. समस्या समाधान और तर्कपूर्ण चिन्तन, 2.1. रंग की अवधारणा, 2.2. आकृति की अवधारणा, 2.3. अंक पूर्व, 2.4. संख्या बोध, 2.5. स्थान की अवधारणा, 2.6. समय, ताप की अवधारणा, 2.7. पर्यावरण की अवधारणा, 2.8. सब्जी, फल, पेड़, पौधे, 2.9. पानी, हवा, आकाश, पृथ्वी, मौसम, 2.10. सामाजिक पर्यावरण– परिवार, पड़ौसी, यातायात के साधन, हमारे मददगार त्यौहार।

2. शारीरिक विकास– (1) **मांसपेशीय विकास–** स्थूल मांसपेशीय विकास– चलना, संतुलन बनाना, दौड़ना, कूदना, खिसकना, रंगना, लुढ़कना, झूलना, उछलना, चढ़ना, उतरना, लयात्मक क्रियाएँ, गेंद को फेंकना, पकड़ना, ठोकर मारना। (2) **सूक्ष्म मांसपेशीय विकास–** 1. पिरोना, 2. फाड़ना, काटना, चिपकाना। 3. चित्रकारी, रंग भरना। 4. छपाई। 5. कागज मोड़ना। 6. मिट्टी से कार्य करना। 7. छाँटना, नमूने बनाना।

3. भाषा विकास– (1) सुनने के कौशल का विकास– 1. ध्वनि विभेद, 2. ध्वनि विस्तार, ध्यान केन्द्रण का विस्तार। 3. सुनकर अर्थ बोध। **(2) शब्द भण्डार का विकास–** 1. शरीर से सम्बन्धित अंगों का भण्डार। 2. घर से सम्बन्धित शब्द भण्डार। 3. पर्यावरण से सम्बन्धित शब्द भण्डार। **(3) मौखिक अभिव्यक्ति का विकास–** 1. वार्तालाप, 2. कहानी कथन, 3. अभिनय कठपुतली से खेल, 4. चित्र पठन, 5. सृजनात्मक अभिव्यक्ति। **(4) पढ़ने की तैयारी–** 1. ध्वनि विभेदीकरण, 2. दृश्य विभेदीकरण, 3. सुनने व देखने में साहचर्य, 4. दिशा बोध। **(5) लिखने की तैयारी–** 1. सीधे लाइन खींचना, 2. बिन्दुओं को मिलाना, 3. ट्रेस करना, 4. नकल करके आकार बनाना, 5. नमूने बनाना।

उक्त दक्षताओं और कौशलों को प्राप्त करने के पश्चात ही बालक-बालिकाएँ अंग संचालन, स्वच्छता, आस-पड़ौस व पर्यावरण की जानकारी से अपने आपको औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार करता है इसलिए ही पूर्व प्राथमिक शिक्षा को स्कूल रैडीनेस कार्यक्रम भी कहते हैं।

वर्तमान में औपचारिक शिक्षा कक्षा 1 से प्रारम्भ होती है। जहाँ पूर्व प्राथमिक शिक्षा संचालित नहीं है। वहाँ के विद्यालयों में कक्षा एक का नामांकन घटने का प्रमुख कारण यही है कि विद्यालय में प्रवेश की आयु 6 वर्ष रखी गई है। जब तक अभिभावक बालक-बालिकाओं को घर पर बिठाये नहीं रख सकते। अतः निजी शिक्षण संस्थाओं में भेज देते हैं।

सरकारी विद्यालय में औपचारिक शिक्षा प्राप्त कर रहे बच्चों का शिक्षण स्तर निजी विद्यालय के बच्चों की तुलना में निम्न स्तर का पाया जाता है क्योंकि निजी विद्यालय के कक्षा 1 में पढ़ने वाला बालक या बालिका 3 वर्ष से पूर्व प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करता है जिससे उसके शारीरिक, संज्ञानात्मक व भाषा विकास में लाभ मिल जाता है। यही कारण है कि सरकारी विद्यालय का बालक निजी विद्यालय के कक्षा 1 में पढ़ने वाले बालक की तुलना में कमजोर मिलता है। अतः यह एक माँग है कि सरकारी विद्यालयों में भी पूर्व प्राथमिक कक्षाओं का संचालन किया जावे। इससे औपचारिक शिक्षा को कौशल व दक्षताओंयुक्त बालक-बालिका प्राप्त होंगे जो उनके आगे सिखाये जाने वाले कौशलों व दक्षताओं को आधार प्रदान कर सकें। अतः औपचारिक शिक्षा के लिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा एक महत्वपूर्ण आयाम है जिसका सभी विद्यालयों में संचालन अति आवश्यक है।

–सहायक निदेशक (सीसीई व ईसीसीई)
राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद, जयपुर

ठहराव निश्चयन कैसे?

❑ देवेन्द्र पण्ड्या

अच्छी बारिश होने के बावजूद भी तालाबों में पानी जमा नहीं रहना चिन्ता का विषय बन जाता है। कारण चाहे कुछ भी हो सकते हैं। महत्वपूर्ण बात है हर हालत में तालाब में पानी का बने रहना। इसी प्रकार एक कुशल वक्ता एक बड़े जन समूह को अपनी बात को सुनने एवं रोकने हेतु बाँध सकता है यदि उसका ओजस्वी प्रवचन विषय केन्द्रित, समयगत एवं समूह की रुचियों एवं क्षमताओं के अनुरूप हो। कमोबेश यही स्थिति हमारे प्रारम्भिक शिक्षा के विद्यालयों में शिक्षक एवं उसके शिक्षण के लिए भी अपेक्षित है। भारत सरकार के फ्लेगशिप (Flag Ship) कार्यक्रम **सर्वशिक्षा अभियान** की एक अनूठी पहल के बावजूद भी विद्यालयों में नामांकन के अनुरूप ठहराव नहीं रहने की समस्या बनी हुई है। यह एक अनुचिंतन का विषय है। दूसरी ओर आनुभविक स्थितियाँ समस्या के समाधान का हमें अभिज्ञान कराती हैं। ये हमें सावचेत भी करती हैं। निःसंदेह हमारे विद्यालयों में पहले से अपेक्षाकृत बहुत कुछ ठीक होता जा रहा है परन्तु इच्छा शक्ति एवं रुचिकर शिक्षण चाहे इनका अभाव किसी भी अंश तक क्यों न हो पर बना हुआ है। वस्तुतः विद्यालय में शिक्षण ही शिक्षार्थी के ठहराव का नियामक है। अतः शिक्षण को उद्देश्यपरक बनाने हेतु यह आवश्यक हो जाता है कि हम शिक्षण से जुड़े आवश्यक मनोवैज्ञानिक पक्षों को ध्यान में रखें।

जब कभी भी शिक्षण की बात होती है तब स्वाभाविक रूप से मुख्यतः तीन प्रश्न हमारे सामने खड़े होते हैं वे क्रमशः निम्न प्रकार हैं। पहला– हमें किसको पढ़ाना है? दूसरा– हमें क्या पढ़ाना है? तीसरा– शिक्षण किस परिवेश में करना है? निःसन्देह ये तीनों प्रश्न शिक्षा एवं शिक्षण के आधारभूत पक्ष से जुड़े हुए हैं। ये तीनों ही पक्ष ऐसे हैं जिनको पूर्णतया समझे एवं अनुभव किए बिना बाल केन्द्रित शिक्षण की सफलता कल्पना ही रह जाती है।

उपर्युक्त तीनों ही प्रश्नों का उत्तर (Three-C) के रूप में समझा जा सकता है–

Three-C

C - One Child	C - Two Curriculum and Syllabus	C - Three Circumstances (Environmental Circumstances)
बालक	पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम	परिवेशीय स्थितियाँ

1. बालक– C-One (The Nature of the Child)– यह ध्यातव्य है कि बालकेन्द्रित शिक्षण व्यवस्था में समूची शिक्षण क्रिया का केन्द्र बिन्दु है 'बालक' जिसको पढ़ाना है, तो आवश्यक हो जाता है कि हम पहले उसको पढ़ लें, जान लें, उसकी प्रकृति (The Nature of the Child) को भलीभाँति समझ लें।

मनुष्य मात्र की प्रकृति होती है तथा यह बात शिक्षक के आराध्य 'बालक' पर भी समान रूप से लागू होती है कि– बालक उसी वस्तु को प्राप्त करना चाहता है जो उसे अधिक सुन्दर लगती हो, उसी गतिविधि में भाग लेगा जिसमें उसे सुखद अनुभूति होती हो तथा उन्हीं साथियों के साथ रहना चाहेगा जिनके साथ रहकर आनन्द मिलता हो। एकरसता (Monotonous) की स्थितियों में वह रहना नहीं चाहता। संक्षेप में परिवर्तित, सुन्दर व सुखद स्थितियों में बालक के लिए अनुकूलन, अनुकरण एवं अधिगम की स्थितियाँ बनती हैं। अतः एक अच्छे शिक्षक को ऐसी स्थितियों का विद्यालय एवं कक्षाकक्ष में सृजन करना होगा। यह बात इसलिए भी ज्यादा महत्वपूर्ण है कि बालक स्वयं भी विकास की प्रक्रिया से गुजर रहा होता है तथा उसकी विकास की प्रक्रिया के साथ उसकी रुचियाँ उसकी अधिगम क्षमताएँ बदलती रहती हैं। अतः हर बार शिक्षण प्रक्रियाओं में बदलाव लाना नितान्त आवश्यक है। यह भी ध्यातव्य है कि बालक में सृजनात्मक एवं रचनात्मक प्रवृत्ति भी होती है। भले ही यह अनुपात में कक्षा के बालकों में कम ज्यादा हो सकती है। इतना ही नहीं इन सृजनात्मक एवं रचनात्मक (Creative and Constructive) प्रवृत्ति के साथ बालक में विध्वंसक (Destructive) प्रवृत्ति भी विद्यमान रहती है। अतः एक सफल शिक्षक के लिए बालक की प्रकृति को प्रारम्भ से ही समझ कर आगे की चरणबद्ध (Step by Step) क्रिया अपनानी होती है। हमें प्रारम्भ से ही बालक में सृजनात्मक व निर्माणात्मक पक्ष को सुदृढ़ करना है।

2. पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम C-Two (The Nature of the Curriculum) – पाठ्यचर्या की प्रकृति भी गत्यात्मक होती है (The nature of the curriculum is dynamic)। वही पाठ्यचर्या सबसे बढ़िया होती है जो समाज की आवश्यकताओं आकांक्षाओं के अनुरूप हो अन्यथा उसकी प्रासंगिकता स्वतः कम होती जाएगी। अतः महत्वपूर्ण बात यह है कि शैक्षिक उद्देश्यपरक विषयवस्तु में, शिक्षण प्रक्रिया में तथा हमारी कार्य पद्धति में परिवर्तन व विकास निरन्तर आवश्यक है। यह बात इस ओर संकेत करती है कि हमें अपनी समूची शिक्षण अधिगम प्रक्रियाओं को रुचिकर व सुखद बनाना होगा।

3. अन्तिम बात है परिवेश अथवा सामाजिक स्थितियाँ जिसमें बालक रहता है, खेलता है, कूदता है तथा उसी में ही बड़ा होता है आदि में बदलाव के साथ बालक में बदलाव व परिवर्तन स्वाभाविक है। चूँकि बालक विकासशील अवस्था में होता है अतः उसकी रुचियों, रुझानों, क्षमताओं में सहज परिवर्तन के साथ शिक्षण विधाओं में तथा पाठ्यक्रम में भी गत्यात्मकता होनी आवश्यक है।

अस्तु उपर्युक्त तीनों की प्रकृति (Nature) पर गहराई से विचार करने पर एक महत्वपूर्ण बात उभर कर सामने आती है जो निम्न प्रकार है–

स्थानीय परिवेशगत स्थितियों के अनुरूप समूचे विद्यालय में सुखद वातावरण का सृजन करते हुए विषयगत शिक्षण के समय आवश्यक रुचिकर एवं नवाचारिक सहायक सामग्री के प्रस्तुतीकरण द्वारा बालक को कक्षा-कक्ष एवं विद्यालय में बनाए रखना कहीं अधिक सरल व सहज हो सकता है। यही बालक के विद्यालय में ठहराव को सुनिश्चित करने वाली स्थितियाँ हैं और इन्हीं स्थितियों के सृजन से अधिगम को भी अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। संक्षेप में बालक के स्वभावगत एवं समयगत बदलते रुझानों के अनुरूप शिक्षण प्रक्रिया को प्रभावी बनाना ही रुचिकर शिक्षण है तथा यही नामांकन एवं ठहराव के सुनिश्चयन का आधार है, साथ ही एक अर्थ में यही निदानात्मक परीक्षण एवं उपचारात्मक शिक्षण का प्रथम सोपान है।

यही रुचिकर शिक्षण विद्यालय को आकर्षण का केन्द्र बनाता है, सुखमय आनंद की स्थितियों का सृजन करता है, प्रेरणा और प्रोत्साहन का जनक है, सीखने की ओर प्रयाण के लिए प्रेरित करता है, समझने का आधार है, भविष्य का दर्शन कराता है, स्वाध्याय का मार्ग प्रशस्त करता है, संवेदना का प्रस्फुटन करता है, स्पंदन का संचार करता है, शिक्षक को सम्बल देता है तथा शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों को ही अनुतोष प्रदान करता है। अतः यही ठहराव का यथेष्ठ निश्चायक है।

–प्रधानाचार्य, सिविल लाइन्स, गढ़ी, जिला- बाँसवाड़ा

1. कक्षा 6 व 7 के सभी विषय व कक्षा 8 के अंग्रेजी विषय की परीक्षावार पाठ्यक्रम व अंक विभाजन जारी करने बाबत्। □ 2. कक्षा 6 व 7 के सभी विषय व कक्षा 8 के अंग्रेजी विषय की परीक्षावार पाठ्यक्रम व अंक विभाजन के सम्बन्ध में। □ 3. वरिष्ठ अध्यापक (ग्रेड-II) पुरुष/महिला के राज्यस्तरीय वरिष्ठता सूची के नामांकन इत्यादि संशोधन प्रकरण तय समय सीमा में निपटाये जावें।

1. कक्षा 6 व 7 के सभी विषय व कक्षा 8 के अंग्रेजी विषय की परीक्षावार पाठ्यक्रम व अंक विभाजन जारी करने बाबत्।

• कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एबी/कालांश/3521/12-13 दिनांक : 16.7.12 • विषय : कक्षा 6 व 7 के सभी विषय व कक्षा 8 के अंग्रेजी विषय की परीक्षावार पाठ्यक्रम व अंक विभाजन जारी करने बाबत्। • प्रसंग : निदेशक एस.आई.ई.आर.टी. उदयपुर का पत्रांक रा.रा.शै.अ.प्र.स./उदय/वि-9/प्र-1/फा-8382/12-13 दिनांक 03.7.12 • उपर्युक्त विषयान्तर्गत कक्षा 6 व 7 के सभी विषय एवं कक्षा 8 के अंग्रेजी विषय की परीक्षावार पाठ्यक्रम व अंक विभाजन इस पत्र के साथ जारी किए जा रहे हैं। जिन्हें आप अपने अधीनस्थ समस्त विद्यालयों के संस्था प्रधानों को पालनार्थ जारी करावें। • ह., अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन)।

2. कक्षा 6 व 7 के सभी विषय व कक्षा 8 के अंग्रेजी विषय की परीक्षावार पाठ्यक्रम व अंक विभाजन के सम्बन्ध में।

• राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर, शिक्षाक्रम एवं मूल्यांकन विभाग-9 • क्रमांक : राराशैअप्रस-उदय/वि-9/प्र-1/फा 8382/12-13 दिनांक 3.7.12 • विषय : कक्षा 6 व 7 के सभी विषय व कक्षा 8 के अंग्रेजी विषय की परीक्षावार पाठ्यक्रम व अंक विभाजन के सम्बन्ध में। • प्रसंग : आपके पत्रांक शिविरा/प्रारं/शैक्षिक/एवी/कालांश/3521/2009/ दिनांक 8.4.12 • उपर्युक्त विषय एवं प्रसंगान्तर्गत निवेदन है कि राज्य में पाठ्यपुस्तकों के सम्बन्ध में कक्षा 6 व 7 हेतु निर्णयानुसार सत्र 2012-13 में लागू किए जाने वाली पाठ्यपुस्तकों का पाठ्यक्रमानुसार अंक विभाजन तैयार करने के लिए राज्य के सुझाव सम्मिलित किए जाने हेतु राज्य की डाइट के सी.एम.डी.ई. प्रभारियों को आमंत्रित कर कार्यशाला आयोजित की गई। आमंत्रित सदस्यों द्वारा तैयार प्रतिवेदन एवं कार्ययोजना संलग्न कर अनुमोदनार्थ प्रेषित है। ध्यातव्य है कि कक्षा 8 में अंग्रेजी विषय की नवीन पाठ्यपुस्तक लागू की जानी है। अतः कक्षा 8 के अंग्रेजी विषय का ही पाठ्यक्रम व अंक विभाजन प्रेषित किया जा रहा है। कक्षा 8 के अन्य विषयों का पाठ्यक्रम व अंक विभाजन पूर्ववत ही रहेगा कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा तथा कार्यानुभव का पाठ्यक्रम विभाजन व अंक विभाजन इसमें सम्मिलित नहीं है, क्योंकि इन विषयों का नया पाठ्यक्रम शीघ्र ही तैयार किया जाना प्रस्तावित है नया पाठ्यक्रम बनते ही तदनुसार इनका विभाजन व अंक विभाजन कर आपको प्रेषित कर दिया जाएगा। • ह., निदेशक, रा.रा.शै.अ.प्र.सं., उदयपुर।

कक्षा 6 के मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम व अंक विभाजन योजना (अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा हेतु)

कक्षा 6 के लिए विभिन्न विषयों की नवीन पाठ्यपुस्तकों के आधार पर परीक्षावार विषयवस्तु को अधिगम क्षेत्र/खण्ड/अध्यायवार अंक भार प्रदान किया गया। • अधिगम क्षेत्रों के अध्यायों को आधार मानकर अंकभार का निर्धारण किया गया है। • अर्द्धवार्षिक परीक्षा में कुल पाठ्यक्रम का 60% भाग रखा गया है। • वार्षिक परीक्षा में शेष 40% एवं अर्द्धवार्षिक पाठ्यक्रम को सम्मिलित करते हुए 100% पाठ्यक्रम के आधार पर मूल्यांकन किया जाना है। • वार्षिक परीक्षा के अंकभार में 30% अंकभार अर्द्धवार्षिक परीक्षा तक के पाठ्यक्रम पर रखा गया है। • अर्द्धवार्षिक परीक्षा के लिए कुल 70 (50 अंक की लिखित एवं 20 अंक का गतिविधि आधारित) एवं वार्षिक परीक्षा के लिए 100 (70 अंक की लिखित एवं 30 अंक का गतिविधि आधारित) अंक निर्धारित किये गये हैं। • अर्द्धवार्षिक लिखित परीक्षा 50 अंक एवं वार्षिक परीक्षा 70 अंक हेतु ही पाठ्यक्रम विभाजन दिया गया है। • अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा में गतिविधि आधारित मूल्यांकन निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर ही शिक्षक द्वारा किया जाना प्रस्तावित है। • प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय परख का आयोजन विद्यालय स्तर पर किया जाना प्रस्तावित है।

कक्षा 6 के मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम व अंक विभाजन योजना (अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा हेतु)
विषय - हिन्दी

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र	खण्ड	क्षेत्र	अर्द्धवार्षिक परीक्षा पूर्णांक 50			वार्षिक परीक्षा पूर्णांक 70		
				पाठ सं.	अंक भार	अधिगम क्षेत्र अंक भार	पाठ सं.	अंक भार	अधिगम क्षेत्र अंक भार
1.	पढ़ना	पद्य	व्याख्या एवं भावार्थ	1,4,7,10	11	28	1,4,7,10	4	37
							13, 16	10	
		गद्य	व्याख्या एवं भावार्थ	2,3,5,6,8,9	17		2,3,5,6,8,9	7	
							11,12,14,15,17	16	

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र	खण्ड	क्षेत्र	अर्द्धवार्षिक परीक्षा पूर्णांक 50			वार्षिक परीक्षा पूर्णांक 70		
				पाठ सं.	अंक भार	अधिगम क्षेत्र अंक भार	पाठ सं.	अंक भार	अधिगम क्षेत्र अंक भार
2.	लिखना	रचना	अपठित गद्यांश	–	4	12	अपठित गद्यांश	5	16
			पत्र लेखन	निजी/प्रार्थना पत्र	3		निजी/प्रार्थना पत्र	4	
			निबन्ध	वर्णन, घटना आदि	5		वर्णनात्मक/घटना/ काल्पनिक निबन्ध	7	
3.	व्यावहारिक व्याकरण	व्याकरण		संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, विलोम, पर्यायवाची, संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, तत्सम, युग्म शब्द, अशुद्धि, मुहावरे, कहावतें, एकल शब्द	10	10	संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, विलोम, पर्यायवाची, संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय तत्सम, युग्म शब्द, अशुद्धि, मुहावरे, कहावतें, एकल शब्द	17	17
			योग	–	50	50	–	70	70

Marks distribution according to Unit/Syllabus (Class-6)
Subject – English

S. No.	Learning Areas	Contents	Half Yearly	H.Y. Exam 50		Yearly 70	Total	Exami.
1.	GRAMMAR	*Grammar*	Units/Lesson contents	Marks	H.Y.	Units/Lesson contents	Marks	Yearly
		determiners	Lessons on 1 to 6 in Sun Beam	1		Complete Text Book	1	
		Connectives		1½			1	
		Tense (Correct Forms of the Verbs)		1			1	13
		Adjectives		1			1	
		Noun Phrase		1½				
		Passive Voice		1½	09		1½	
		Indirect Speech					1½	
		Preposition					1	
		Pronoun					1	
		Modals					1½	
		'IF' for open conditions Question Framing		1½			1½ 1	
		Vocabulary						
		Sounds		1			1	
		Opposites		1			1	

S. No.	Learning Areas	Contents	Half Yearly	H.Y. Exam 50		Yearly 70	Total	Exami.
		Homophones		1	06		1	07
		One Word		1			1	
		Word Formation		1			1	
		Correct Forms of the words					1	
		Antonyms & Synonyms		1			1	
		Total		**15**	**15**		**20**	**20**
2.	READING & WRITING	Passage for Comprehension (seen & unseen)		7	35		10	50
		Paragraph writing		7			10	
		story writing		7			10	
		Letter/Application writing		6			10	
		Reference Skills & Diary entry/ Notice/Message/ Brochure Writing		8			10	
		Total		**50**	**50**		**70**	**70**

NOTE :– 1. Paragraphs should be given with the help of points. 2. Story should be given with the help of outline. 3. Letter/ Application/Diary Entry should be given with help of clues.

कक्षा 6 के मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम व अंक विभाजन योजना (अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा हेतु)
विषय - संस्कृत

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र	क्षेत्र विवरण	अर्द्धवार्षिक परीक्षा पूर्णांक 50		वार्षिक परीक्षा पूर्णांक 70	
			पाठ क्रमांक (विषयवस्तु)	अंक भार	पाठ क्रमांक (विषयवस्तु)	अंक भार
1.	पढ़ना एवं लिखना	पाठ्यपुस्तक के आधार पर लघु प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखना	पाठ 1 से 9	6	पाठ 1 से 5	3
					पाठ 10 से 15	6
		पाठ्यपुस्तक के आधार पर हिन्दी प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में देना। (जीवन मूल्य, सारांश व केन्द्रीय भाव से सम्बन्धित प्रश्न)	पाठ 1 से 9	3	पाठ 1 से 9	1
					पाठ 10 से 15	3
		व्याकरण पाठ्यक्रमानुसार–				
		संज्ञा		1		1
		सर्वनाम		2		3
		विशेषण		1		1
		धातुरूप		2		3
		सन्धि		1		1

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र	क्षेत्र विवरण	अर्द्धवार्षिक परीक्षा पूर्णांक 50		वार्षिक परीक्षा पूर्णांक 70	
			पाठ क्रमांक (विषयवस्तु)	अंक भार	पाठ क्रमांक (विषयवस्तु)	अंक भार
2.	व्याकरण	प्रत्यय		1		1
		उपसर्ग		1		1
		समास		1		1
		कारक		1		1
		अव्यय		1		1
		संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद (गद्य)	1,2,3,4,5,7,8,9	9	अर्द्धवार्षिक तक का पाठ्यक्रम	4
					11, 12, 14	10
		संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद (पद्य)	6	3	अर्द्धवार्षिक तक का पाठ्यक्रम	1
					10, 13, 15	4
		हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद		3		3
3.	लिखना	संस्कृत में प्रार्थना पत्र		3		5
		संस्कृत में लघुरचना कहानी/निबन्ध		3		5
		श्लोक का केन्द्रीय भाव/सुक्ति व्याख्या		2		2
		कण्ठस्थ श्लोक का लेखन		2		3
		पठित गद्यांश पर प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में		4		6
		योग		**50**		**70**

कक्षा 6 के मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम व अंक विभाजन योजना (अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा हेतु)

विषय - गणित

क्र. सं.	खण्ड/अधिगम क्षेत्र	अध्याय सं.	अध्याय का नाम	अर्द्धवार्षिक परीक्षा पूर्णांक 50		वार्षिक परीक्षा पूर्णांक 70	
1.	अंक गणित	1	अपनी संख्याओं की जानकारी	5	22	2	38
		2	पूर्ण संख्याएं	5		2	
		3	संख्याओं के साथ खेलना	6		2	
		6	पूर्णांक	6		2	
		7	भिन्न	–		10	
		8	दशमलव	–		10	
		12	अनुपात व समानुपात	–		10	

क्र. सं.	खण्ड/अधिगम क्षेत्र	अध्याय सं.	अध्याय का नाम	अर्द्धवार्षिक परीक्षा पूर्णांक 50		वार्षिक परीक्षा पूर्णांक 70	
2.	बीजगणित	11	बीजगणित	6	6	3	3
3.	रेखागणित	4	आधारभूत ज्यामितीय अवधारणाएँ	5	22	2	29
		5	प्रारम्भिक आकारों को समझना	5		2	
		9	आंकड़ों का प्रबन्धन	6		3	
		10	क्षेत्रमिति	6		3	
		13	सममिति	–		9	
		14	प्रायोगिक ज्यामिति	–		10	
			योग	**50**	**50**	**70**	**70**

कक्षा 6 के मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम व अंक विभाजन योजना (अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा हेतु)

विषय - विज्ञान

क्र. सं.	खण्ड/अधिगम क्षेत्र	अध्याय सं.	अध्याय का नाम	अर्द्धवार्षिक परीक्षा पूर्णांक 50		वार्षिक परीक्षा पूर्णांक 70	
				अंक भार अध्यायवार	अधिगम क्षेत्र/खण्ड अंक भार	अंक भार अध्यायवार	अधिगम क्षेत्र/खण्ड अंक भार
1.	कृषि एवं जीव विज्ञान	1	भोजन : यह कहाँ से आता है।	5	20	1	20
		2	भोजन के घटक	5		1	
		3	तन्तु से वस्त्र तक	5		2	
		7	पौधों को जानिए	5		2	
		8	शरीर में गति	–		7	
		9	सजीव व उनके परिवेश	–		7	
2.	रसायन विज्ञान	4	वस्तुओं के समूह बनाना	5	10	6	20
		5	पदार्थों का पृथक्करण	5		7	
		6	हमारे चारों ओर के परिवर्तन	–		7	
3.	भौतिक विज्ञान	10	गति और दूरियों का मापन	5	15	5	20
		11	प्रकाश : छायाएँ एवं परिवर्तन	5		5	
		12	विद्युत तथा परिपथ	5		5	
		13	चुम्बकों द्वारा मनोरंजन	–		5	
4.	हमारा ब्रह्माण्ड एवं पर्यावरण	14	जल	2	05	3	10
		15	हमारे चारों ओर वायु	3		2	
		16	कचरा– संग्रहण एवं निपटान	–		5	
			योग	**50**	**50**	**70**	**70**

कक्षा 6 के मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम व अंक विभाजन योजना (अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा हेतु)
विषय - सामाजिक विज्ञान

क्र. सं.	विषयवस्तु (अधिगम क्षेत्र)	अध्याय सं.	अध्याय का नाम/संख्या	अर्द्धवार्षिक परीक्षा पूर्णांक 50		वार्षिक परीक्षा पूर्णांक 70	
				अंक भार अध्यायवार	अंक भार अधिगम क्षेत्र	अंक भार अध्यायवार	अंक भार अधिगम क्षेत्र
1.	व्यक्ति का सामाजिक परिवेश एवं आर्थिक विकास	1	हमारा परिवेश	4	9	2	16
		2	ग्रामीण जीवन एवं शहरीकरण	5		3	
		3	विकास के आधार पर सहकारिता एवं सामूहिकता	–		5	
		4	उपभोक्ता जागृति	–		6	
2.	व्यक्ति एवं जनहितकारी संस्थाएँ तथा जनतांत्रिक	5	पंचायती राज (स्वशासन ग्रामीण)	5	9	2	15
		6	नगरीय स्वशासन (स्वशासन शहरीकरण)	4		2	
		7	जिला प्रशासन	–		6	
		8	हमारे जिले की न्याय व्यवस्था	–		5	
3.	व्यक्ति एवं प्राकृतिक परिवेश	9	पृथ्वी के परिमण्डल	4	19	1	20
		10	भू-भूपटल संरचना एवं परिवर्तनवादी शक्तियाँ	5		1	
		11	ग्लोब-मानचित्र	5		2	
		12	हमारा राजस्थान	5		2	
		13	प्रगतिशील राजस्थान	–		8	
		14	राजस्थान के परिवहन के साधन	–		6	
4.	हमारी सभ्यता एवं संस्कृति	15	आइए ! अतीत को जानें	4	13	2	19
		16	आर्य सभ्यता एवं संस्कृति	5		2	
		17	हमारी प्राचीन जनपद व्यवस्था	4		2	
		18	प्राचीन भारत का गौरवशाली इतिहास	–		6	
		19	भारतीय संस्कृति और विश्व	–		7	
			योग	**50**	**50**	**70**	**70**

कक्षा 7 के मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम व अंक विभाजन योजना (अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा हेतु)

कक्षा 7 के लिए विभिन्न विषयों की नवीन पाठ्यपुस्तकों के आधार पर परीक्षावार विषयवस्तु को अधिगम क्षेत्र/खण्ड/अध्यायवार अंक भार प्रदान किया गया।

- अधिगम क्षेत्रों के अध्यायों को आधार मानकर अंकभार का निर्धारण किया गया है।
- अर्द्धवार्षिक परीक्षा में कुल पाठ्यक्रम का 60% भाग रखा गया है।
- वार्षिक परीक्षा में शेष 40% एवं अर्द्धवार्षिक पाठ्यक्रम को सम्मिलित करते हुए 100% पाठ्यक्रम के आधार पर मूल्यांकन किया जाना है।
- वार्षिक परीक्षा के अंकभार में 30% अंकभार अर्द्धवार्षिक परीक्षा तक के पाठ्यक्रम पर रखा गया है।

- अर्द्धवार्षिक परीक्षा के लिए कुल 70 (50 अंक की लिखित एवं 20 अंक का गतिविधि आधारित) एवं वार्षिक परीक्षा के लिए 100 (70 अंक की लिखित एवं 30 अंक का गतिविधि आधारित) अंक निर्धारित किये गये हैं।
- अर्द्धवार्षिक लिखित परीक्षा 50 अंक एवं वार्षिक परीक्षा 70 अंक हेतु ही पाठ्यक्रम विभाजन दिया गया है।
- अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा में गतिविधि आधारित मूल्यांकन निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर ही शिक्षक द्वारा किया जाना प्रस्तावित है।
- प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय परख का आयोजन विद्यालय स्तर पर किया जाना प्रस्तावित है।

कक्षा 7 के मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम व अंक विभाजन योजना (अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा हेतु)
विषय - हिन्दी

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र	खण्ड	क्षेत्र	अर्द्धवार्षिक परीक्षा पूर्णांक 50			वार्षिक परीक्षा पूर्णांक 70		
				पाठ सं.	अंक भार	अधिगम क्षेत्र अंक भार	पाठ सं.	अंक भार	अधिगम क्षेत्र अंक भार
1.	पढ़ना	पद्य	व्याख्या एवं भावार्थ	1,4,8,11	10	28	1,4,8,11	4	37
							13, 16, 20	9	
		गद्य	व्याख्या एवं भावार्थ	2,3,5,6,7,9, 10,12	18		2,3,5,6,7,9,10,12	7	
							14,15,17,18,19	17	
2.	लिखना	रचना	अपठित गद्यांश	–	4	12	अपठित गद्यांश	5	16
			पत्र लेखन	निजी/प्रार्थना पत्र	3		निजी/प्रार्थना पत्र	4	
			निबन्ध	वर्णनात्मक घटना आधारित	5		वर्णनात्मक घटना आधारित व काल्पनिक निबन्ध	7	
3.	व्यावहारिक व्याकरण	व्याकरण		संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, विलोम, पर्यायवाची, संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, तत्सम, युग्म शब्द, अशुद्धि, मुहावरे, कहावतें, एकल शब्द	10	10	संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, विशेषण, विलोम, पर्यायवाची, संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय तत्सम, युग्म शब्द, अशुद्धि, मुहावरे, कहावतें, एकल शब्द	17	17
			योग	–	50	50	–	70	70

Marks distribution according to Unit/Syllabus (Class-7)
Subject – English

S. No.	Learning Areas	Contents	Half Yearly	H.Y. Exam 50		Yearly 70	Total	Exami.
1.	GRAMMAR	*Grammar*	Units/Lesson contents	Marks	H.Y.	Units/Lesson contents	Marks	Yearly
		determiners	Lessons on 1 to 6 in Sun Beam	1		Complete Text Book	1	
		Connectives		1½			1	
		Tense (Correct Forms of the Verbs)		1½			1	

S. No.	Learning Areas	Contents	Half Yearly	H.Y. Exam 50		Yearly 70	Total	Exami.
		Adjectives		1			1	
		Noun Phrase		½				
		Passive Voice		1½			1½	
		Indirect Speech					1	
		Preposition		½	09		1½	13
		Pronoun					1	
		Modals					1	
		Question Framing		1½			1½	
		'IF' for open conditions					1½	
		Vocabulary						
		Sounds		1			1	
		Opposites Homophones		1 1			1 1	
		One Word		1	06		1	07
		Word Formation		1			1	
		Correct Forms of the words					1	
		Antonyms & Synonyms		1			1	
		Total		**15**	**15**		**20**	**20**
2.	READING & WRITING	Passage for Comprehension (seen & unseen)		7			10	
		Paragraph writing		7			10	
		story writing		7	35		10	50
		Letter/Application writing		6			10	
		Reference Skills & Diary entry/ Notice/Message/ Brochure Writing		8			10	
		Total		**50**	**50**		**70**	**70**

NOTE :– 1. Paragraphs should be given with the help of points. 2. Story should be given with the help of outline. 3. Letter/ Application/Diary Entry should be given with help of clues.

कक्षा 7 के मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम व अंक विभाजन योजना (अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा हेतु)
विषय - संस्कृत

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र	क्षेत्र विवरण	अर्द्धवार्षिक परीक्षा पूर्णांक 50		वार्षिक परीक्षा पूर्णांक 70	
			पाठ क्रमांक (विषयवस्तु)	अंक भार	पाठ क्रमांक (विषयवस्तु)	अंक भार
1.	पढ़ना एवं लिखना	पाठ्यपुस्तक के आधार पर लघु प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में लिखना	पाठ 1 से 9	6	पाठ 1 से 9	3
					पाठ 10 से 15	6

क्र. सं.	अधिगम क्षेत्र	क्षेत्र विवरण	अर्द्धवार्षिक परीक्षा पूर्णांक 50		वार्षिक परीक्षा पूर्णांक 70	
			पाठ क्रमांक (विषयवस्तु)	अंक भार	पाठ क्रमांक (विषयवस्तु)	अंक भार
		पाठ्यपुस्तक के आधार पर हिन्दी प्रश्नों के उत्तर हिन्दी में देना। (जीवन मूल्य, सारांश व केन्द्रीय भाव से सम्बन्धित प्रश्न)	पाठ 1 से 9	3	पाठ 1 से 9 पाठ 10 से 15	1 3
2.	व्याकरण	व्याकरण पाठ्यक्रमानुसार–				
		संज्ञा		1		1
		सर्वनाम		2		3
		विशेषण		1		1
		धातुरूप		2		3
		सन्धि		1		1
		प्रत्यय		1		1
		उपसर्ग		1		1
		समास		1		1
		कारक		1		1
		अव्यय		1		1
		संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद (गद्य)	2, 3, 5, 6, 8	9	2, 3, 4, 5, 7, 8	4
					10,11,13,14	10
		संस्कृत से हिन्दी में अनुवाद (पद्य)	1,6,9	3	1,6,9	1
					12,15	4
		हिन्दी से संस्कृत में अनुवाद		3		3
3.	लिखना	संस्कृत में प्रार्थना पत्र		3		5
		संस्कृत में लघुरचना कहानी/निबन्ध		3		5
		श्लोक का केन्द्रीय भाव/सुक्ति व्याख्या		2		2
		कण्ठस्थ श्लोक का लेखन		2		3
		पठित गद्यांश पर प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में		4		6
		योग		**50**		**70**

कक्षा 7 के मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम व अंक विभाजन योजना (अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा हेतु)

विषय - गणित

क्र. सं.	खण्ड/अधिगम क्षेत्र	अध्याय सं.	अध्याय का नाम	अर्द्धवार्षिक परीक्षा पूर्णांक 50		वार्षिक परीक्षा पूर्णांक 70	
1.	अंक गणित	1	पूर्णांक	5		2	
		2	भिन्न एवं दशमलव	6	11	3	21
		8	राशियों की तुलना	–		8	
		9	परिमेय संख्याएँ	–		8	

क्र. सं.	खण्ड/अधिगम क्षेत्र	अध्याय सं.	अध्याय का नाम	अर्द्धवार्षिक परीक्षा पूर्णांक 50		वार्षिक परीक्षा पूर्णांक 70	
2.	बीजगणित	4	सरल समीकरण	6		2	
		12	बीजीय व्यंजक	5	11	3	14
		13	घातांक और घात	–		9	
3.	रेखागणित	3	आंकड़ों का प्रबंधन	6		2	
		5	रेखा एवं कोण	4		3	
		6	त्रिभुज और उसके गुण	6		2	
		7	त्रिभुजों की सर्वांगसमता	5		2	35
		10	प्रायोगिक ज्यामिति	7	28	2	
		11	परिमाप और क्षेत्रफल	–		8	
		14	सममिति	–		8	
		15	ठोस आकारों का चिन्तन	–		8	
			योग	**50**	**50**	**70**	**70**

कक्षा 7 के मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम व अंक विभाजन योजना (अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा हेतु)

विषय - विज्ञान

क्र. सं.	खण्ड/अधिगम क्षेत्र	अध्याय सं.	अध्याय का नाम	अर्द्धवार्षिक परीक्षा पूर्णांक 50		वार्षिक परीक्षा पूर्णांक 70	
				अंक भार अध्यायवार	अधिगम क्षेत्र/खण्ड अंक भार	अंक भार अध्यायवार	अधिगम क्षेत्र/खण्ड अंक भार
1.	कृषि एवं जीव विज्ञान	1	पादपों में पोषण	4	20	1	20
		2	प्राणियों में पोषण	4		1	
		3	रेशों से वस्त्र तक	4		1	
		7	मौसम, जलवायु तथा जलवायु के अनुरूप जन्तुओं द्वारा अनुकूलन	4		1	
		9	मृदा	4		1	
		10	जीवों में श्वसन	–		5	
		11	जन्तुओं और पादपों में परिवहन	–		5	
		12	पादपों में जनन	–		5	
2.	रसायन विज्ञान	5	अम्ल, क्षार और लवण	5	10	10	20
		6	भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन	5		10	
3.	भौतिक विज्ञान	4	ऊष्मा	3	15	4	20
		8	पवन, चक्रवात और तूफान	3		4	
		13	गति एवं समय	3		4	
		14	विद्युत धारा और इसके प्रभाव	3		4	
		15	प्रकाश	3		4	
4.	हमारा ब्रह्माण्ड एवं पर्यावरण	16	एक बहुमूल्य संसाधन	2	5	4	10
		17	हमारी जीवन रेखा	2		4	
		18	अपशिष्ट जल की कहानी	1		2	
			योग	**50**	**50**	**70**	**70**

कक्षा 7 के मूल्यांकन हेतु पाठ्यक्रम व अंक विभाजन योजना (अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक परीक्षा हेतु)
विषय - सामाजिक विज्ञान

क्र. सं.	विषयवस्तु (अधिगम क्षेत्र)	अध्याय सं.	अध्याय का नाम/संख्या	अर्द्धवार्षिक परीक्षा पूर्णांक 50		वार्षिक परीक्षा पूर्णांक 70	
				अंक भार अध्यायवार	अंक भार अधिगम क्षेत्र	अंक भार अध्यायवार	अंक भार अधिगम क्षेत्र
1.	व्यक्ति का सामाजिक परिवेश एवं आर्थिक विकास	1	समाज और हमारा दायित्व	3	6	2	13
		2	आइए जनसंख्या के बारे में जाने	3		2	
		3	भारत के व्यवसाय	–		4	
		4	जागरूक उपभोक्ता सुरक्षित उपभोक्ता	–		5	
2.	व्यक्ति एवं जनहितकारी संस्थाएँ तथा जन तांत्रिक मूल्य	5	हमारा संविधान	4	15	1	18
		6	हमारे कर्तव्य व अधिकार	4		2	
		7	हमारे राष्ट्रीय प्रतीक	4		2	
		8	व्यवस्थापिका	3		1	
		9	कार्यपालिका	–		6	
		10	न्याय पालिका	–		6	
3.	व्यक्ति एवं प्राकृतिक परिवेश	11	भारत का भौतिक स्वरूप	4	16	1	24
		12	वन सम्पदा एवं वन्य जीव	4		2	
		13	सिंचाई एवं कृषि का योजनाबद्ध विकास	4		2	
		14	खनिज संस्थान	4		2	
		15	भारत का विकास	–		9	
		16	परिवहन व्यवसाय	–		8	
4.	हमारी सभ्यता एवं संस्कृति	17	हर्ष के बाद भारत	3	13	1	15
		18	सल्तनतकालीन राजवंश	3		1	
		19	मध्यकालीन प्रमुख घटनाएँ	4		2	
		20	भक्ति एवं सूफी परम्परा	3		1	
		21	मध्यकालीन सांस्कृतिक धरोहर	–		5	
		22	मध्यकाल की महान विभूतियाँ	–		5	
			योग	**50**	**50**	**70**	**70**

Marks distribution according to Unit/Syllabus (Class-8)
Subject – English

S. No.	Learning Areas	Contents	Half Yearly	H.Y. Exam 50		Yearly 70	Total	Examin. Total
1.	GRAMMAR	*Grammar*	Units/Lesson contents	Marks	H.Y.	Units/Lesson contents	Marks	Yearly
		determiners	Lessons on 1 to 6 in Sunbeam	1		Complete Text Book	1	
		Connectives		1½			1	
		Tense (Correct Forms of the Verbs)		1½			1	13
		Adjectives		1			1	

S. No.	Learning Areas	Contents	Half Yearly	H.Y. Exam 50		Yearly 70	Total	Examin. Total
		Noun Phrase		½				
		Passive Voice		1½	09		1½	
		Indirect Speech					1½	
		Preposition		½			1	
		Pronoun					1	
		Modals					1½	
		Question Framing		1½			1	
		'IF' for open conditions					1½	
		Vocabulary						
		Sounds		1			1	
		Opposites		1			1	
		Homophones		1			1	
		One Word		1	06		1	07
		Word Formation		1			1	
		Correct Forms of the words					1	
		Antonyms & Synonyms		1			1	
		Total		**15**	**15**		**20**	**20**
2.	READING & WRITING	Passage for Comprehension (seen & unseen)		7			10	
		Paragraph writing		7			10	
		Story writing		7	35		10	50
		Letter/Application writing		6			10	
		Reference Skills & Diary entry/ Notice/Message/ Brochure Writing		8			10	
		Total		**50**	**50**		**70**	**70**

NOTE :– 1. Paragraphs should be given with the help of points. 2. Story should be given with the help of outline. 3. Letter/ Application/Diary Entry should be given with help of clues.

3. वरिष्ठ अध्यापक (ग्रेड-II) पुरुष/महिला के राज्यस्तरीय वरिष्ठता सूची के नामांकन इत्यादि संशोधन प्रकरण तय समय सीमा में निपटाये जावें

• कार्यालय निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर • क्रमांक : शिविरा/माध्य/संस्था/वरि/के-2/11968/मानदण्ड/वो-III/2000-02/05-06/ 194 दिनांक : 17.10.12• कार्यालय आदेश • इस कार्यालय द्वारा समय-समय पर मण्डल अधिकारियों को निर्देश दिये जाते रहे हैं कि उनके मण्डल में कार्यरत वरिष्ठ अध्यापक (ग्रेड-II) पुरुष/महिला के नामांकन राज्य स्तरीय वरिष्ठता सूची में नहीं हैं तथा उनके जन्मतिथि, वर्ग (एस.सी./एस.टी.) अथवा योग्यता अभिवृद्धि एवं अन्य संशोधन किये जाने हैं तो ऐसे प्रकरण एक सीमा के अन्दर-अन्दर निपटाये जावें।

इस कार्यालय के पत्र क्रमांक शिविरा/मा/वरिष्ठता/के-2/11968/मानदण्ड/वो-II/2000-02/05-06 दिनांक 11.09.2009 एवं सम संख्यक विज्ञप्ति दिनांक 18.09.2009 द्वारा समाचार पत्रों में विज्ञापन प्रसारित कर दिनांक 25.09.2009 तक उक्त कार्यवाही करने के निर्देशित किया गया था, तत्पश्चात् इस कार्यालय के समसंख्यक आदेश दिनांक 18.01.2010 एवं दिनांक 07.07.10 एवं 04.08.11 द्वारा क्रमशः दिनांक 31.03.2010 एवं 05.09.2010 एवं 30.09.2011 तक पुराने प्रकरण अधीनस्थ कार्यालयों से प्राप्त कर एक साथ निष्पादन करने के निर्देश दिये गये थे, लेकिन अब भी कई मण्डलों द्वारा नामांकन/योग्यता– अभिवृद्धि/ जन्मतिथि/वर्ग संशोधन इत्यादि के लिए प्रकरण भिजवाये जा रहे हैं।

इससे विदित होता है कि मण्डल स्तर पर कार्य की गति मंद है तथा इस कार्यालय द्वारा जारी निर्देशों की पालना नहीं हो रही हैं अतः मण्डल अधिकारियों को पुनः अवसर देते हुए पाबन्द किया जाता है कि दिनांक **31.12.2012** तक पुराने प्रकरण अधीनस्थ कार्यालयों से प्राप्त कर एक साथ निष्पादन करें एवं निदेशालय स्तर पर निपटाये जाने वाले प्रकरण तत्काल निदेशालय को भिजवावें, तथा अधिनस्थ कार्यालयों को ये निर्देश जारी करें कि उक्त बढ़ाई गई निश्चित तिथि तक प्रकरणों का निस्तारण करें। अब भी यदि पुराने लम्बित प्रकरणों का निस्तारण नहीं होता है, तो यह जिला/मण्डल अधिकारियों के कार्य के प्रति शिथिलता का द्योतक हैं। अतः कृपया उपर्युक्त के लिए तत्काल करणीय कार्यवाही करें। • ह., संयुक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर।

शिविरा पंचांग माह नवम्बर, 2012

कार्य दिवस 15 • रविवार 04 • अवकाश 11 • उत्सव 04 • 1 नवम्बर– माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा शिक्षकों के व्यावसायिक कौशल उन्नयन की प्रतियोगिता के लिए राज्य स्तर पर आयोजन प्रस्तावित। **3 नवम्बर**– शिक्षा शनिवार आयोजन एवं विद्यालय प्रबन्धन समिति की बैठक। **7–17 नवम्बर**– मध्यावधि अवकाश। **10 नवम्बर**– मीना मंच के अन्तर्गत द्वितीय मौहल्ला बैठक का आयोजन करना। **11 नवम्बर**– राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (उत्सव)। **13 नवम्बर**– दीपावली (अवकाश)। **14 नवम्बर**– गोवर्धन पूजा (अवकाश) एवं बाल दिवस (उत्सव), विशेष आवश्यकता वाले बालक–बालिकाओं हेतु पीयर सेन्सटाईजेशन हेतु गतिविधियों का आयोजन। एनपीईजीईएल के अन्तर्गत श्रेष्ठ बालिकाओं को पुरस्कृत करना। (बाल दिवस के आयोजन के साथ)। **15 नवम्बर**– भैया दूज अवकाश। **19–25 नवम्बर**– कौमी एकता सप्ताह का आयोजन। **20–24 नवम्बर**– विज्ञान एवं जनसंख्या व विकास शिक्षा मेला (राज्य स्तर)। **23–24 नवम्बर**– शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता हेतु तहसील स्तर पर चयन। **24 नवम्बर**– मीना मंच के अन्तर्गत "बदल गया है जीवन" कहानी का वाचन एवं चर्चा। **25 नवम्बर**– मौहर्रम (अवकाश), कालीदास जयन्ती (उत्सव)। **26–27 नवम्बर**– राज्य स्तरीय शिक्षक सम्मेलन (शिक्षकों के लिए अवकाश)। **28–नवम्बर**– गुरुनानक जयन्ती (अवकाश–उत्सव)। **29–30 नवम्बर**– शिक्षक खेलकूद प्रतियोगिता हेतु जिला स्तर पर चयन। **30 नवम्बर**– शिक्षक टीएलएम, विद्यालय सुविधा अनुदान एवं मरम्मत व रखरखाव अनुदान के उपयोगिता प्रमाण–पत्रों का प्रेषण (प्रारम्भिक)। **नोट :–** **1.** विद्यालय स्तर पर प्रतियोगिताएं/एस.यू.पी.डब्ल्यू शिविर/वार्षिक उत्सव 30 नवम्बर, तक अनिवार्यतः सम्पन्न किये जावें। **2.** विद्यालय सौदर्यकरण में मरम्मत एवं रखरखाव अनुदान का उपयोग सुनिश्चित करना। (प्रारम्भिक) **3.** प्रत्येक पाठ पढ़ाने के पश्चात कार्य पुस्तिकाओं में अभ्यास कार्य कराना। **4.** कम्प्यूटर, ई–कन्टेंट प्रशिक्षण। **5.** द्वितीय/तृतीय रविवार NTSE (प्रथम स्तर) व NMMS राज्य स्तरीय परीक्षा का आयोजन। **6.** मध्यावधि अवकाश के दौरान विशेष आवश्यकता वाले बालक–बालिकाओं हेतु एक्सपोजर विजिट का आयोजन।

विद्यालय प्रसारण कार्यक्रम

माह : नवम्बर, 2012 **प्रसारण समय : दोपहर 2.10 से 2.30 तक**

दिनांक	वार	आकाशवाणी केन्द्र	कक्षा	विषय	पाठ्यपुस्तक का नाम	पाठ क्रमांक	पाठ का नाम
1.11.2012	गुरुवार	बीकानेर	8	विज्ञान	विज्ञान	10	किशोरावस्था की ओर
2.11.2012	शुक्रवार	जयपुर		गैरपाठ्यक्रम			जल ही जीवन है
3.11.2012	शनिवार	जोधपुर	8	सामाजिक विज्ञान	हमारे अतीत-III भाग-I	6	उपनिवेशवाद और शहर एक शाही राजधानी की कहानी
5.11.2012	सोमवार	उदयपुर	8	विज्ञान	विज्ञान	7	पौधे एवं जंतुओं का संरक्षण
6.11.2012	मंगलवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम			हमारे लोक देवता
19.11.2012	सोमवार	जयुपर	9	सामाजिक विज्ञान	लोकतांत्रिक राजनीति	6	लोकतांत्रिक अधिकार
20.11.2012	मंगलवार	जोधपुर		गैरपाठ्यक्रम			हम और हमारे बुजुर्ग
21.11.2012	बुधवार	उदयपुर	10	सामाजिक विज्ञान	समकालीन भारत-II	7	राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ
22.11.2012	गुरुवार	बीकानेर	10	हिन्दी	क्षितिज भाग-II	11	रामवृक्ष बेनीपुरी बालगोबिन भगत
23.11.2012	शुक्रवार	जयपुर	12	राजस्थान अध्ययन	राजस्थान अध्ययन भाग-4	7	सूचना का अधिकार : विचार और व्यवहार
24.11.2012	शनिवार	जोधपुर	9	संस्कृत	शेमुषी - प्रथमो भागः	11	पर्यावरणम्
29.11.2012	गुरुवार	उदयपुर		गैरपाठ्यक्रम			हमारे आदर्श
30.11.2012	शुक्रवार	बीकानेर		गैरपाठ्यक्रम			बाल विवाह एक अभिशाप

बापू की सीख-17

वाचन और विचार

❑ मो. क. गाँधी

महात्मा गाँधी का व्यक्तित्व बहुआयामी था। राजनीति, अर्थनीति, समाजनीति एवं शिक्षा सभी क्षेत्रों में उनके विचार बहुत उपयोगी हैं। वस्तुतः वे एक मनोवैज्ञानिक शिक्षक थे। उनकी शिक्षा सम्बन्धी 21 रचनाएं 'बापू की सीख' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुई हैं। शिविरा के सुधि पाठकों के लिए उन्हें शृंखलाबद्ध प्रकाशित किए जाने का निर्णय लिया गया है। आशा है पाठक इन विचारों को पठन, मनन के साथ आचरण में लाने का प्रयास करेंगे। —वरिष्ठ सम्पादक

पाठशालाओं में हम पढ़ते हैं– 'वाचन मिथ्या बिना विचार।' यह उक्ति शब्दशः सत्य है। हमें किताबें पढ़ने का शौक हो तो यह अच्छा कहा जाएगा। आलस्यवश जो पढ़ता नहीं बाँचता नहीं वह अवश्य मूढ़ माना जाएगा; पर जो खाली पढ़ा ही करता है, विचार नहीं करता, वह भी लगभग मूढ़-जैसा ही रहता है। इस पढ़ाई के एवज में कितने ही आँख खो बैठते हैं, वह अलग है। निरा वाचन एक प्रकार का रोग है।

हममें बहुतेरे निरी पढ़ाई करने वाले होते हैं। वे पढ़ते हैं; पर गुनते नहीं, विचारते नहीं। फलतः पढ़ी हुई चीज पर अमल वे क्यों करने लगे? इससे हमें चाहिए कि थोड़ा पढ़ें, उस पर विचार करें और उस पर अमल करें। अमल करते वक्त जो ठीक न जान पड़े उसे छोड़ दें और आगे बढ़ें। ऐसा करने वाला थोड़ी पढ़ाई से अपना काम चला सकता है, बहुत-सा समय बचा लेता है और मौलिक कार्य करने की जिम्मेदारी उठाने के योग्य बनता है।

जो विचार करना सीख लेता है, उसको एक लाभ और होता है, जो उल्लेखनीय है। पढ़ने को हमेशा नहीं मिल सकता। यह देखने में आता है कि जिसे पढ़ने की आदत पड़ गई हो, उसे पढ़ने को न मिले तो वह परेशान हो जाता है। पर विचार करने की आदत पड़े तो उसके पास विचार-पोथी तो प्रस्तुत रहती ही है। अतः उसे परेशानी में नहीं पड़ना पड़ता।

विचार करना 'सीखना', यह शब्द-प्रयोग मैंने जान-बूझकर किया है। सही-गलत, निकम्मे, विचार तो बहुतेरे किया करते हैं। वह तो पागलपन है। कितने ही विचारों के भँवर में पड़कर निराश हो जाते और आत्मघात भी कर बैठते हैं। ऐसे विचार की बात यहाँ नहीं की जा रही है। इस समय तो मेरी सूचना पढ़े हुए पर विचार करने तक है। मान लीजिए कि आज हमने एक भजन सुना या पढ़ा, उसका विचार करना, उसमें क्या रहस्य है, उससे मुझे क्या लेना है, क्या नहीं लेना है, इसकी छानबीन करना, उसमें दोष हों तो उन्हें देखना, अर्थ न समझ में आया हो तो उसे समझना– यह विचार-पद्धति कही जाएगी। यह मैंने सादे-से-सादा दृष्टांत लिया है। इसमें से हरएक अपनी शक्ति-सामर्थ्य के अनुसार दूसरा दृष्टांत घटित कर ले और आगे बढ़े। ऐसा करने वाला अंत में आत्मानंद भोगेगा और उसका सारा वाचन फलेगा।

"उठ जाग मुसाफिर भोर भई अब रैन कहाँ जो सोवत है?" – अरे मुसाफिर, उठ। सवेरा हुआ। अब रात कहाँ है जो तू सोता है? इतना समझकर जो बैठ जाता है उसने पढ़ा, पर विचार नहीं किया; क्योंकि वह सवेरे के समय उठकर ही अपने-आपको कृतार्थ मान लेता है। पर जो विचार करना चाहता है वह तो अपने-आपसे पूछता है– मुसाफिर यानी कौन? सवेरा हुआ के मानी क्या हुए? रात गई यानी? सोना क्या है? यों सोचे तो रोज एक पंक्ति से अनेक अर्थ निकाल ले और समझे कि मुसाफिर यानी जीवमात्र। जिसे ईश्वर पर आस्था है उसके लिए सदा सवेरा ही है। रात के मानी आराम भी हो सकते हैं और जो जरा भी गाफिल – लापरवाह – रहता है उस पर यह पंक्ति घटित होती है। जो झूठ बोलता है वह भी सोया हुआ है। यह पंक्ति उसे भी जगाने वाली है। यों उससे व्यापक अर्थ निकाल कर आश्वासन प्राप्त किया जा सकता है। यानी एक पंक्ति का ध्यान मनुष्य के लिए पूरा आध्यात्मिक पाथेय हो सकता है और चारों वेद कंठ पर जाने वाले और उसका अर्थ भी जानने वाले के लिए यह बोझरूप बन सकता है। यह तो मैंने एक जबान पर चढ़ी हुई मिसाल दे दी है। सब अपनी-अपनी दिशा चुनकर विचार करने लग जाएँ तो जीवन में नया अर्थ निकालेंगे और नित्य नया रस लूटेंगे।

'नीति-धर्म' से

मेहनत, लगन का करिश्मा

आठ वर्षीय एक बच्चा घर के एक कोने में बैठा छोटे-छोटे छंदों में तुकबंदियाँ मशगूल होकर कर रहा था। उसके मनोभावों को लिखता और मन ही मन गुनगुना रहा था। जिससे उसे आनन्द आता था। जब उसके पिता ने देखा कि बेटा कविता करने में विशेष ध्यान देता है, वह देख उसके पिता नाराज हो गए। उन्होंने चेतावनी देते हुए कहा कि– "पढ़ाई-लिखाई में ध्यान लगाए, यदि कविता में इतना ध्यान, समय बर्बाद किया तो अब खैरियत नहीं है?" वह अपने मन-मस्तिष्क में उठते उन्मेषों, नये-नये शब्दों, भावों, अभिरुचि, रुझान को रोक नहीं सकता था जैसे समुद्र में ज्वार आता वैसे विचारों की तरंगों को रोक नहीं पाता था। पिता ने उसे सख्तीपूर्वक से डाँटा भी। फिर एक दिन जब चोरी-छिपे चुपचाप कविता लिखते तो, वे भड़क उठे और छड़ी से पीटने लगे। पहली छड़ी मासूम बच्चे की पीठ पर पड़ते बालमन कवि के मुख से अंतस की आवाज कविता के सच्चे, सटीक बरबस शब्द फूट पड़े– *"डादर-डादर पिटी टेक, नोर मैल आई वसेंच मेक।"* अर्थात् "डैडी। मुझे मत मारिए, अब भविष्य में कविता नहीं करूँगा।"

बिना कोशिश किए ही अपने 'बेटे के दिल के सच्चे उद्गार सुनकर तत्काल क्रोध काफूर हो गया। उल्टी उन्होंने अत्यंत खुशी जाहिर की और मासूम बेटे को गोद में उठा लिया, प्यार से मुख चूमा और पीठ थपथपाई और बोले– "बेटे! तुम कितने प्रतिभाशाली, विलक्षण बुद्धिमान, विनम्र हो, यह तो मुझे आज मालूम हुआ। अब निर्भय होकर जब चाहो खूब कविता करो। तुम एक दिन महान् कवि बनोगे।" बेटे को पिता का प्रोत्साहन, आशीर्वाद मिला उसका हौसला बढ़ा, मन बड़ा खुश, निडर हुआ, उसकी जिज्ञासा, आशा, उत्साह, खुशी में रंग दिनोंदिन दिन-दूना रात चौगुना भरने लगा।

पिता के प्रोत्साहन से उसकी हीनभावना खत्म हो गई। उसके कविता लिखने की रुचि, रुझान में वृद्धि होती गई। यही बच्चा बड़ा होकर अंग्रेजी का प्रसिद्ध कवि बना। जानते हैं इस बच्चे का नाम क्या था?– 'एलेक्जेंडर पोप'।

ये प्रसंग माता, पिता, शिक्षक को शिक्षा देता है, बच्चे पर अपनी मर्जी नहीं थोपने चाहिए अपितु बच्चे की अभिरुचि, रुझान, जिज्ञासा को सृजनात्मक, रचनात्मक एवं सकारात्मक सोच को प्रोत्साहन, प्रेरणा से सहयोग देना चाहिए। जितने भी महापुरुष सुप्रसिद्ध हुए वे धरती पर ही पैदा हुए, आकाश से टपक कर धरती पर नहीं आये हैं। अतः माता, पिता, शिक्षक के सद्संस्कार, शिक्षा, मेहनत से बालकों के भाग्यनिर्माता कहलाते हैं।

–सौवलाराम नामा
सदर बाजार रोड, निकट बड़ा चौहरा, भीनमाल

विद्यालयों के समक्ष चुनौतियाँ

❑ रूपनारायण काबरा

शिक्षा एक प्रवाह है जो बाधाओं से संघर्ष करता, परिवर्तन को स्वीकारता, नये समय के अनुरूप नये समाज के निर्माण को देखता, संभालता और संभवतः सँवारता बढ़ता रहता है। वैदिक काल से लेकर आज 21वीं सदी में भी शिक्षा का लक्ष्य तो वही है अर्थात् मानव का निर्माण। मूल लक्ष्य तो सदा यही रहेगा और यही रखना भी होगा किन्तु शिक्षा का स्वरूप, पाठ्यक्रम एवं उसकी कार्यविधि युगकालीन एवं व्यावसायिक आवश्यकता संदर्भ में बदलती रहती है।

विद्यालय शिक्षा के माध्यम रहे हैं और रहेंगे भी, यद्यपि लगभग 40 वर्ष पूर्व विद्यालय विहीन समाज की परिकल्पना के विद्रोही क्रांतिकारी स्वर बुलन्द हुए थे, और उस आवाज ने विद्यालयों को अपने अस्तित्व के लिए सजग होने हेतु झिंझोड़ा भी था।

आज तो शिक्षा प्राप्त करने के साधन अत्यन्त सशक्त एवं प्रभावी हैं। प्रिंट और इलेक्ट्रोनिक मीडिया, कम्प्यूटर, सी.डी., डीवीडी, लैपटॉप एवं इंटरनेट व मल्टीमीडिया इत्यादि विभिन्न प्रकार के शैक्षिक उपकरण हावी होते जा रहे हैं लेकिन इन सबके बावजूद विद्यालय एवं शिक्षक का महत्त्व कम नहीं हुआ है। पर विद्यालय को अपना अस्तित्व सही अर्थ में बनाये रखने हेतु समय के साथ समय की गति से चलना होगा और कोचिंग व बढ़ती ट्यूशन, गाइड बुक्स सभी चुनौतियों का सामना करते हुए स्वीकारते हुए अपने चॉक-टॉक के मूल ढाँचे में व्यापक एवं प्रभावी परिवर्तन करना होगा।

अब मात्र पाठ्यक्रम आधारित परीक्षा हेतु तैयारी कराने मात्र से पार नहीं पड़ेगी। विद्यालय को विद्यार्थी के व्यक्तित्व का विकास करना होगा और उसकी विकासात्मक सम्प्रेषण, अभिव्यक्ति एवं कलात्मक सृजन आदि आवश्यकताओं की पूर्ति करनी होगी। उसे भविष्योन्मुखी होने में सहायता करनी होगी। सामान्य ज्ञान की वृद्धि करनी ही होगी।

विद्यालयी शिक्षा की प्रतिस्पर्द्धा में वही विद्यालय जीतेगा, वही लोकप्रिय होगा जो अपने छात्र-छात्राओं का द्रुतगति से परिवर्तनशील युग के अनुरूप सार्थक, प्रभावी एवं गुणवत्ता से परिपूर्ण शिक्षा दे सकेगा। विद्यालय को अब इतना सक्षम होना होगा कि वह अपने छात्रों के समग्र विकास की व्यवस्था कर सके और उसके अन्तर्गत प्रभावी कम्प्यूटर शिक्षा, इन्टरनेट व सी.डी., डीवीडी, एलसीडी प्रोजेक्टर इत्यादि का सहज प्रयोग एवं अभिव्यक्ति कौशल का विकास पावर पॉइंट प्रजेन्टेशन इत्यादि में अपरिहार्य होगा जिससे कि वे नई चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में किसी से पीछे न रहें।

वैश्वीकरण अथवा उदारीकरण के प्रभाव से पश्चिम की भौतिकवादी विचारधारा के दुष्प्रभाव, विदेशी माल, उपकरण और विदेशी संस्कृति का प्रचार-प्रसार, इम्पोर्टेड माल के प्रति आकर्षण, हिंसा, आड़म्बर, अपराध, प्रदर्शन एवं खाओ-पीओ, मौज उड़ाओ की प्रवृत्ति इत्यादि से युवाओं एवं किशोरों को अप्रभावित रखना भी आज की शिक्षा के सामने एक चुनौती है। जिस स्कूल में संस्कार शिक्षा, अभिव्यक्ति कौशल एवं सांस्कृतिक सजगता तथा समग्र व्यक्तित्व विकास तथा समय-प्रबन्धन की कला सिखाई जायेगी, मंचीय अभिव्यक्ति, कलात्मक सृजन, प्रवृत्ति, प्रश्नोत्तरी द्वारा सामान्य ज्ञान अभिवृद्धि किये जाने की व्यवस्था होगी साथ ही खेल-कूद योगा शिक्षा, पर्यटन इत्यादि सभी का सम्यक प्रावधान होगा वही विद्यालय स्वीकारा जायेगा।

यह सच है कि उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था के लिए अनुभवी, योग्य, प्रशिक्षित, कुशल, संतुष्ट, समर्पित एवं गतिमान अध्यापकों के साथ ही उत्तम आकर्षक भवन, सुन्दर प्रेरक परिसर, व्यापक स्वच्छता, हरियाली, पेड़-पौधे, लॉन व फूलों की क्यारियाँ, खेल के मैदान, जिम्नेजियम और विशेष रूप से सुसज्जित वाचनालय, विज्ञान पुस्तकालय एवं उत्साही, प्रवीण लायबेरियन हो, सुसज्जित प्रयोगशालाएँ, बच्चों का अपना जू व नन्हें-मुन्नों के विशिष्ट खेलकूद की सामग्री का होना अपरिहार्य है। और तदनुसार शिक्षण शुल्क की राशि भी अधिक होगी ही। श्रेष्ठ चिकित्सा सुविधा, श्रेष्ठ शिक्षा व श्रेष्ठ स्थापत्य महँगे होंगे ही और यदि शुल्क के अनुरूप सेवा नहीं मिलेगी तो यह व्यवस्था अभिभावकों को स्वीकार नहीं होगी।

इसलिए किसी भी विद्यालय को अपने शुल्क के अनुरूप शिक्षा देनी ही होगी अन्यथा प्रतिस्पर्द्धा की दौड़ में वह पिछड़ जायेगा। किसी भी विद्यालय की गुणवत्ता के प्रभावी विज्ञापन वस्तुतः उसका उत्पाद अर्थात् छात्र ही हैं। विद्यार्थियों का समग्र विकास जिसका लक्ष्य हो जो पाठ्यक्रम व परीक्षा के अतिरिक्त स्वास्थ्य, स्वच्छता, संस्कार एवं संप्रेषण कौशल पर विशेष ध्यान देगा वहीं अभीष्ट होगा।

–ए-438, किशोर कुटीर, वैशाली नगर,
जयपुर-302021

खेलों में वैकल्पिक रोजगार

❑ वी. कुमार

खेलों के प्रति जोश तथा उमंग रखने वाले तथा खेलों में कॅरिअर बनाने के इच्छुक व्यक्तियों के लिए केवल खिलाड़ी के रूप में ही कॅरिअर के अवसर उपलब्ध नहीं हैं।

रोम के प्राचीन दिनों में, जब ओलम्पिक्स में खेल एक शानदार तमाशा हुआ करते थे, तब से लेकर आज के आधुनिक ओलम्पिक खेल के प्रति प्रबंधित समारोहों ने मापदण्ड तथा प्रबंधन दोनों ही स्तर पर काफी प्रगति की है। बीजिंग ओलम्पिक्स इसका एक उदाहरण है। बीजिंग ओलम्पिक्स की आयोजन-समिति ने विभिन्न केन्द्रों पर कार्य करने के लिए लगभग एक लाख स्वयंसेवियों की भर्ती करने के लिए एक विज्ञापन जारी किया था।

यह संख्या केवल स्वयंसेवियों की है, हम इस समारोह के लिए अपेक्षित प्रशासकों, प्रबंधकों तथा कार्यकर्ताओं, प्रशिक्षकों, विभिन्न महाद्वीपों से जुड़े समर्थक स्टाफ, रेफरी, अम्पायरों, चिकित्सा देने वाले कर्मचारियों, समारोह का प्रचार-प्रसार करने वाले पत्रकारों, जन-सम्पर्क प्रबंधकों तथा अन्य मीडिया स्टाफ की तो बात ही नहीं कर रहे हैं।

अस्थायी स्वयं सेवियों से भिन्न ये पूर्णकालिक व्यवसायी अपने सम्बन्धित क्षेत्रों (ट्रेडों) से जुड़े जटिल कार्य देखते हैं।

ओलम्पिक्स की व्यापक तैयारी खेल आवश्यकताओं का एक छोटा सा उदाहरण है, और जैसा कि पहले कहा गया है, तैयारी का यह अवसर चार वर्षों में एक बार नहीं आता, बल्कि इसके लिए वर्षों की तैयारी और पूरा ध्यान दिए जाने की आवश्यकता होती है। एक व्यवसाय के रूप में खेल के विभिन्न पहलुओं को समझने का एक और उदाहरण है। हाल ही में जब भारतीय क्रिकेट टीम आस्ट्रेलिया के दौरे पर गई थी, तो खिलाड़ियों के अलावा खेल-व्यवसायी भी बड़ी संख्या में इस दौरे पर गए थे। टीम के साथ मुख्य कोच (डंकन फ्लेचर), प्रबंधक, बोलिंग कोच, फिजियोथेरापिस्ट, शारीरिक प्रशिक्षक, मेंटल कंडीशनिंग कोच (दूसरे शब्दों में खेल मनोवैज्ञानिक), मैसॉर, वीडियो विश्लेषक (खिलाड़ियों की वीडियो फुटेज रिकॉर्ड करने और उनकी समस्याओं के क्षेत्रों का विश्लेषण करने आदि के लिए), सम्पर्क अधिकारी, मीडिया प्रबंधक तथा टीम के चयन में सहायता करने के लिए एक चयनकर्ता भी दौरे पर गए थे। इनके साथ ही भारतीय मीडिया कर्मी भी बड़ी संख्या में टीम के साथ गए थे, जिनमें संवाददाता, फोटोग्राफर एवं वीडियो पत्रकार शामिल थे। नीचे हम खेलों में उपलब्ध वैकल्पिक कॅरिअर के विवरण दे रहे हैं।

कोचिंग/ट्रेनिंग : कोचिंग एक अत्यधिक सम्मानित एवं अतिआवश्यक व्यवसाय है। राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय जैसे उच्च स्तरों पर कोचिंग के लिए सामान्यतः अत्यधिक अनुभव की आवश्यकता होती है, ऐसे कोचों को स्वयं खिलाड़ियों के रूप में लम्बा एवं व्यापक अनुभव होता है। इस तरह, उच्च स्तर पर कोचिंग करना सेवानिवृत्त खिलाड़ियों के लिए एक व्यावहारिक विकल्प है। यह विकल्प किसी भी उच्च स्तर के एथलीट को उसका कॅरिअर आगे बढ़ाने में भी सहायता करता है क्योंकि खेल से जुड़े किसी भी व्यक्ति का खिलाड़ी के रूप में जीवन सीमित होता है।

यहाँ यह ध्यान देना महत्त्वपूर्ण है कि नए विश्व चैम्पियन देने के लिए किसी के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह स्वयं भी विश्व-रिकॉर्ड धारी हो। खेल की गहरी समझ, उसकी उपयुक्तता तथा जन प्रबंधन सामान्यतः एक अच्छे कोच के गुण होते हैं। तथापि कोचिंग भी केवल उच्च स्तर के व्यवसायियों तक ही सीमित नहीं है और इस तथ्य से इंकार नहीं किया जा सकता कि खेलों के विकास तथा क्षमता विकास के साथ ही ट्रेनर के रूप में रोजगार के व्यापक अवसर उपलब्ध हैं।

शैक्षिक संस्थाएँ, स्कूल तथा कॉलेज शारीरिक प्रशिक्षकों को रोजगार पर रखते हैं, जिन्हें सामान्यतः पी.जी.टी. तथा टी.जी.टी. कहा जाता है, आजकल अभिभावक उन स्कूलों को वरीयता देते हैं जिन स्कूलों में नियमित खेलों के अतिरिक्त योग, तैराकी, घुड़सवारी आदि जैसी अनेक शारीरिक गतिविधियाँ होती हैं। उन सभी गतिविधियों के लिए प्रशिक्षित कोचों एवं ट्रेनर्स की आवश्यकता होती है।

इनके अतिरिक्त, फिटनेस केन्द्रों एवं संस्थानों द्वारा ट्रेनर बड़ी संख्या में रखे जाते हैं। निजी आधार पर कार्य करने के लिए कुशल ट्रेनर्स की माँग भी बढ़ती जा रही है।

अम्पायरिंग/रैफरिंग : खेल नियमों से बँधे होते हैं और खेल सही नियमों एवं भावना के साथ खेले जा रहे हैं यह देखने के लिए एक जज की आवश्यकता होती है। रैफरी में ठोस निर्णय क्षमता होने के अतिरिक्त, उसे शारीरिक तथा मानसिक रूप से भी स्वस्थ होना चाहिए। उसे खेल में दक्ष होना चाहिए और उसे नियमों के प्रति कठोर होने के साथ-साथ शांतचित्त एवं धैर्यवान भी होना चाहिए। प्रायः कहा जाता है कि अंपायरिंग करना एक बेकार कार्य है, क्योंकि अम्पायर या रैफरी होने का निर्णय उनके सही फैसलों से नहीं, बल्कि उनकी गलतियों से किया जाता है। प्रायः एक गलती या भूल खेल में किए गए पूरे अच्छे काम पर पानी फेर देती है। यह स्वीकार करना महत्वपूर्ण है कि कोई भी गलती केवल मानवीय भूल है और कोई भी व्यक्ति पूर्णतः दक्ष नहीं होता, किन्तु इन भारी प्रत्याशाओं के बीच यदि कोई व्यक्ति दबाव में भी अच्छा प्रदर्शन करता है और चुनौतियों को स्वीकार करता है तो खेल निर्णायक के रूप में कुछ कॅरिअर पुरस्करणीय हो सकते हैं।

यदि किसी व्यक्ति ने खेला हो तो यह उसके लिए सहायक हो सकता है, लेकिन एक श्रेष्ठ अम्पायर बनने के लिए यह अनिवार्य नहीं है, कोचों के लिए अनेक ऐसी प्रशिक्षण संस्थाएँ हैं जो सामान्यतः सम्बन्धित खेल फेडरेशनों द्वारा चलाई जाती हैं। कोचों को सामान्यतः उनके कौशल एवं अनुभव के आधार पर 1, 2, 3 एवं 4 ग्रेड स्तर पर रखा जाता है, राज्य एवं राष्ट्रीय खेल संगठन अम्पायरों तथा रैफरियों को कार्यों पर रखते हैं। वे फ्रीलांसर के रूप में भी कार्य करते हैं तथा पूर्णकालिक रोजगार में होने के साथ अपने बचे हुए समय में रैफरी के रूप में कार्य करते हैं।

खेल-औषधि : यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ प्रशिक्षित कार्मिकों की भारी कमी रही है। शारीरिक क्षमता तथा स्वस्थता को अधिकतम बनाए रखने एवं उस पर निगरानी रखने के लिए डॉक्टरों, फिजियोथेरापिस्ट्स, डाइटिशियन्स एवं पोषण-विज्ञानियों की अत्यधिक आवश्यकता होती है।

खेल के दौरान भी छोटी चोटों, मोचों आदि के उपचार के लिए फिजियोथेरापिस्ट की आवश्यकता पड़ती है। एथलीटों को प्रतिबन्धित पदार्थों की सूची की जानकारी देने और गैर-कानूनी औषधियों के सेवन से बचने का प्रशिक्षण देने के लिए डॉक्टरों की भी आवश्यकता होती है। कभी-कभी सामान्य दवाइयाँ भी खून के नमूनों में बाधा डाल देती हैं, इसलिए खिलाड़ियों को डब्ल्यू.ए.डी.ए. दिशा-निर्देशों के अनुसार यह जानकारी अच्छी तरह से होनी चाहिए कि उन्हें कौनसी दवा लेनी है और किस दवा के सेवन से बचना है। एक खेल औषधि विशेषज्ञ की यह और इससे भी अधिक भूमिका होती है।

पुनर्स्थापन केन्द्र तथा स्वास्थ्य क्लब आदि भी खेल औषधि विशेषज्ञों को रोजगार पर रखते हैं।

खेल मीडिया : खेल में मीडिया का बहुमुखी विकास हुआ है तथा इसकी भूमिका एवं कार्यों का भी समय के साथ-साथ विकास हुआ है।

पहले कुछ रिपोर्टर एवं एक या दो स्टिल फोटोग्राफर ही किसी खेल की रिपोर्ट देने के लिए पर्याप्त हुआ करते थे, किन्तु आज इनकी संख्या सैकड़ों में पहुँच चुकी है। मीडिया भारत में तीव्रगति से विकासशील उद्योग है और अनेक समाचार-पत्रों तथा न्यूज चैनलों के व्यापक विस्तार से प्रशिक्षित मीडिया कर्मियों की माँग में वृद्धि हुई है।

खेल-पत्रकारिता : आजकल अधिकांश समाचारपत्रों एवं टी.वी. चैनलों की एक मजबूत खेल कवरेज टीम होती है। एक खेल डैस्क में सामान्यतः 10 व्यक्ति होते हैं, जिनमें खेल सम्पादक, विभिन्न खेलों में पत्रकार, उप-सम्पादक, ऐंकर, पेज डिजाइनर आदि शामिल होते हैं।

खेल पत्रकारिता में प्रवेश सामान्यतः एक प्रशिक्षणार्थी रिपोर्टर या प्रशिक्षणार्थी उप-सम्पादक के रूप में मिलता है और वह यहीं से उन्नति करता है। कवरेज के लिए पत्रकारों को अलग-अलग खेल, जैसे क्रिकेट, फुटबॉल, टेनिस, एथलेटिक्स, ओलम्पिक खेल, हाकी आदि दिए जाते हैं। कभी-कभी उन्हें उनके निर्धारित खेल से हटाकर अन्य खेलों की कवरेज सौंपी जाती है और प्रत्येक पत्रकार को क्रम में सभी खेलों की कवरेज दी जाती है। किसी भी खेल पत्रकार को खेलों की जटिलताओं का सामना करने में दक्ष होना चाहिए और अपने विशेष खेल के खिलाड़ियों तथा प्रशासकों से अच्छे सम्पर्क में होना चाहिए।

खेल पत्रकारिता को कॅरिअर के रूप में अपनाने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। क्रिकेट की कवरेज करने वाले एक कर्मी का कथन संक्षेप में निम्नानुसार है : ''क्रिकेट मैच देखने के लिए व्यक्ति भुगतान करते हैं और उन्हें देखने (कवरेज करने) के लिए मुझे भुगतान किया जाता है।'' रिपोर्ट लेखन के अतिरिक्त खेल कमेंटेटर बनने का भी विकल्प है। इस कार्य के लिए अच्छे वेतन का भुगतान किया जाता है, लेकिन लाइव कमेंटेटर की माँग काफी कम है।

खेल फोटो पत्रकार : किसी भी खेल-कहानी के लिए एक्शन फोटो महत्वपूर्ण होते हैं और उत्कृष्ट फोटोग्राफरों को मीडिया संस्थाओं में उनके कार्यों के लिए सम्मानित किया जाता है। वे चित्रों के माध्यम से कहानी कहने का प्रयास करते हैं और अपनी श्रेष्ठ रचनात्मक शक्ति के होने के अतिरिक्त उन्हें सही समय पर, सही स्थान पर होने की भी आवश्यकता होती है।

दूरदर्शन एवं खेल-चैनलों के आगमन के साथ ही खेल-कैमरा कर्मियों की माँग व्यापक हो गई है। वे समाचार बुलेटिनों और कार्यक्रमों के लिए कवरेज करते हैं और उन्हें आँखों देखा हाल भी कवर करना होता है। आँखों देखा हाल प्रस्तुत करना एक जिम्मेदारी भरा कार्य है और इस कार्य के लिए व्यापक अनुभव एवं विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है।

खेल जन-सम्पर्क व्यवसायी : अनेक जन-सम्पर्क एजेंसियाँ ऐसे खेलों से जुड़ी हुई हैं जिनमें खेलों की उमंग रखने वाले जन-सम्पर्क व्यवसायियों की आवश्यकता होती है। खेल फेडरेशनों को जन-सम्पर्क प्रबंधकों की, इवेंट आयोजकों को जन-सम्पर्क प्रबंधकों की और यहाँ तक कि खिलाड़ियों को भी जन सम्पर्क विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है ताकि मीडिया के क्षेत्र में वे उनका मार्गदर्शन कर सकें। आई.पी.एल. एवं एफ-1 जैसे खेलों ने उन जन-सम्पर्क प्रबंधकों की बड़ी संख्या के लिए दरवाजे खोल दिए हैं जो केवल खेलों के लिए कार्य करते हैं।

खेल प्रशासक एवं प्रबंधक : खेल फेडरेशनों तथा संगठनों के रखरखाव तथा संचालन के लिए योग्य एवं सक्षम खेल प्रशासकों की आवश्यकता होती है। चूँकि खेल जगत निरन्तर व्यावसायिक होता जा रहा है इसलिए केवल प्रशिक्षित प्रबंधकों एवं प्रशासकों की माँग बढ़नी भी निश्चित है। सरकारी तथा निजी दोनों क्षेत्रों में इनके लिए अवसर अब भी उपलब्ध हैं।

यह खेलों में उपलब्ध कॅरिअर की विस्तृत सूची नहीं है। यह तो वर्तमान व्यावसायिक प्रवृत्तियों की एक झलक मात्र है। इसके अतिरिक्त यदि कोई रचनात्मक हो तो उद्यम की प्रवृत्ति वाले उस व्यक्ति के लिए खेल-पर्यटन, शिक्षा तथा खेल उपकरण विनिर्माण जैसे अन्य अवसर भी विद्यमान हैं।

(साभार : रोज़गार समाचार 24-30 मार्च, 2012)

सुबह की सैर, शरीर को रखे तरोताज़ा

❑ राजेन्द्र सिंह उदावत

पूर्ण स्वस्थ जीवन जीने के लिए मनुष्य को सभी आयुवर्गों में व्यायाम की आवश्यकता होती है। इस शरीर को चलाने के लिए जैसे आहार की आवश्यकता है, वैसे ही व्यायाम की भी परमावश्यकता है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के आंकड़ों के अनुसार दुनिया भर में सुस्त जीवन शैली सबसे ज्यादा मौतों का कारण बनती है। आज के युग में मनुष्य स्वचालित मशीनों तथा कम्प्यूटरों पर निर्भर होने से शारीरिक परिश्रम से दूर होने के कारण दुष्प्रभाव उसके स्वास्थ्य पर दिखाई देने लगे हैं। जंक फूड (तले हुए भोज्य पदार्थ) व सुस्त जीवन शैली के कारण मनुष्य मानसिक तनाव, मधुमेह रोग, हृदय रोग आदि अनेक बीमारियों से घिरता जा रहा है। यदि हम बैठे-ठाले (अक्रियाशील जीवन शैली) जीवन को त्याग दें तो 70 से 80 प्रतिशत मधुमेह व हृदय रोगों से बचाव हो सकता है।

नियमित व्यायाम का कोई विकल्प नहीं है। पैदल चलना या सैर करना सबसे लोकप्रिय, सुविधाजनक तथा एक आदर्श एरोबिक (ऑक्सी श्वसन) व्यायाम है। क्योंकि इससे शरीर की अधिकतम मांसपेशियों व जोड़ों का व्यायाम होता है। सैर करना सभी आयुवर्गों के लिए लाभप्रद है, विशेषकर उम्रदराज लोगों के लिए जो अक्रियाशील होकर अपना वजन बढ़ा लेते हैं। शरीर को फिट रखने व युवा दिखने के लिए कम से कम 30 मिनट (आधा घण्टा) की सैर व जोगिंग (धीमी गति से दौड़ना) करना आवश्यक है। प्रातःकाल सैर व व्यायाम करने से सारे दिन शरीर में ताजगी बनी रहती है तथा शरीर के विभिन्न अंग स्वस्थ एवं सुडौल बनते हैं। सुखी जीवन के लिए मनुष्य का स्वस्थ रहना अतिआवश्यक है। विज्ञान के पास भी व्यायाम का कोई विकल्प नहीं है, अच्छे चिकित्सक भी नियमित व्यायाम करने की सलाह देते हैं।

सुबह की सैर करना (3-4 कि.मी. प्रति घण्टा की गति से) व्यक्ति को अवसाद रहित, ताजा तथा दिमागी रूप से चुस्त रखता है तथा पूरा दिन व्यक्ति ऊर्जावान रहता है। सुबह की सैर मनुष्य को मानसिक शान्ति व सन्तुष्टि प्रदान करता है। फेफड़ों की कार्यक्षमता में वृद्धि होती है व अन्य दैनिक क्रियाएँ सुचारु रूप से संचालित कर सकता है। नियमित सैर करना वसा को सफलता से जलाने की कुंजी है। नियमित सैर से रक्त संचार बढ़ता है। शरीर का वजन संतुलित रहता है, शरीर के ऊर्जावान रहने के साथ-साथ चुस्ती फुर्ती बनी रहती है। वसा का ऑक्सीकरण अधिक मात्रा में होने से मोटापा नहीं बढ़ता है। कब्ज, गैस, अम्ल-पित्त आदि विकार दूर हो जाते हैं। इससे तनाव कम होकर आपको नींद अच्छी आती है। व्यायाम से रक्त संचार बढ़ता हे। रक्तचाप और रक्त की शुगर संतुलित रहती है। शरीर से पशीने के साथ अपशिष्ट पदार्थों का उत्सर्जन हो जाता है। शरीर की अतिरिक्त वसा खर्च होती है। मूड ठीक रहता है। नियमित व्यायाम व सैर उम्र के साथ घटती जा रही प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाती है। मधुमेह के रोगी में ग्लुकोज स्तर को कम करता है। शरीर के जोड़ों को लुबरीकेटड रखता है एवं शरीर की शक्ति बढ़ती है। ये पूर्ण सत्य है कि ''स्वास्थ्य से धन प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन धन से स्वास्थ्य नहीं पाया जा सकता है।'' स्वस्थ नागरिक ही स्वस्थ देश की धुरी होते हैं। नियमित रूप से पैदल चलना, जोगिंग करना व व्यायाम करके शरीर को निरोग व स्वस्थ रखा जा सकता है। नियमित सैर व व्यायाम को अपनी दैनिक दिनचर्या में स्थाई रूप से सम्मिलित कर लें तो बीमारियों व अस्पतालों में हो रहे बड़े व्ययों पर रोक लगाई जा सकती है। स्वास्थ्य के लिए व्यायाम परम आवश्यक है स्वास्थ्य एवं व्यायाम एक-दूसरे के पूरक हैं। 'बचाव ही उपचार है' कि कहावत को चरितार्थ करने के लिए व्यायाम आवश्यक है।

–शारीरिक शिक्षक
रा.उ.मा.वि., बेटवासियां (जोधपुर)

कलम मेरी, पीड़ा बालकों की

❑ रघुवर दयाल सिंहल

आरम्भ करें उन शिशुओं की चर्चा से जिन्हें मात्र ढाई तीन वर्ष की आयु में ही अतिमहत्त्वाकांक्षी अभिभावक अनजान शिक्षक शिक्षिकाओं के कठोर नियंत्रण में धकेल कर उनके अपनी माँ की लाड़ दुलार भरी गोद में विकसित होने के अवसर छीनकर और बचपन के खेलकूद के उस आनन्द को छीनकर जो जीवन में मात्र एक बार ही मिल पाता है, उनकी स्वाभाविक मुसकान को तनाव में बदल रहे हैं।

अब देखें, सुनें गाथा उन बालक-बालिकाओं की जो शैशवावस्था पार कर चुके हैं। इन्हें तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है। पहले वर्ग में ऐसे बालिकाओं और बालकों को लेते हैं जो बँधुआ मजदूर हैं और जो अपनी शारीरिक क्षमता से अधिक काम करने, जैसा उन्हें खाने, पहनने को दिया जाए उसी में जीने को विवश हैं। तीसरा वर्ग उनका है जो अत्यंत मैले-कुचैले वस्त्रों में कूड़े-करकट के ढेरों पर प्लास्टिक की थैलियाँ बीनते, ललचाई आँखों से अपने उन हम उम्रों को देखकर जो साफ-सुथरे वस्त्रों में स्कूल जा रहे होते हैं, मन मसोस कर रह जाते हैं।

अब बात करते हैं उन छात्र-छात्राओं की जो विद्यालयों में पढ़ रहे हैं। प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ने वाले इनमें अनेक ऐसे हैं जिन्हें भारी-भरकम बस्ते पीठ पर लाद कर ले जाने में अपनी नानी याद आ जाती है। माध्यमिक कक्षाओं में पहुँच कर छात्र-छात्राओं को हिन्दी के अतिरिक्त सभी विषयों में इतनी अच्छी अंग्रेजी की जरूरत पड़ रही है कि उन्हें सभी विषयों के अंग्रेजी शब्दों का ज्ञान अनुपेक्षणीय हो गया है। कल्पना कीजिए हर विषय के इतने विशाल शब्द भण्डार की उपलब्धि हेतु उन्हें कितना समय चाहिए। बेचारे रात के ग्यारह, बारह बजे तक पढ़ने को विवश हैं क्योंकि उनके माता-पिता ने उन पर जो लक्ष्य थोप दिए हैं, उन्हें वे पूरा कर उन्हें प्रसन्न करना चाहते हैं। पर चुनौतियाँ बहुत हैं उनके सामने।

उदाहरण के लिए अंग्रेजी भाषा की अच्छी तैयारी कर लेने के बाद भी अब अंग्रेजी में अच्छे से अच्छे अंक तभी प्राप्त किए जा सकते हैं जब अंग्रेजी के साथ तकनीकी ज्ञान भी उन्हें हो। उदाहरण दे रहा हूँ ग्यारहवीं कक्षा के एक छात्र के ग्यारहवीं के अंग्रेजी पेपर का जिसके Writing Section में एक प्रश्न है–

Write an article on 'The advantages of Technology Versus its adverse effects'.

अब यहाँ भाषा के विशिष्ट ज्ञान के साथ-साथ तकनीकी ज्ञान भी चाहिए।

तकनीकी ज्ञान की इस जरूरत को पूरा करने के लिए छात्र-छात्राओं को लैपटॉप, कम्प्यूटर पर जितना अधिक समय काम करना पड़ रहा है और उसका जितना अधिक दुष्प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर पड़ रहा है, उसकी पोल खोल देता है उनका चेहरा। पर वे करें तो करें क्या? कई स्कूलों में जब कम्प्यूटर कक्षा-कक्ष में खोलकर पार्ट पढ़ाया जाता है तब सबसे ज्यादा शामत उनकी आती है जो सबसे अगली पंक्ति में बिठा दिए जाते हैं। और पढ़ाई– (माना कि विशेषज्ञों के पाठ प्रसारित किए जाते हैं) पर अध्यापक और छात्रों की साझेदारी जो अधिगम के लिए आवश्यक है कहाँ हुई?

इस तकनीकी के लाभ, हानि इस लेख का विषय नहीं है पर तकनीकी ज्ञान की बालक-बालिकाओं को जो पीड़ाएँ सहनी पड़ रही हैं वे तो इस लेख में संक्षेप में और कहकर ही पाठकों से कलम बंद करने की अनुमति लूँगा।

यह दर्द तब बढ़ जाता है जब देखता हूँ कि बालक को खाना खाते-खाते मोबाइल पर Call आ जाने पर बीच में उठकर मोबाइल Attend करना पड़ता है और रात को थक कर चूर हो जाने के बाद जब वह कुछ देर अपना मन बहलाने टी.वी. खोलता है तो मार-धाड़ के सीरियल देखकर इतना भयभीत हो जाता है कि सोने के बाद कुछ समय बाद चीखकर उठ जाता है या आधी नींद में कुछ बड़बड़ाने लगता है। न सुख से खा पाता है और न अच्छी नींद ले पाता है। अगले दिन सुबह जल्दी जागकर स्कूल जाना भी तो होता है यह चिंता भी उसके अन्तर्मन में रहती है।

–795, बरकत नगर, जयपुर-302015

राष्ट्रीय एकता की संजीवनी - हिन्दी

❑ नीलम बिश्नोई

मानव समाज को विधाता की ओर से जो सबसे बड़ा वरदान मिला है, वह भाषा का ही है। भाषा के बिना मनुष्य समाज की दशा बहुत सोचनीय होती है। वेद में भाषा के अनेक नाम हैं– वाग्, वाच्, गिर् इत्यादि। ऋग्वेद में कुत्स ने कहा है– ''सर्वप्रथमं मानवाय स्तुत्यर्थं वाचमिन्द्रःप्रदान्'' अर्थात् सर्वप्रथम इन्द्र ने मनुष्य को ईश्वर-स्तुति के लिए भाषा प्रदान की। भाषा संस्कृति की संवाहक होती है। बिना भाषा के संस्कृति का प्रकाशन सम्भव नहीं। फलतः भाषा और संस्कृति का सम्बन्ध अभिन्न है। संस्कृति किसी राष्ट्र की प्राण होती है जिसके बिना वह राष्ट्र मृत है। इसी कारण प्रत्येक स्वाभिमानी स्वतंत्र राष्ट्र अपनी भाषा को सर्वोच्च आसन पर प्रतिष्ठित करता है। राष्ट्र भाषा राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने वाली और उसमें अस्मिताबोध जगाने वाली संजीवनी है।

सैकड़ों वर्षों तक भारत में अनेक विदेशी आक्रान्ता आते रहे, जिनकी भाषाओं का प्रभाव हमारे जनमानस पर पड़ा। सन् 1947 में देश की स्वतंत्रता के साथ ही स्वाभाविक था कि अपनी भाषा ही राज भाषा बनकर राष्ट्र की एकता एवं सांस्कृतिक पुनर्जागरण का शंख फूँकेगी और 14 सितम्बर 1949 को संविधान सभा के 324 सदस्यों में से 312 ने हिन्दी के पक्ष में मतदान करके इस आशा को चरितार्थ भी किया।

हमारे देश में हिन्दी के प्रति अनुराग प्रदर्शित करने वाले महान व्यक्तित्व कम नहीं हैं। आचार्य विनोबा भावे ने यहाँ तक कह डाला, ''मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज्जत करता हूँ परन्तु मेरे देश में हिन्दी की इज्जत न हो यह मैं नहीं सह सकता।'' आज हमारे देश में अलगाव तथा असहिष्णुता की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यदि हिन्दी भाषाभाषी प्रदेशों में से वैषम्य व पार्थक्य को दूर करने का जागरूकता व दृढ़ता से प्रयास किया जाए तो समस्त राष्ट्र को एकता के सूत्र में बाँध कर हिन्दी भारतवासियों के लिए हृदय सेतु निर्मित कर सकेगी जिसकी आज भारत को आवश्यकता है।

हिन्दी के प्रति देश के सभी नागरिकों को अपना दृष्टिकोण उदार बनाना चाहिए। हिन्दी हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक एवं भावात्मक एकता की प्रतिनिधि भाषा है, हमारे राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। वर्तमान समय में राष्ट्रीय एकता को जीवंत करने में हिन्दी भाषा एक संजीवनी का कार्य करती है। इसके लिए हिन्दी भाषा की महत्ता को समझना होगा। दिनकर ने कहा है, ''हिन्दी तोड़ने नहीं जोड़ने वाली भाषा है। हिन्दी भाषी प्रान्तों में जनपदीय भाषाएँ अनेक हैं। किन्तु उनसे एकाकार होकर हिन्दी ने सभी प्रान्तों को एक सूत्र में बाँध रखा है।''

मद्रास के टॉमस रोवक ने 1807 ई. में हिन्दी को ''महाभाषा मानते हुए गिलक्राइस्ट को यह पत्र लिखा था, भारत के जिस भाग में मुझे काम करना पड़ा है– कलकत्ता से लेकर लाहौर तक, कुमायूँ के पर्वतों से लेकर नर्मदा तक, अफगानों, राजपूतों, जाटों, सिखों और उन प्रदेशों के सभी कबीलों में जहाँ मैंने यात्रा की है, मैंने हिन्दी का आम व्यवहार देखा है। मैं कन्याकुमारी से कश्मीर तक या जावा से सिन्धु के मुहानों तक इस विश्वास से यात्रा करने की हिम्मत कर सकता हूँ कि मुझे हर जगह ऐसे लोग मिल जाएँगे जो हिन्दी बोल लेते होंगे।''

यह कहना समीचीन होगा कि अगर हम भाषा के माध्यम से एकता स्थापित करना चाहें तो भारत में एक ही भाषा का व्यवहार रहे। इस समय जितनी भी भाषाएँ देश में प्रचलित हैं, उनमें हिन्दी भाषा सब जगह प्रचलित है। इस भाषा को यदि भारत की एकमात्र भाषा बना दिया जाए तो एकता सहज एवं शीघ्र स्थापित हो सकती है।

–1/355, हाउसिंग बोर्ड, श्रीगंगानगर

वैदिक गणित

❑ डॉ. के.डी. शर्मा

यथा शिखा मयूराणां, नागानां मणयो यथा।
तद्वद् वेदांगशास्त्राणाम् गणितं मूर्ध्नि स्थितम्॥

–वेदांग ज्योतिष

जिस प्रकार मयूरों की शिखाएँ और सर्पों की मणियाँ शरीर में सर्वोपरि मूर्धास्थान (मस्तक) पर विराजमान हैं, उसी प्रकार वेदांग तथा शास्त्रों में गणित शिरोमणि है।

वैदिक सूत्र-4

परावर्त्य योजयेत्।

अर्थ– विपरीत उपयोग करें अर्थात् पक्षान्तर करें तथा उपयोग करें।

(क) वैदिक भाग संक्रिया में जब भाजक आधार 10, 100, 1000, ... इत्यादि के निकट होता है तथा पहला अंक 1 होता है तब भाग संक्रिया 'परावर्त्य योजयेत्' सूत्र द्वारा (+) चिह्न को (–) तथा (–) चिह्न को (+) में बदल कर करते हैं।

उदाहरण– 1234 ÷ 112

112	1	2	3	4
परावर्त्य $\bar{1}\bar{2}$		$\bar{1}$	$\bar{2}$	
			$\bar{1}$	$\bar{2}$
	1	1	0	2

अतः भागफल = 11, शेषफल = 2

विधि– भाजक 112 में दूसरा अंक 1 तथा तीसरा अंक 2 के चिह्न बदलते हैं अर्थात् –1 एवं –2 तथा इन्हें $\bar{1}\bar{2}$ रूप में लिखते हैं, तत्पश्चात् भाज्य के प्रथम अंक 1 से इनको गुणा कर भाज्य के दूसरे तथा तीसरे अंक के नीचे लिखते हैं। ऐसा करने पर भाज्य के दूसरे अंक $2+\bar{1} = 2-1 = 1$ से भाजक $\bar{1}\bar{2}$ का गुणा करके भाज्य के तीसरे तथा चतुर्थ अंक के नीचे लिख देते हैं तथा जोड़ देते हैं। योगफल के प्रथम दो अंक 11 भागफल तथा अन्तिम दो अंक 02 अथवा 2 शेषफल है।

इस प्रकार 'परावर्त्य योजयेत्' वैदिक सूत्र से भाग की संक्रिया सुगम हो जाती है।

(ख) आनुरूप्य परावर्त्य विधि– जब भाजक में पहला अंक 1 न हो तब इस विधि का उपयोग करते हैं। इस विधि में भाजक को आधार 10, 100, 1000, इत्यादि के निकट लाने के लिए जिस संख्या से भाग दिया जाता है, भागफल को भी उसी संख्या से भाग दिया जाता है।

उदाहरण– 2699 ÷ 224

आनुरूप्य भाजक = $\frac{224}{2}$ = 112

परावर्त्य भाजक = $\bar{1}\bar{2}$

112	2	6	9	9
$\bar{1}\bar{2}$		$\bar{2}$	$\bar{4}$	
			$\bar{4}$	$\bar{8}$
	$\frac{1}{2}\times(24)$		1	1

अर्थात् 12/11

अतः भागफल = 12, शेषफल = 11

(ग) संख्या 9 से भाग– संख्या 9 विशिष्ट संख्या है। 9 की टेबल में प्रत्येक संख्या के अंकों का योग सदैव 9 है। 9 की टेबल : 9, 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72, 81, 90 अंकों का योग :

9, 9, 9, 9, 9, 9, 9, 9, 9, 9

(अ) दो अंकों की संख्याओं में 9 से भाग देने पर दहाई अंक सदैव भागफल होगा तथा अंकों का योग शेषफल होगा।

उदाहरण : निम्नलिखित संख्याओं में 9 का भाग देते हैं:

संख्या	61	53	44	23	80
भागफल	6	5	4	2	8
शेषफल	6+1=7	8	8	5	8

यदि संख्याओं का योग 9 अथवा 9 से अधिक है तब योग में 9 का भाग देते हैं तथा भागफल को संख्या की दहाई की संख्या में जोड़ने पर अभीष्ट भागफल प्राप्त होता है। एवं 9 से भाग देने पर जो शेषफल प्राप्त होता है वह अभीष्ट शेषफल होता है।

उदाहरण– 84 ÷ 9

अंकों का योग = 8 +4 = 12, 12 में 9 का भाग देने पर भागफल 1 तथा शेषफल 3 है अतः अभीष्ट भागफल = 8+1= 9, अभीष्ट शेषफल = 3

(ब) दो अंकों से अधिक संख्याओं में 9 से भाग : भाज्य का प्रथम अंक भागफल का प्रथम अंक होगा, भाज्य के दूसरे अंक में प्रथम अंक का योग भागफल का दूसरा अंक, इस योग में तीसरा अंक का योग भागफल का तीसरा अंक, ... इत्यादि। अंतिम अंक से पूर्व के योग में अंतिम अंक जोड़ शेषफल होगा।

उदाहरण– (1) 2311 ÷ 9

भाज्य 2311 का प्रथम अंक 2 है, द्वितीय अंक 3 में 2 का योग 3+2 = 5, 5 में तृतीय अंक 1 का योग 5+1 = 6 अतः भागफल = 256

अंतिम अंक 1 में 6 जोड़ने पर शेषफल = 1+6 = 7

उदाहरण– (2) 6153 ÷ 9

6, 6+1=7, 7+5 = 12, 12+3=15

योग 9 से अधिक होने पर 9 से भाग देते हैं। भागफल का प्रथम अंक = 6, द्वितीय योग 7 में (तृतीय अंक 12 में एक 9 तथा 3 और है) 1 जोड़ने पर भागफल का द्वितीय अंक 8 प्राप्त होता है तथा तृतीय अंक 3 होगा, अतः अभीष्ट भागफल = 683, अंतिम योग 15 में 9 का भाग देने पर शेषफल 6 ही अभीष्ट शेषफल है।

उदाहरण– (3) 443322 ÷ 9

4, 4+4=8, 8+3=11, 11+3=14, 14+2=16, 16+2=18

तृतीय योग 11 में एक 9 तथा 2 शेष है, चतुर्थ योग 14 में एक 9 तथा शेष 5 है, पंचम योग 16 में एक 9 तथा शेष 7 है, अंतिम योग 18 में शेष शून्य है अतः अभीष्ट भागफल = 49258, अभीष्ट शेषफल = 0

(घ) बीजगणितीय भाग–

उदाहरण (1)– $(12x^2-8x-32) \div (x-2)$

$$\begin{array}{lr} x-2) & 12x^2 - 8x - 32 \\ \text{परावर्त्य } -2 \text{ का} = 2 & 24 + 32 \\ \hline & 12x + 16 + 0 \end{array}$$

$(\because -8+24=16)$

विधि– $\frac{12x^2}{x} = 12x$, x के गुणांक 12 को परावर्त्य 2 से गुणा करते हैं, गुणनफल 12×2=24, 24 में भाज्य की द्वितीय संख्या $-8x$ का गुणांक -8 जोड़ देते हैं अर्थात् $24+(-8) = 16$ जो भागफल की द्वितीय संख्या होगी, 16 को परावर्त्य 2 से गुणा करने पर 32 प्राप्त होते हैं, जो भाज्य के -32 के नीचे रखते हैं तथा योग करते हैं। अतः

$(12x^2-8x-32) \div (x-2) = 12x+16$

शेषफल = 0

उदाहरण (2)– $(x^3+7x^2+6x+5) \div (x-2)$

$\frac{x^3}{x} = x^2$

x^2 के गुणांक 1 को परावर्त्य 2 से गुणा करने पर 2 प्राप्त होता है जिसे $7x^2$ के गुणांक 7 में जोड़ने पर 9 प्राप्त होता है, 9 को परावर्त्य 2 से गुणा करने पर 18 प्राप्त होता है, 18 में $6x$ का गुणांक 6 जोड़ने पर 24 प्राप्त होता है अतः भागफल = $x^2 + 9x + 24$

24 को परावर्त्य 2 से गुणा करने पर 48 प्राप्त होता है तथा 48 में भाज्य का अचर 5 जोड़ने पर अभीष्ट शेषफल 53 प्राप्त होता है अतः

$$\begin{array}{lr} x-2) & x^3 + 7x^2 + 6x + 5 \\ \text{परावर्त्य } 2 & +2x + 18 + 48 \\ \hline & x^2 + 9x + 24 + 53, \end{array}$$

$(\because \frac{x^3}{x} = x^2)$

$\therefore$ भागफल = $x^2 + 9x + 24$, शेषफल = 53

उदाहरण (3)– $(x^3-3x+1) \div (x+3)$

$$\begin{array}{lr} x+3) & x^3 + 0x^2 - 3x + 1 \\ 3 \text{ का परावर्त्य } -3, & -3x + 9 - 18 \\ \hline & x^2 - 3x + 6 - 17 \end{array}$$

$(\because \frac{x^3}{x} = x^2)$

$\therefore$ भागफल = x^2-3x+6 तथा शेषफल = -17

वैदिक सूत्र-5

शून्यं साम्यसमुच्चये।

अर्थ– 'समुच्चय' समान होने पर शून्य होता है।

(When the 'Samuchaya' is the same, it is zero.)

'समुच्चय' शब्द के भिन्न-भिन्न प्रसंगों में अनेक अर्थ तथा सूत्र का उपयोग :

(i) 'समुच्चय' शब्द का प्रथम अर्थ वह पद जो सब पदों में सार्व गुणनखण्ड हो।

उदाहरण– यदि $9(x+1) = 7(x+1)$ तब $x+1 = 0$ या $x = -1$, यहाँ समुच्चय = $(x+1)$

(ii) 'समुच्चय' शब्द का द्वितीय अर्थ है अचर पदों के गुणनफलों का समान होना।

उदाहरण– $(x + 7)(x + 9) = (x + 3)(x+21)$

यहाँ $7\times9 = 3\times21$ अतः $x = 0$

(iii) 'समुच्चय' शब्द का तृतीय अर्थ है भिन्नों के अंश समान होने पर हरों का योग शून्य होना।

उदाहरण– $\frac{3}{2x-1} + \frac{3}{5x-7} = 0$

यहाँ अंश 3 समान है।

अतः $(2x-1)+(5x-7) = 0$

या $7x-8 = 0$

या $x = \frac{8}{7}$

(iv) 'समुच्चय' शब्द का चतुर्थ अर्थ है कुल योग।

उदाहरण– $\frac{2x+9}{2x+7} = \frac{2x+7}{2x+9}$

यहाँ अंशों का योग = $(2x+9)+(2x+7) = 4x+16$ तथा हरों का योग = $(2x+7)+(2x+9) = 4x+16$

अतः सूत्र के अनुसार $4x+16 = 0$ अतः $x = -4$

यदि अंशों का योग तथा हरों के योग में सार्व गुणनखण्ड (संख्यात्मक) हो तो भी उपर्युक्त विधि का उपयोग संभव है।

उदाहरण– $\frac{3x+4}{6x+7} = \frac{x+1}{2x+3}$

अंशों का योग = $(3x+4)+(x+1) = 4x+5$

हरों का योग = $(6x+7)+(2x+3) = 8x+10$
$= 2(4x+5)$

सूत्र के अनुसार $4x+5= 0$ अतः $x = -\frac{5}{4}$

(v) 'समुच्चय' शब्द का पंचम अर्थ है व्यवकलन अर्थात् घटाना।

उदाहरण– $\frac{3x+4}{6x+7} = \frac{5x+6}{2x+3}$

अंश ~ हर $= |(3x+4) - (6x+7)|$
$= 3x+3$ (बायाँ पक्ष)
$= |(5x+b) - (2x+3)|$
$= 3x+3$ (दायाँ पक्ष)

अर्थात् दोनों ओर अंश ~ हर समान हैं।

सूत्र के अनुसार $3x+3=0$ अतः $x = -1$

पुनः (iv) के अनुसार

$N_1+N_2 = (3x+4)+(5x+6)$
$= 8x +10$

तथा $D_1+D_2 = (6x+7)+(2x+3)$
$= 8x +10$

चूँकि $N_1+N_2 = D_1+D_2$

अतः $8x + 10 = 0$ या $x = -\frac{5}{4}$

अतः वैदिक गणित से इस द्विघात समीकरण के दोनों हल $x = -1$ तथा $x = -\frac{5}{4}$ सुगमता से प्राप्त होते हैं जबकि प्रचलन विधि में इस प्रकार की द्विघात समीकरण का हल इतना सुगम नहीं है।

(vi) 'समुच्चय' शब्द का षष्ठ अर्थ है कि समीकरण में सभी पदों के अंश समान हों तथा समीकरण के दोनों पक्षों के हरों का योग समान हो तो सूत्र के अनुसार हरों के योग को शून्य करने पर समीकरण का एक हल प्राप्त हो जायेगा।

उदाहरण–

$$\frac{1}{x-7} + \frac{1}{x-9} = \frac{1}{x-6} + \frac{1}{x-10}$$

चूँकि $(x-7)+(x-9) = (x-6)+(x-10)$

$2x - 16 = 2x - 16$ अतः सूत्र के अनुसार $2x - 16 = 0$ या $x = 8$

यदि समीकरण के पदों को पक्षान्तर करने पर सारे पद धनात्मक हों तथा सब पदों के अंश समान हों एवं हरों का योग समान हो तो उपर्युक्त विधि से हल प्राप्त किया जा सकता है।

उदाहरण–

$$\frac{1}{x-8} - \frac{1}{x-5} = \frac{1}{x-12} + \frac{1}{x-9}$$

पक्षान्तर करने पर

$$\frac{1}{x-8} + \frac{1}{x-9} = \frac{1}{x-12} + \frac{1}{x-5}$$

हरों का योग $(x-8)+(x-9)$

$= (x-12)+(x-5)$

$2x - 17 = 2x - 17$ अतः सूत्र से

$2x - 17 = 0$ या $x = \frac{17}{2}$

वैदिक सूत्र-5 के अनुप्रयोग

(i) जब समीकरण के पदों के अंश समान नहीं हों।

उदाहरण–

$$\frac{x-2}{x-3} + \frac{x-3}{x-4} = \frac{x-1}{x-2} + \frac{x-4}{x-5}$$

चूँकि बाँयें पक्ष में

$\frac{x}{x} + \frac{x}{x} = 1+1 = 2$

तथा दाँयें पक्ष में

$\frac{x}{x} + \frac{x}{x} = 1+1 = 2$

तथा $D_1+D_2=(x-3)+(x-4)=2x-7$

एवं $D_3+D_4=(x-2)+(x-5)=2x-7$

अतः सूत्र से $2x-7 = 0$ या $x = \frac{7}{2}$

इस प्रकार वैदिक सूत्र से समीकरण का एक हल सुगमता से प्राप्त किया जा सकता है।

(ii) जब समीकरण के पदों के अंश समान नहीं हों तथा हरों का योग भी समान न हो।

उदाहरण–

$$\frac{2}{2x+3} + \frac{3}{3x+2} = \frac{1}{x+1} + \frac{6}{6x+7}$$

यहाँ समीकरण के पदों के अंश समान नहीं हैं तथा दोनों ओर की हरों का योग समान नहीं है एवं हरों में x के गुणक भी समान नहीं है। सभी पदों के हरों में x के गुणक समान करने के लिए प्रथम पद के अंश तथा हर को 3 का गुणा, द्वितीय पद के अंश तथा हर को 2 का गुणा, तृतीय पद के अंश तथा हर को 6 का गुणा तथा चतुर्थ पद के अंश तथा हर को 1 का गुणा करने पर समीकरण–

$$\frac{6}{6x+9} + \frac{6}{6x+4} = \frac{6}{6x+6} + \frac{6}{6x+7}$$

अब

$D_1+D_2=(6x+9)+(6x+4)=12x+13$

तथा

$D_3+D_4=(6x+6)+(6x+7)=12x+13$

एवं सब पदों के अंश भी समान हैं अतः सूत्र से $12x + 13 = 0$ या $x = -\frac{13}{12}$

(iii) **तृतीय घात समीकरणों का हल**

उदाहरण (i) –

$(x-3)^3 + (x-9)^3 = 2(x-6)^3$

यदि गणित के वर्तमान उपलब्ध तरीके से इस समीकरण को हल करें तो तीनों पदों का पूर्ण घन करना पड़ेगा। जिसमें समय का अपव्यय होगा। षष्ठ वैदिक सूत्र से इसका हल बहुत सरल है–

घात रहित बाएँ पक्ष में $(x-3) + (x-9) = 2x-12 = 2(x-6)$

घात रहित दाएँ पक्ष में भी पद $= (x-6)$

अतः सूत्र से $(x-6) = 0$ या $x = 6$

उदाहरण (ii) –

$(x+a+b-c)^3 + (x+b+c-a)^3 = 2(x+b)^3$ प्रचलन विधि अति कठिन है परन्तु वैदिक विधि से बाएँ पक्ष के पदों का योग (घात रहित) = दायाँ पक्ष = $2x + 2b$

सूत्र से $2(x + b) = 0$ या $x = -b$

–सेवानिवृत्त प्राचार्य, कॉलेज शिक्षा
IV-D-86, जयनारायण व्यास कॉलोनी, बीकानेर

आर्य माइक्रोसॉफ्ट आई.टी.एल.ए. के राष्ट्रीय विजेता

हनुमानगढ़ जिले के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सिलवाला खुर्द के प्रधानाचार्य हरि कृष्ण आर्य माइक्रोसॉफ्ट इन्नोवेटिव टीचर्स लीडरशिप अवार्ड (आई.टी.एल.ए.) प्रतियोगिता में राष्ट्रीय विजेता घोषित किये गए हैं। इस प्रतियोगिता के लिए पूरे देश से राजकीय एवं प्राईवेट विद्यालयों से 131583 पंजीकृत शिक्षकों से प्राप्त 28579 आई.सी.टी. प्रोजेक्ट्स में से केवल छः का चयन राष्ट्रीय विजेता के रूप में किया गया है। अन्य पाँच शिक्षक पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और दिल्ली के हैं।

श्री आर्य अब अपनी प्रोजेक्ट का प्रस्तुतिकरण चेक गणराज्य की राजधानी प्राग में 27 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक आयोजित वर्ल्ड वाइड इन्नोवेटिव टीचर्स कॉन्फेरेंस में करेंगे। इनकी प्राग यात्रा का समस्त व्यय माइक्रोसॉफ्ट द्वारा वहन किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि श्री आर्य को गत वर्ष माइक्रोसॉफ्ट ने अपनी टॉप इन्नोवेटिव टीचर्स ऑफ वर्ल्ड की सूची में सम्मिलित किया था। इस सूची में भारत से अब तक केवल 9 शिक्षक ही सम्मिलित हो सके हैं।

श्री आर्य को हाल ही में 5 सितम्बर शिक्षक दिवस पर महामहिम राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी राष्ट्रीय आईसीटी अवार्ड से सम्मानित कर चुके हैं। इससे पूर्व भी वो अनेक अवार्ड प्राप्त कर चुके हैं जिसमें 2004 में तत्कालीन राष्ट्रपति डा. अब्दुल कलाम से अवार्ड प्राप्त करना भी सम्मिलित है। श्री आर्य ने अपने विषय जीव विज्ञान से सम्बन्धित प्रचुर मल्टी मीडिया कंटेंट तैयार किया है। जिसका उपयोग विदेशी छात्रों द्वारा भी किया जा रहा है। अपनी 'आभाषी कक्षा कक्ष' प्रोजेक्ट द्वारा ये भारत से ही विदेशी छात्रों की कक्षाएँ ले रहे हैं।

–हरि कृष्ण आर्य, प्रधानाचार्य
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सिलवाला खुर्द (हनुमानगढ़)

रपट

राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह - 2012

सोमवार, 8 अक्टूबर 2012, वेटेरनरी ऑडिटोरियम बीकानेर में आयोजित राज्यस्तरीय शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारी सम्मान समारोह-2012 सम्मान समारोहों की शृंखला में 20वाँ शानदार समारोह।

अब तक आयोजित किए गए अपने ही भव्य स्वरूप को पीछे छोड़ते हुए नया इतिहास रचते हुए नई दुल्हन की तरह सजे ऑडिटोरियम में सभी कर्मचारी अधिकारी उल्लास और उमंग से भरपूर और हों भी क्यों नहीं। सेवा को समर्पित श्रेष्ठ साथियों के सम्मान के लिए तो सभी को तत्पर रहना ही चाहिए। कोई काम छोटा बड़ा नहीं, किसी एक का नाम क्या लिया जाए सभी 'बेटी के ब्याह' को सफल बनाने में लगे।

सम्मान समारोह की भव्यता को नया आयाम मिला राज्य के माननीय गृह एवं यातायात राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) राजस्थान सरकार के मुख्य आतिथ्य स्वीकार करने से। विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे नगर विकास न्यास, बीकानेर के अध्यक्ष, हाजी मकसूद अहमद; वेटेरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर के कुलपति डॉ. ए.के. गहलोत और निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राज. डॉ. रविकुमार सुरपुर। निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान डॉ. वीना प्रधान ने समारोह की अध्यक्षता कर मान बढ़ाया।

माँ सरस्वती की मूर्ति पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन के साथ ही मुख्य अतिथि और गरिमामय मंच पर उपस्थित विशिष्ट अतिथियों ने कार्यक्रम का आगाज किया।

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय (लेडी एल्गिन), बीकानेर की छात्राओं ने सरस्वती वन्दना वीणा वादिनी वर दे ! का सरस गायन कर पूरे वातावरण को भावपूर्ण बना दिया। गरिमामय मंच पर उपस्थित मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, अध्यक्ष तथा शिक्षा अधिकारियों का पुष्प मालाओं से स्वागत किया गया।

अभिनन्दन के क्षणों को सुमधुर गीत "आज सुहाना दिन ... अभिनन्दन हम करें, आज प्रमुदित मन से सबको नमन करें।" से और आत्मीय बनाया लेडी एल्गिन की छात्राओं ने। समारोह का औपचारिक स्वागत भाषण, अनौपचारिक रूप से **श्री अविनाश व्यास** ने दिया।

सम्मान समारोह की अब तक की आयोजकीय पृष्ठभूमि को जोश के साथ प्रस्तुत किया **श्री ओमप्रकाश बोहरा** ने। उन्होंने बताया– प्रथम कर्मचारी सम्मान समारोह 30 मई 1990 को आयोजित हुआ था। तत्कालीन निदेशक श्री एल.के. पंवार की प्रेरणा और नेतृत्व से शुरू हुए कर्मचारी सम्मान समारोहों में सन् 2011 तक 537 कार्मिक सम्मानित हुए हैं। इस वर्ष 34 कार्मिकों का चयन हुआ है। 13962 मंत्रालयिक और 21050 सहायक कर्मचारियों में से 34 कार्मिकों का चयन करना एक जटिल प्रक्रिया है। अतः सम्मानित होने वाले कर्मचारी निश्चय ही बधाई के पात्र हैं।

स्वागत सम्मान के क्षणों को आगे बढ़ाते हुए विशिष्ट अतिथि कुलपति वेटेरनरी विश्वविद्यालय, **डॉ. ए.के. गहलोत** ने कहा कि राज्य और केन्द्र सरकार शिक्षा पर बहुत जोर दे रही है। राज्य में शिक्षा विभाग बहुत महत्वपूर्ण विभाग है। हम सभी की इच्छा है कि हमारा राज्य देश में अग्रणी बने। उन्होंने कहा– Knowledge is Power. भारत 2030 में विश्व की आर्थिक शक्ति हो सकता है।

कर्मचारियों के सम्मान को उन्होंने श्रेष्ठ परम्परा बताया और उम्मीद की यह परम्परा अन्य विभाग भी अपनायेंगे।

समारोह के विशिष्ट अतिथि और निदेशक प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान **डॉ. रविकुमार सुरपुर** ने अपने पदभार की शुरुआत में ही कुशल श्रेष्ठ लोगों के सम्मान कार्यक्रम से होने को अच्छा बताया। कर्मचारियों के सम्मान पर अपनी खुशी व्यक्त करते हुए आपने कहा– कार्यालय में श्रेष्ठ कार्य करने वाले अपने जीवन में भी श्रेष्ठ कार्य ही करते हैं। यदि कर्मचारी कार्यालय समय में ही अपना कार्य समय पर करते हैं तो उनके जीवन में भी कार्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बनता है।

समारोह के विशिष्ट अतिथि नगर विकास न्यास, बीकानेर के अध्यक्ष **हाजी मकसूद अहमद** ने कहा सरकार कोई भी हो श्रेष्ठ कर्मचारियों को सम्मान मिलना ही चाहिए। कर्मचारियों को सम्मान अवसर पर मिलने वाली सुविधाओं को बढ़ाने की ओर इशारा किया।

समारोह के मुख्य अतिथि माननीय गृह एवं यातायात राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) राज. सरकार **श्री वीरेन्द्र बेनीवाल** ने सम्मानित कर्मचारियों को बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

श्री बेनीवाल ने कहा– "वर्तमान में राज्य में एक बयार चल रही है, हर वर्ग का सम्मान

किया जाए।'' कर्मचारियों के महँगाई भत्ते की घोषणा हो या पदोन्नति की, सरकार संवेदनशील होकर कार्य कर रही है। आमजन के आधारभूत ढाँचे के सुदृढ़ीकरण के लिए सरकार प्रतिबद्ध है। देश व दुनिया में राज्य अपनी अलग पहचान बना रहा है।

समारोह की अध्यक्षता कर रहीं निदेशक माध्यमिक शिक्षा राजस्थान **डॉ. वीना प्रधान** ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कर्मचारियों के सम्मान समारोह को शुरू करवाने वाले ऊर्जावान अधिकारी एल.के. पंवार के प्रति धन्यवाद प्रकट किया कि उन्होंने कर्मचारियों और विभाग के हित में यह शानदार परम्परा शुरू की। प्रोत्साहन से कार्य में गति और गुणात्मकता बढ़ती है।

सम्मानित कर्मचारियों को विशेष बताते हुए उन्हें बधाई दी और जीवन के अन्य क्षेत्रों में भी वे आगे बढ़ें ऐसी शुभकामनाएँ प्रदान कीं।

शिक्षा विभाग में कार्य करने को भी उन्होंने विशेष अवसर के रूप में माना उन्होंने कहा यह ऐसा विभाग है जो दिशा और दशा बदल सकता है। कर्मचारियों का हौंसला बढ़ाते हुए आपने कहा कि ''आप वो कार्य कर रहे हैं, जहाँ से विकास शुरू होता है, प्रत्येक योजना शिक्षा से प्रभावित होती है।''

सम्मानित कर्मचारियों को तिलक, माला, साफा, शॉल, स्मृति चिह्न, प्रशस्ति पुस्तिका, श्रीफल, शिक्षक दिवस पर प्रकाशित पाँच पुस्तकों का सैट इत्यादि भेंट कर सम्मान किया जाता है। गत छः वर्षों से स्व. शिवरतन आचार्य फाउण्डेशन बीकानेर की ओर से सम्मानित कर्मचारियों में से एक को विशिष्ट पुरस्कार दिया जाता है। संस्थान के मानद अध्यक्ष विचित्र नारायण आचार्य ने बताया कि सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी के रूप में सम्मानित इस कर्मचारी का चयन एक समिति करती है और इस कर्मचारी को वीणावादिनी माँ सरस्वती की प्रतिमा के साथ, शॉल, प्रशस्ति पत्र और एक हजार रुपया नकद पुरस्कार प्रदान किया जाता है। इस वर्ष 2012 के लिए सर्वश्रेष्ठ कर्मचारी का विशेष पुरस्कार माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, बीकानेर के **श्री वेद प्रकाश ढल्ला** को प्रदान किया गया।

गरिमामय मंच पर आसीन मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि एवं अन्य विशिष्ट जनों के हाथों कर्मचारियों का सम्मान किया गया। इस क्रम में सम्मानित हो रहे कर्मचारियों के सम्मान में प्रशस्ति का प्रभावी वाचन **सुरेश व्यास** ने किया, **मदन मोदी** ने सहयोग किया।

अतिरिक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा राज. **श्री प्रेमसुख बिश्नोई** ने सम्मान समारोह के गरिमामय समापन से पूर्व सभी का आभार स्वीकारा। उन्होंने सम्मानित कर्मचारियों के सम्मान का असली श्रेय उनके परिवारजनों को दिया जिनके सहयोग के बल पर कर्मचारी कार्यालय में अच्छा कार्य कर पाए।

सम्पूर्ण आयोजन में उत्साह और अतिरिक्त जोश से कार्य करने वाले प्रत्येक कर्मचारी को धन्यवाद ज्ञापित किया। समारोह को अपनी प्रभावी आवाज, उचित आरोह-अवरोह व स्पष्ट उच्चारण से उद्घोषणा करने वाली उद्घोषिका डॉ. मेघना का भी आभार माना। राष्ट्रगान के पश्चात सभी ने भोजन का आनन्द लिया।

–मुकेश व्यास, व.प्र.स. (शिविरा)

राज्य स्तर पर सम्मानित शिक्षा विभाग के मंत्रालयिक एवं सहायक कर्मचारियों की नामावली, 2012

1. **श्री अनिल पालीवाल,** वरिष्ठ लिपिक, कार्यालय उपनिदेशक (माध्यमिक शिक्षा), उदयपुर।
2. **श्री शुजाअत अली,** वरिष्ठ लिपिक, कार्यालय उपनिदेशक (माध्यमिक शिक्षा), उदयपुर।
3. **श्री महेन्द्र सिंह रावत,** सहायक कर्मचारी, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर।
4. **श्री कन्हैयालाल किराड़ू,** सहायक कर्मचारी, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर।
5. **श्री धर्मचन्द लोढ़ा,** वरिष्ठ लिपिक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, देवली (टोंक)।
6. **श्री देवेन्द्र कुमार पारीक,** वरिष्ठ लिपिक, कार्यालय उपनिदेशक (प्रारम्भिक शिक्षा), अजमेर।
7. **श्री घनश्याम शर्मा,** वरिष्ठ लिपिक, राजकीय बा. उ.मा. विद्यालय, बौंली (सवाई माधोपुर)।
8. **श्री हरि हर दशोरा,** कार्यालय सहायक, कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक शिक्षा) चित्तौड़गढ़ ।
9. **श्रीमती सुनिता चौहान,** वरिष्ठ लिपिक, कार्यालय उप निदेशक (माध्यमिक) शिक्षा, कोटा।
10. **श्री ललित मोहन शर्मा,** वरिष्ठ लिपिक, कार्यालय उप निदेशक (माध्यमिक) शिक्षा, जयपुर।
11. **श्री सुरेश चन्द्र टेलर,** कार्यालय सहायक, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, प्रतापगढ़
12. **श्री कौशल कुमार सुमन,** कनिष्ट लिपिक, कार्यालय उप निदेशक (माध्यमिक) शिक्षा, कोटा।
13. **श्री बसंत राय,** वरिष्ठ लिपिक, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर।
14. **श्री दौलत राम,** वरिष्ठ लिपिक, कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक) बाँरा।
15. **श्री श्याम सुन्दर पालीवाल,** वरिष्ठ लिपिक, राज.बा.उ.मा. विद्यालय, अंबामाता, उदयपुर।
16. **श्री दीपेश कुमार शर्मा,** कनिष्ट लिपिक, कार्यालय उप निदेशक (माध्यमिक) शिक्षा, अजमेर।
17. **श्री मेहताब सिंह,** सहायक कर्मचारी, कार्यालय उप निदेशक (माध्यमिक) शिक्षा, अजमेर।
18. **श्री धर्मराज जैतावत,** कनिष्ट लिपिक, कार्यालय उपनिदेशक (माध्यमिक) शिक्षा, अजमेर।
19. **श्री योगेश कुमार शर्मा,** कनिष्ट लिपिक, राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय, रामपुरा, कोटा।
20. **श्री नितिन बक्षी,** कार्यालय सहायक, कार्यालय जि.शि.अ. (माध्यमिक) प्रथम, उदयपुर।
21. **श्री रामजी लाल मीणा,** वरिष्ठ लिपिक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मायजा, बूंदी।
22. **श्री चन्द्र प्रकाश विजय,** वरिष्ठ लिपिक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, कोटड़ी, छबड़ा, बाँरा।
23. **श्री जितेन्द्र कुमार मोयल,** कनिष्ट लिपिक, कार्यालय उप निदेशक (प्रारम्भिक शिक्षा), अजमेर।
24. **श्री मगनीराम शर्मा,** सहायक कर्मचारी, कार्यालय जि.शि.अ. (माध्यमिक) शिक्षा, चित्तौड़गढ़।
25. **श्री शिम्भु प्रसाद मोदी,** कनिष्ट लिपिक, प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर।
26. **श्री हेमन्त कुमार गहलोत,** कार्यालय सहायक, राज. उ.मा. विद्यालय, मेड़ता रोड, नागौर।
27. **श्री महावीर प्रसाद राठौड़,** सहायक कर्मचारी, कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी (प्रा.शि.), कोटा।
28. **श्री लटूर लाल,** सहायक कर्मचारी, कार्यालय उप निदेशक (माध्यमिक) शिक्षा, कोटा।
29. **श्री वेद प्रकाश ढल्ला,** कनिष्ट लिपिक, माध्यमिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर।
30. **श्री बाबूलाल लववंशी,** कनिष्ट लिपिक, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, मनोहरथाना, झालावाड़।
31. **श्री प्रेम सिंह चौहान,** प्रयोगशाला सेवक, राज. उ.मा. विद्यालय, बड़ी सादड़ी, चित्तौड़गढ़।
32. **श्री सत्यनारायण सोनी,** कनिष्ट लिपिक, राजकीय पायलेट माध्यमिक विद्यालय, केकड़ी (अजमेर)।
33. **श्री रामनिवास मीणा,** वरिष्ठ लिपिक, कार्यालय जि.शि.अ. (माध्यमिक शिक्षा) द्वितीय, उदयपुर।
34. **श्री मनमोहन गहलोत,** कनिष्ट लिपिक, प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय, राजस्थान, बीकानेर।

गणित विशेषांक में 'शिविरा विचार मंच' हेतु विचार आमंत्रण

"बालकों के लिए गणित शिक्षण रोचक और आनन्ददायी कैसे हो ? - मेरे अनुभव"

वर्ष 2012 अन्तर्राष्ट्रीय गणित वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। शिविरा पत्रिका का आगामी दिसम्बर 2012 का अंक 'गणित विशेषांक' के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। इस अंक में आपको राज्य ही नहीं राष्ट्र के जाने माने गणितज्ञों के आलेख पढ़ने को मिलेंगे। गणित रोचक और आनन्ददायी विषय है, इसके अध्ययन और अध्यापन में और विषय की व्यापकता के सन्दर्भ में 'शिविरा विचार मंच' के अन्तर्गत आपके अनुभवजन्य विचार आमंत्रित हैं। आप भी इस अंक में अपना रचनात्मक सहयोग कर सकते हैं, 'शिविरा विचार मंच' के अन्तर्गत अपने उपयोगी ज्ञानवर्द्धक विचार भेजकर। विषय है– "बालकों के लिए गणित शिक्षण रोचक और आनन्ददायी कैसे हो? - मेरे अनुभव"। ध्यान रहे– आपके विचार 15 नवम्बर, 2012 तक हमें प्राप्त हो जाएँ।

ब्लॉक स्तरीय 'आओ देखो सीखो' कार्यक्रम सम्पन्न

सर्व शिक्षा अभियान की ओर से बीकानेर की बालिकाओं के लिए सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें लगभग 400 बालिकाओं ने भाग लिया। (बाएं) प्रतियोगिता में निमग्न बालिकाएँ, (दाएं) सहायक निदेशक श्री राधेश्याम शर्मा से पुरस्कार प्राप्त करती एक बालिका। साथ हैं (दाएं) ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी श्री मोहम्मद सलीम।

आयुक्त महोदय राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद जयपुर के आदेशानुसार बीकानेर विकास खण्ड के मॉडल कलस्टर विद्यालयों की बालिकाओं हेतु ब्लॉक स्तरीय आओ देखो सीखो कार्यक्रम का दिनांक 26.9.12 को स्थानीय पशु चिकित्सा एवं पशुविज्ञान महाविद्यालय बीकानेर में आयोजित किया गया।

ब्लॉक स्तरीय आयोजन में बीकानेर ब्लॉक के चयनित 47 मॉडल कलस्टर विद्यालयों के लगभग 400 बालिकाओं ने कनिष्ट व वरिष्ठ वर्ग की पाँच विषयों की प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

कार्यक्रम में विभिन्न प्रतियोगिताओं के समापन सत्र में राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद जयपुर के सहायक निदेशक राधेश्याम शर्मा ने मुख्य अतिथि के पद से बालिकाओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि सर्व शिक्षा अभियान द्वारा बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने का इस प्रकार के आयोजनों से दूर दराज की बालिकाओं की हौंसला हफजाई होती है।

श्री शर्मा ने बताया कि सर्व शिक्षा अभियान द्वारा पूरे राजस्थान में शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े ब्लॉकों में बालिका शिक्षा हेतु एनपीईजीईएल जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का संचालन स्थानीय स्तर पर किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हम सब का दायित्व बनता है कि हम अपने आस-पास की 6-14 वर्ष की बालिकाओं को विद्यालय तक लायें।

कार्यक्रम में बीकानेर सर्व शिक्षा अभियान बीकानेर के अतिरिक्त जिला परियोजना समन्वयक राजेन्द्र माकड़ ने अपने संबोधन में कहा कि बीकानेर जिले में सर्व शिक्षा अभियान द्वारा सभी ब्लॉकों में एनपीईजीईएल कार्यक्रम के माध्यम से बालिका शिक्षा हेतु विशेष प्रयास किये जा रहे हैं।

ब्लॉक प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी सर्व शिक्षा अभियान बीकानेर मोहम्मद सलीम ने बीकानेर ब्लॉक की सर्व शिक्षा अभियान की विभिन्न गतिविधियाँ की जानकारी देते हुए कहा कि भविष्य में सर्व शिक्षा अभियान द्वारा बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता रहेगा।

सर्व शिक्षा अभियान बीकानेर ब्लॉक की कलावती खीचड़ ने बीकानेर ब्लॉक द्वारा सर्व शिक्षा अभियान में माध्यम से बालिका शिक्षा के क्षेत्र में किये जाने वाले विभिन्न कार्यक्रमों की विस्तार से जानकारी देते हुए बताया कि प्रतियोगिता में विजेता बालिका जिले व राज्य स्तर पर भाग लेगी।

कार्यक्रम के प्रभारी व सन्दर्भ व्यक्ति सुभाष जोशी ने बताया कि इस प्रतियोगिता में 47 मॉडल कलस्टर की बालिकाओं ने सामान्य ज्ञान, सुन्दर लेख, श्रुत लेख, शीर्ष गणना, अन्त्याक्षरी में उत्साह के साथ भाग लिया।

–सुभाष जोशी, सन्दर्भ व्यक्ति, सर्व शिक्षा अभियान, बीकानेर

पुस्तक परिचय

राजस्थानी लोक संस्कृति एवं कायमखानी समाज; *डॉ. (श्रीमती) नसीम एवं डॉ. हबीब खां गौराण; गौराण प्रकाशन, ए-38, जगदम्बा कॉलोनी, जोधपुर-342001; संस्करण : प्रथम 2007; पृष्ठ संख्या : 320; मूल्य : 350 रुपये।*

राजस्थानी संस्कृति विश्वविख्यात संस्कृति है। यही कारण है कि विश्वपटल पर राजस्थान का आकर्षण सैलानियों को मोहित करता आ रहा है। हमारे लोकगीत हमारी संस्कृति के प्रमुख स्रोत हैं। लोक के माध्यम से हज़ारों साल पुरानी धरोहर आज सुरक्षित है।

विभिन्न समाजों के रीतिरिवाज, रहन सहन, पहनावे, विवाह-उत्सव, तीज-त्यौहार, जात-झडूले आदि अवसरों के लोकगीतों में उस समाज की मनोहारी झलक मिलती है। इस दृष्टि से कायमखानी समाज भी रचा-पचा समाज है। कायमखानी समाज राजस्थान की समृद्ध संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। इस समाज की खासियत यह है कि हिन्दु-मुस्लिम संस्कारों के गंगजमुनी मेल की प्रतीक होकर सहिष्णु एवं समन्वयकारी धरोहर है जो आज के वातावरण को सरस और सहज बनाने में सहायक है।

कायमखानी समाज राजपूतों के चौहान वंश की एक शाखा से उत्पन्न हुई शाखा का परिवर्तित स्वरूप है। अपने सिद्धान्तों पर अटल रहने के कारण ही इन्हें कायमखानी कहा जाने लगा, वचनबद्धता, स्वामिभक्ति, स्वाधीनताप्रेमी, राष्ट्रप्रेम, शरणागत की रक्षा, अतिथि सत्कार, कार्यनिष्ठा, और संगठन की भावना इस समाज की प्रमुख विशेषताएं रही हैं।

राजस्थानी लोककला, लोक-गाथा, लोक-वार्ता, लोक-गीत तथा लोक परम्पराओं से ओतप्रोत कायमखानी समाज के लोकगीत हमारे चारों और चिर प्रचलित लोकगीत हैं। लोकगीत सुख दुख भरे जीवन का सतंरगी प्रवाह है। जिसमें लोक की आत्मा रची पची है। यह परंम्परा एक कंठ से दूसरे कंठ, एक हृदय से दूसरे हृदय पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही है। इनमें जीवन की मृदुलता एवं कठोरता का विशिष्ट संगम है।

लोकगीतों में प्राकृतिक संपदा, सूरज, हवा, वर्षा, तारे, आदि सभी समहित है। जैसे- चांदड़लो गयो भंवर जी गढ़ गिगनार, ओ रसीला।/कोई' किरत्यां तो झुक आई गढ़ कांगरै॥

भुरजाळा बादल, पुरवा हवा, सूरया भाई, आंवो मोरियो गीतों के माध्यम रहे है। सांस लेने में हवा जितनी आवश्यक है उतनी ही राजस्थानी गांवो में वर्षा आवश्यक है। काळ सूखा यहां पड़ता रहता है। सूरया हवा भाई व परवा हवा बहिन है। परवा चलने से बरसात आती है। उसकी मन्नत का यह गीत बरसात का आह्वान है :-

छिन एक चालो परवा भांण,
मेहां री म्हारे लग रही चाव।
छिन एक चालो परवा भांण,
दोय घड़ी जे रुको देधै-तो,
ताली भर दबाय आंगण मांय॥
छिन छिन भरज्याय सरवर ताळा॥

किसान के लिए सूरज आवश्यक है। उसकी गर्मी से अनाज उगता है। बढता है। पकता है। पशुओं के चारा उगता है।

सूरया वीर बकी ल्याई रै।/झाला दे-दे तोय बुलाऊं।/थूं म्हारे देस आई रै॥

बहन भाई का अटूट रिश्ता होता है। बहिन को भाई-बहिन बहुत अच्छे लगते हैं तो आशीष देती है :- बधज्यो रै, बीरा बड़-पीपल ज्यूं,/फळज्यो रै, बीरा, कड़वे नीम ज्यूं।/बधज्यो रै, कड़वा नीम ज्यूं,/बीरा बधज्यो ओ हरियाली दूब,/बधज्यो, बीरा बेलज्यूं,/फळज्यो अे भावज, फल-फूलां ज्यू।/बधज्यो अे भावज, मांयली दूब ज्यूं॥

राजस्थान में भाई बहिनों की अनेक कथाएँ हैं। हर्ष-जीण प्रसिद्ध लोक कथा है। कुरजां भी विरह गीत है। राजस्थानी लोकगीतों में ससुराल के परिवार को बड़ा सांस्कृतिक स्वरूप दिया गया है :-सहेलियां ऐ आंबो मोरियो, सासूजी म्हनांने पूछियो, थारो गहणो म्हानै पहर दिरवात। सासूजी गहणे रो कांई पूछो, गहणो ओ म्हांरो सो परवार। म्हारा सुसरोजी गढ रा राजवी। सासूजी रतन भंडार। म्हारा जेठजी बाजूबंद बांकड़ा, जेठाणी म्हारी बाजूबंद री लूंबा। म्हारो देवर चुड़लो दोतरो, देरांणी म्हांरी चुड़ले री मजीठ, सहेल्यां अे आंबो मोरियो॥

कायमखानी समाज में अजमेर ख्वाजा साहब के दरसन को लालायित होने का भाव भी देखा जा सकता है जो लोक भावों में आया है :- सुसरो सा नै पूछण म्है गई, कहवो तो जाऊं अजमेर।/थे जुग जीवों सायबा, थे दिखाई अजमेर।/थे जुग जीओ म्हारी गोरड़ी, थे म्हारी वंश बधाण॥

किसी भी जाति, क्षेत्र व प्रांत के लोकगीत वहां के निवासियों की रागात्मक प्रवृतियों का विशिष्ट प्रतिनिधत्व करते हैं। राजस्थानी इस मामले में बहुत धनी हैं। जीवन के हर महत्त्वपूर्ण कार्य में गीत का स्थान है। पूरा जीवन ही गीतमय है। जीवन के हर क्षण का स्पंदन इन गीतों की रागनियों में मुखरित हो उठा है।

लगभग 650 वर्षों के अपने गौरवपूर्ण इतिहास के कारण ''कायमखानी'' समाज के लोग राजस्थानी लोक संस्कृति के संरक्षक व पोषक रहे हैं। इनमें धर्मिक सहिष्णुता एवं सौहार्द्र कूट-कूट कर भरा हुआ है। यद्यपि कायमखानी मुसलमान है परन्तु हिन्दुओं के बहुत से रीति रिवाज व रस्में आज भी निर्बाध एवं बदस्तूर जारी हैं। कायमखानी दो भिन्न सांस्कृतिक धाराओं के बीच जीते हुए एक सेतु का कार्य कर रहा है। अपने शौर्य एवं वीरता के कारण राष्ट्र के लिए समर्पित रहे हैं। राष्ट्र के लिए प्राणों की बलि देने की परम्परा से राजस्थानी गौरवान्वित हुआ है।

किसी भी राष्ट्र समुदाय, प्रदेश या क्षेत्र की वास्तविक पहचान उसकी लोक संस्कृति से होती है। राजस्थान में लोक संस्कृति के जितने रंग है उतने कहीं भी नहीं है। राजस्थान की विविध सतरंगी संस्कृति रूप लोक संस्कृति की सारगर्भित झलक इस पुस्तक में झलकती है। हमारी लोक संस्कृति की यह पुस्तक एक अदभुत, अभूतपूर्व, और सार्वभौमिक कृति है। ऐसी महत्वूपर्ण सांस्कृतिक कृति के लिए विद्वान द्वय लेखक बधाई के पात्र हैं।

-पृथ्वीराज रतनू, सचिव
राजस्थानी भाषा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर

तो नहीं जाएगी आंखों की रोशनी

लंदन। बढ़ती उम्र में आंखों में 'एज रिलेटड मैकुलर डिजेनरेशन' (एएमडी) नामक बीमारी का होना सामान्य बात माना जाता है। इसकी वजह से लोग आंखों की रोशनी तक गंवाकर लाचार जिंदगी जीने पर मजबूर हो जाते हैं। लेकिन ट्रिनिटी कॉलेज लंदन के वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि उन्होंने एक ऐसे रसायन की खोज की है, जिसके एक टीके की मदद से इस प्रक्रिया को रोका जा सकता है।

फिलहाल जानवरों और दान में मिले आंखों पर किए जा रहे शोध के बाद वैज्ञानिकों ने कहा है कि एएमडी के प्रति प्रतिरोध पैदा करने में आईएल-18 नामक रसायन बहुत कारगर है।

प्रमुख शोधकर्ता डॉक्टर मैथ्यू कैंपबेल ने बताया कि ड्राई एएमडी के शिकार मरीजों के रेटिना में आईएल-18 का इंजेक्शन लगाने पर उसे वेट एएमडी का शिकार होने से बचाया जा सकता है। उन्होंने बताया कि वेट एएमडी की अवस्था में व्यक्ति तत्काल केंद्रीय दृष्टि खो देता है। औसतन प्रत्येक सात मरीजों में एक को इस समस्या का सामना करता है।

जर्नल नेचर मेडिसिन में प्रकाशित शोधपत्र में वैज्ञानिकों ने लिखा है कि वे आईएल-18 के लिए ऐसे जीन को इंजेक्शन की मदद से आंखों में प्रतिरोपित करने की कोशिश कर रहे हैं, जिससे जरूरत के हिसाब से आंखों में आईएल-18 नामक रसायन का स्राव होता रहे। डॉक्टर कैंपबेल ने लिखा है कि इस बीमारी के इलाज के लिए कड़ी मेहनत करने की जरूरत है क्योंकि आबादी का बड़ा हिस्सा बुजुर्गों का है और उनमें यह बीमारी आम है। हालांकि वर्तमान में एएमडी के इलाज के लिए आंखों में नियमित अंतराल पर इंजेक्शन लगाना पड़ता है। फोटोडायनामिक थेरेपी भी इसका एक विकल्प है।

लेकिन इसकी सफलता की दर महज 20 फीसदी है। वहीं इस शोध को वित्तीय मदद करने वाली संस्था चैरिटी फाइटिंग ब्लांइडनेस आयरलैंड की अव्रिल डैली ने कहा कि अगर यह प्रयोग सफल हो जाता है तो बुजुर्गों के जीवन में गुणात्मक सुधार होगा।

एल्कोहल से ठीक हुआ ट्यूमर और नैपकिन से भर गए जख्म

नई दिल्ली। एल्कोहल ट्यूमर को भी ठीक कर सकता है और सैनेटरी नैपकीन से किसी भी घाव को साधारण पट्टी से कहीं जल्दी सही किया जा सकता है। एम्स में एल्कोहल से अब तक रीढ़ की हड्डी के ट्यूमर के शिकार 60 मरीजों को सही किया जा चुका है, जबकि इमरजेंसी में गहरे जख्म वाले हर मरीज के घाव पर पट्टी की जगह सैनेटरी नैपकीन लगाया जा रहा है।

न्यूरोसर्जन डॉ. सरत चंद्रा ने बताया कि रीढ़ की हड्डी के ट्यूमर वरर्टिबल हैमेंजिना के इलाज के लिए तीन साल पहले मिथाइल एल्कोहल को इस्तेमाल करना शुरू किया गया। इसमें ट्यूमर की जगह पर हल्का सा चीरा लगाकर सीरिंज के जरिए एक सीमित मात्रा में एल्कोहल को पहुँचाया गया। ट्यूमर गलाने के लिए 95 प्रतिशत एल्कोहल ली गई। मिथाइल एल्कोहल के टॉक्सिक तत्व अन्य अंगों को भी गला सकते हैं, इसलिए सर्जरी से पहले जगह की फ्रेमिंग की गई। एल्कोहल से पहले हैमेंजिना ट्यूमर को खत्म करने के लिए रेडियोलॉजिकल एम्बूलाइजेशन किया जाता था। इसमें रक्तधमनियों के रास्ते से ट्यूमर खत्म करने वाले रसायन को पहुँचाया जाता था।

वहीं, एक नया प्रयोग इमरजेंसी में आने वाले मरीजों के घाव भरने के लिए भी किया जा रहा है। पाँच साल के एक प्रोजेक्ट के तहत इमरजेंसी सहित एम्स सर्जिकल वार्ड में घाव भरने के लिए सैनेटरी नैपकीन का इस्तेमाल हो रहा है। ऑनकोलॉजी विभाग के डॉ. अनुराग श्रीवास्तव ने बताया कि सैनेटरी नैपकिन पर किया गया अब तक का प्रयोग सफल रहा है।

दवा ही नहीं जूते भी करेंगे पार्किंसन के इलाज में मदद

नई दिल्ली। पार्किंसन बीमारी को नियंत्रित करने के लिए अब सिर्फ दवा पर ही निर्भर नहीं रहना होगा। एम्स के न्यूरोलॉजी विभाग के डॉक्टरों ने ऐसा जूता बनाया है। जिसकी मदद से कंपन को कम किया जा सकेगा। खास बात यह है कि इसके इस्तेमाल तक कम हो जाएंगी। बीते दो वर्षों में 70 मरीजों पर जूतों का सफल प्रयोग किया जा चुका है। विश्वभर में पार्किंसन के इलाज के लिए जूतों के इस्तेमाल का यह पहला प्रयोग माना जा रहा है।

पार्किंसन में मस्तिष्क के डिसऑर्डर को नियंत्रित रखने के लिए मरीज को कई चरणों में दवाएँ दी जाती हैं, लेकिन इसके बाद भी उसे चलने या काम करने में दिक्कत होती है। नया जूता इस दिक्कत को काफी हद तक कम करेगा।

एम्स की न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. माधुरी बिहारी ने बताया कि जूतों के जरिये शरीर की संवेदना को शिथिल या शून्य नहीं होने दिया जाएगा। इसके जरिए एक निर्धारित पैमाने पर नसों के माध्यम से मस्तिष्क तक कंपन पहुँचाया जाता है। ये जूते मरीज की शारीरिक गतिविधि को नियंत्रित करते हैं। पीडी शूज नामक इस प्रयोग को यूएस विश्वविद्यालय के सहयोग से किया जा रहा है। इसका अब तक 90 प्रतिशत प्रयोग सफल देखा गया है।

एक टीके से मिट जाएगा मलेरिया

लंदन। मच्छरों के काटने से फैलने वाली खतरनाक बीमारियों में मलेरिया का नाम सबसे ऊपर है। दुनिया भर में ही मच्छर जनित बीमारियों में सबसे ज्यादा मौतें मलेरिया के चलते ही होती है। लेकिन, जल्द ही मलेरिया की मुसीबत से लोगों को राहत मिल सकती है।

आस्ट्रेलिया के शोधकर्ताओं ने मलेरिया का मुकाबला करने में सक्षम एंटीबॉडीज का पता लगाने में कामयाबी हासिल करने का दावा किया है। इसके जरिए विकसित टीके से मलेरिया को दूर रखने में कामयाबी मिलेगी। शोध के नतीजों को जर्नल ऑफ क्लीनिकल इंवेस्टीगेशन रिपोर्ट में प्रकाशित किया गया है।

मच्छर के जरिए फैलने वाली बीमारियों पर लगाम लगाने के लिए प्रभावी दवा की खोज लगातार की जाती रही है। लेकिन, वैज्ञानिकों को इसमें खास कामयाबी नहीं मिल सकी है। खासतौर पर अफ्रीका और एशिया के देशों में

मलेरिया के चलते हर साल लाखों लोगों की मौत हो जाती है। अब शोधकर्ताओं ने इस दिशा में एक बड़ा डग भरने का दावा किया है। उन्होंने मलेरिया के प्रति प्रतिरोधी क्षमता विकसित कर चुके लोगों के अंदर विकसित एंटीबॉडीज की पहचान करने में कामयाबी पाई है। ये एंटीबॉडीज पीएफईएमपी 1 प्रोटीन को निशाना बनाते हैं। मलेरिया पैदा करने वाला यह प्रोटीन मच्छर में रहने वाले परजीवी प्लाज्मोडियम फैल्सीपेरम द्वारा छोड़ा जाता है। ऑस्ट्रेलिया के शोध केन्द्र बरनेट इंस्टीट्यूट के अगुवा शोधकर्ता जेम्स बेसन के मुताबिक इन एंटीबॉडीज के प्रयोग से मलेरिया की रोकथाम करने वाले इफेक्टिव वैक्सीन विकसित करने की संभावना बलवती हो गई है।

इससे पहले शोधकर्ताओं के लिए मलेरिया प्रोटीन पहेली बना हुआ था। इस प्रोटीन को वेरिएंट सर्फेस एंटीजंस (वीएसए) भी कहा जाता है।

धड़कन से ऑन होंगे कंप्यूटर

लंदन। पासवर्ड आज की जिंदगी का जरूरी हिस्सा है। मगर कई बार लोग अपना पासवर्ड भूल जाते हैं और मुश्किल में पड़ते हैं। इस समस्या को दूर करने के लिए वैज्ञानिकों ने दिल की धड़कन को ही पासवर्ड के बतौर इस्तेमाल करने की तकनीक विकसित करने में जुटे हैं।

चीन के वैज्ञानिक एक ऐसी सुरक्षा तकनीक विकसित कर रहे हैं, जिसमें दिल की धड़कनों की मदद से इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को संचालित किया जा सकेगा।

ताइवान के ताइचुंग स्थित नेशनल चुंग हैसिंग यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों का कहना है कि हरेक इनसान का दिल अलग तरीके से धड़कता है। इसी वजह से हरेक व्यक्ति की धड़कन का इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम संकेत भी अलग होता है। वास्तव में किन्हीं दो व्यक्तियों के इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम संकेत एक जैसे नहीं होते। इसी विशेषता को नए बायोमीट्रिक हथियार के रूप में विकसित किया जा रहा है।

इन वैज्ञानिकों का कहना है कि जब तक व्यक्ति जीवित रहता है, उसके दिल की धड़कनें चालू रहती हैं। ऐसे में इन धड़कनों को गणितीय प्रणाली में बदलकर कंप्यूटर सुरक्षा तकनीक के हथियार के रूप में विकसित किया जा सकता है।

प्रमुख शोधकर्ता चुन लियांग लिन ने कहा कि इस तकनीक की उपयोगिता जाँचने के लिए हमने दो लोगों के इलेक्ट्रोकार्डियोग्राम अर्थात ईसीजी संकेतों को उनकी हथेलियों के माध्यम से हासिल किया। फिर उन्हें गणितीय आंकड़ों में परिवर्तित किया।

ईसीजी लिन ने कहा, हमने पाया कि इन आंकड़ों का इस्तेमाल पासवर्ड के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। उनका दावा है कि यह अन्य प्रणालियों के मुकाबले कहीं अधिक सुरक्षित भी है।

उन्होंने कहा, अब तक बायोमीट्रिक पहचान सुनिश्चित करने के लिए उंगलियों के निशान और आंखों की पुतलियों का इस्तेमाल होता है। इसके बावजूद लोग तस्वीरों की मदद से इसमें धांधली करते हुए पाए गए हैं। लेकिन हमारे द्वारा विकसित तकनीक में हथेलियों से रिकॉर्ड की गई धड़कनों को एक बार रिकॉर्ड करने के बाद हमेशा पासवर्ड के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। इसमें धोखाधड़ी करने की भी आशंका नहीं होगी। शोधकर्ताओं को उम्मीद है कि यह तकनीक जल्द ही लोकप्रिय होगी।

लिन ने कहा कि निकट भविष्य में वह ऐसे उपकरण विकसित करने की सोच रहे हैं, जिन्हें इस्तेमाल करने के लिए बस छूने भर की जरूरत होगी।

बैटरी जो चलती है वातावरण की गर्मी से

हांगकांग पोलीटेक्निक यूनिवर्सिटी के छात्रों ने ग्रैफीन आधारित एक ऐसी बैटरी विकसित की है, जो आसपास की गर्मी को बिजली में बदल कर आपके घरेलू उपकरणों को चला सकेगी। बिजली की कमी वाले दूरस्थ इलाकों और आपातकालिक स्थिति में यह आविष्कार एक वरदान साबित हो सकता है। छात्रों का कहना है कि एक साधारण विलयन पर आधारित उनकी बैटरी बीस दिन तक बिना कोई बाहरी मदद लिए एक एलईडी लैंप को लगातार जलाती रही। पर्यावरण सम्मत यह छोटी-सी तकनीक 'स्वचालित टेक्नोलॉजी' की दिशा में एक बड़ा कदम साबित हो सकती है।

इस युक्ति के पीछे का सिद्धांत यह है कि किसी भी विलयन के आयन गर्मी के कारण गतिशील होकर ऊर्जा दे सकते हैं। छात्र आविष्कारकों ने इस काम के लिए एक ग्रैफीन की पट्टी लेकर उसे कुछ तारों द्वारा एक एलईडी बल्ब से जोड़ दिया। इस प्रकार तैयार किए गए सर्किट को उन्होंने ग्रैफीन वाले हिस्से की तरफ कॉपर क्लोराइड के विलयन में डाल दिया। जब उन्हें स्पष्ट परिणाम नजर नहीं आया तो उन्होंने इस प्रकार के छह सर्किट सिरीज में जोड़ दिए और बल्ब तुरंत जल उठा। इसका मतलब कि एलईडी को प्रकाशित करने के लिए दो बोल्ट की बिजली तैयार हो चुकी थी।

इसके पीछे की वैज्ञानिक और तकनीकी प्रक्रिया को इस आविष्कारक दल के मुखिया जिहान जू ने कुछ इस प्रकार समझाया। इस विलयन के कॉपर आयन तीन सौ मीटर प्रति सेकेंड की रफ्तार से गति करते हैं। यह गति कमरे के सामान्य ताप पर भी उपलब्ध होती है। जब ये आयन ग्रैफीन की पट्टी से टकराते हैं तो इस टक्कर से पैदा होने वाली ऊर्जा के कारण ग्रैफीन की सतह पर उभर आए इलेक्ट्रॉन अपने स्थान से बाहर फेंक दिए जाते हैं। इस प्रकार निर्बंध हुए इलेक्ट्रॉन के सामने दो विकल्प होते हैं। या तो यह इलेक्ट्रॉन कॉपर आयन से संबद्ध हो जाता है, अन्यथा ग्रैफीन की सतह पर आगे बढ़ता हुआ वहाँ लगे सर्किट में प्रवाहित हो जाता है। परन्तु विलयन के मुकाबले ग्रैफीन की सतह पर चलना इलेक्ट्रॉन के लिए कम रुकावट वाला होता है। अतः अधिकांश इलेक्ट्रॉन सर्किट में प्रवाहित होने लगते हैं, जिससे एलईडी को विद्युत प्रवाह मिलता है।

कुछ लोगों ने इस विद्युत धारा का स्रोत आसपास की गर्मी के होने पर संदेह जताया है। उनका कहना है कि यह विधि अव्यावहारिक और तर्कहीन है। इस पर विद्यार्थी आविष्कारकों ने यह प्रदर्शित किया कि विलयन को गर्म करने पर विद्युत विभव में वृद्धि होती है। एक खास यह भी है कि अल्ट्रासाउंड के प्रयोग से भी बिजली की मात्रा में बढ़ोत्तरी देखी गई है।

हनुमानगढ़

रा.मा.वि., भोगराना को श्रीमती जेठी देवी से कक्षा प्रथम से दसवीं तक विद्यालय में अध्ययनस्त अनुसूचित जाति के 160 छात्र-छात्राओं को स्वेटर, श्री रणजीत सिंह बेनीवाल से वाटर कूलर, सर्वश्री भैरूसिंह शेखावत, बालकिशन शर्मा प्रत्येक से एक-एक डबल लॉक आलमारी, सर्वश्री ओमप्रकाश जाखड़, मनीराम तेतरवाल प्रत्येक से एक-एक आलमारी, श्री मोहर सिंह बेनीवाल से वाटर फिल्टर स्टील एक, श्री आशाराम बेनीवाल से मूविंग चेयर दो, श्री दयाराम सिहाग से एक दीवार घड़ी प्राप्त हुई। **रा.मा.वि., गुडिया** को श्री मेहरचन्द कस्वां (सेवानिवृत्त) से एक आलमारी लागत 5500 रुपये तथा खेल का सामान एवं टाट पट्टियाँ लागत 5500 रुपये। **रा.मा.वि., मानकथेड़ी** को श्री ख्यालीराम सहारण से 2 विद्युत पंखे व विद्युत कनैक्शन लागत 6200 रुपये, श्री मुखराम सहारण से विद्युत फिटिंग लागत 6000 रुपये, शर्मा बाल मन्दिर उ.मा.वि. से एक लोहे की आलमारी (6×4) लागत 6200 रुपये, श्री अजायब सिंह मान (से.नि. प्रधानाध्यापक) से एक लोहे की आलमारी लागत 5200 रुपये, जीनियस मॉडल उ.मा.वि. से एक प्रधानाध्यापक मेज लागत 4000 रुपये, श्री मुकेश बुडानिया से एक प्रधानाध्यापक कुर्सी लागत 2500 रुपये, श्री सचिन जेतली से तीन विद्युत पंखे लागत 3600 रुपये, सर्वश्री प्रवीण अरोड़ा, राजेन्द्र सहारण, प्रत्येक से दो-दो विद्युत पंखे लागत प्रत्येक की 2600 रुपये, श्री झाबरमल जोशी से दो विद्युत पंखे लागत 2400 रुपये, सर्वश्री जालूराम सहारण, बजरंग लाल भार्गव, बनवारीलाल विश्नोई, परमवीर सिंह थिन्द व्या., प्रवीण भाटिया, रेखा सामन्त, विमला गोदारा, चन्द्रशेखर ओझा, कनिष्ठ अभियंता, रविन्द्र शर्मा हैप्पी, श्री धीरज अरोड़ा, त्रिलोक सिंह कलसी, मनफूल सिहाग, खिराजराम भाम्भू, औंकार मारबाल, बेधड़क विश्नोई प्रत्येक से एक-एक विद्युत पंखा प्रत्येक की लागत 1200 रुपये, श्री जसवन्त सहारण से छः प्लास्टिक कुर्सियाँ लागत 2280 रुपये, श्री गुलाम मोहम्मद पठान से 5 प्लास्टिक कुर्सियाँ लागत 1900 रुपये, श्री आदराम भाम्भू से चार प्लास्टिक कुर्सियाँ लागत 1500 रुपये, कक्षा 10 के विद्यार्थियों से 2 कैनिंग कुर्सियाँ लागत 1100 रुपये, श्री पूरणनाथ से 25 मेज व 25 स्टूल लागत 20,000 रुपये, श्री कृष्ण लाल भाम्भू से मेज व स्टूल लागत 5100 रुपये, सर्वश्री पतराम सहारण, साहबराम सहारण (सरपंच), हरिराम बावरी मानक थेड़ी सीनियर क्रिकेट क्लब ए प्रत्येक से स्टूल व मेज तथा प्रत्येक की लागत 1100 रुपये, शाला स्टाफ राजकीय माध्यमिक विद्यालय मानक थेड़ी से एक दरी (16×20) लागत 5440 रुपये, श्री लाधूराम तरड़ से दो स्पीकर बॉक्स सहित, एक माइक, एक माइक स्टैण्ड लागत 2500 रुपये, विद्यालय विकास व पुरस्कार समिति से एक लेक्चर स्टैण्ड लागत 2500 रुपये। **रा.उ.प्रा.वि., दुर्जाना** को मोटाराम फगेड़िया से विद्युत कनैक्शन लागत 6100 रुपये, छिन्द्र सिंह सहारण से एक दरवाजे व खिड़की की जोड़ी लागत 5740 रुपये, सर्वश्री दलीप कुमार कटारिया, कक्षा 8 के विद्यार्थी राकेश कुमार फगेड़िया, कुरड़ाराम सहू, रामचन्द्र सहारण, ओमप्रकाश सहारण, सन्तकुमार सहू, राजेराम बरोड़ (प्र.अ.) प्रत्येक से एक-एक पंखा प्राप्त हुआ है। **रा.बा.उ.प्रा.वि., मुन्सरी** में श्री रामकुमार बेनीवाल, सत्यनारायण, दलीप, रामप्रताप एवं राजेन्द्र बेनीवाल पाँच भाइयों द्वारा स्व. माता जयकौरी की पुण्य स्मृति में मुख्यद्वार की साज-सज्जा तथा विद्यालय में सरस्वती प्रतिमा की स्थापना लागत 5100 रुपये, श्री अमर सिंह भाम्भू द्वारा लेजर प्रिन्टर लागत 7000 रुपये, श्री रामकुमार, भादर सिंह, महेन्द्र सिंह बेनीवाल द्वारा एक बड़ी मेज लागत 5100 रुपये, श्री नत्थूराम गोदारा से एक आलमारी लागत 5100 रुपये, श्री सुभाष पूनियां से कार्यालय मेट लागत 5000 रुपये, श्री आत्माराम (उप सरपंच) से कम्प्यूटर कक्ष-मेट लागत 3000 रुपये, श्री श्रीचन्द फगेड़ियां विद्युत मोटर लागत 2700 रुपये, श्री उदमीराम नाई से नकद 2100 रुपये, श्री जैसराज खीचड़ से नोटिस बोर्ड लागत 2100 रुपये, श्री रणवीर सोनी से एक पंखा लागत 1300 रुपये प्राप्त हुए।

करौली

रा.बा.उ.मा.वि., मोहन नगर, हिण्डौन सिटी में श्री केदारलाल गुप्ता 50,000 रुपये की लागत से बरामदा व छत का निर्माण करवाया। श्री नरेन्द्र कुमार जैन से 10 लोहे के बड़े चौकोर ट्री गार्ड लागत 30,000 रुपये तथा 7,100 रुपये नकद प्राप्त हुए। श्री रमेश खानावालो से दो फर्श तथा 20 गर्म जर्सी, अग्रसेन महाविद्यालय से चार सेलो चेयर व दो बड़े कालीन, नगर पालिका हिण्डौन से 150 ट्रॉली मिट्टी मैदान भराव।

अजमेर

रा.उ.मा.वि., कड़ेल को सुश्री सरला माहेश्वरी (से.नि.प्र.) से 101 टेबिल व 101 स्टूल लोहे की लागत 1,18,675 रुपये। **रा.मॉडल बा.उ.मा.वि., अजमेर** को श्रीमती नमिता मेहरा से चार सिलिंग फैन ओरियन्ट कम्पनी के प्राप्त हुए। **रा.उ.प्रा.वि., कायड़ (श्रीनगर)** को हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड कायड़ माईन्स से 100 दरी पट्टी लागत 11,097 रुपये, टेबिल (5.5×2.5×1.5), बैंच (5.5×1.5× 1.25) 60 सैट लागत 1,09,000 रुपये, 100 स्वेटर लागत 20,000 रुपये।

अलवर

रा.उ.मा.वि., रिवाली में श्री वीरेन्द्र यादव, डा. सविन्द्र व रविन्द्र, रोहित व मोहित द्वारा 2,00,000 रुपये की लागत से ट्यूबवेल मय मोटर फिटिंग का निर्माण कराया गया। **रा.मा.वि., तरवाला पं.स. किशनगढ़बास** को श्री पूर्णमल रहीसा डीलर से एक कार्यालय मेज डबल रैक लागत 2,700 रुपये, श्री विजयपाल गुर्जर डीलर से चार गद्दीदार कुर्सी लागत 3,200 रुपये, श्री बिजेन्द्र सिंह गुर्जर (सरपंच) से दो गद्दीदार कुर्सी लागत 1600 रुपये, सर्वश्री गंगाप्रसाद (व.अ.), बचनलाल गुप्ता (अ.), रामस्वरूप भजन (अ.), धर्मपाल मुखीजा (अ.) से प्रत्येक से एक-एक पंखा तथा प्रत्येक की लागत 750 रुपये। विद्यालय स्टाफ से 20 स्टूल-मेज लागत 15,215 रुपये, जनसहयोग से 27 स्टूल-मेज लकड़ी की लागत 14,000 रुपये तथा विद्यालय का मुख्यद्वार के गेट लागत 9,150 रुपये। श्री अमरसिंह से दो पंखा लागत 1100 रुपये, श्री रमेश गुर्जर से एक पंखा लागत 550 रुपये, श्री चेतन प्रकाश गुर्जर (स.क.) से 2,000 रुपये नकद, श्री सुरेश हवलदार गुर्जर से 1,000 रुपये नकद, श्री मग्गनराम गुर्जर (हवलदार) से 20 फीट पाइप झण्डे के लिए लागत 1,000 रुपये, श्री बिन्दु पटेल से 1100 रुपये नकद, श्रीमती कोमल भारद्वाज (अ.) से एक पंखा लागत 1150 रुपये। **शहीद दलीप सिंह रा.मा.वि., खोहर** में कैप्टन रामपाल सिंह, छत्रपाल, सत्यवीर, रत्नसिंह, राघव द्वारा 3,00,000 रुपये की लागत से एक कमरा (24×16) मय बरामदा का निर्माण कराया गया। श्री लखमीचन्द, रतीराम, मदनलाल जांगिड़ द्वारा 3,00,000 रुपये की लागत से एक कमरा (24×16) मय बरामदा का निर्माण कराया गया। गांव के जनसहयोग द्वारा 3,50,000 रुपये की लागत से एक कमरा (25×20) मय बरामदा का निर्माण कराया गया। श्री जगनसिंह, फूलसिंह, राघव द्वारा 1,00,000 रुपये की लागत से एक बरामदा (55 फीट) का निर्माण करवाया गया। श्री पूर्णसिंह, दलीप सिंह राघव द्वारा 2,50,000 रुपये की लागत से मुख्य गेट का निर्माण करवाया गया। गांव के चयनित भामाशाहों के सहयोग से पानी की 3 एच.पी. की मोटर फिटिंग सहित लागत 45,000 रुपये। **रा.मा.वि., हमींदपुर** में श्री सलूनाराम, जगदीश यादव द्वारा 6,00,000 रुपये की लागत से 20'×25' एवं 10'×25' का बरामदा का निर्माण करवाया गया। **रा.बा.उ.प्रा.वि. नं.1 बहरोड़** को जय भारत क्लब बहरोड़ से 30 छात्राओं को विद्यालय पोशाक लागत 4500 रुपये, सर्वश्री राधाकृष्ण माहेश्वरी, प्रीतम पंजाबी (सरदार जी फैशन हाउस बहरोड़) से प्रत्येक से 24-24 स्वेटर लागत प्रत्येक की 3,120 रुपये। सर्वश्री रोहिताश्व यादव, अशोक कुमार, राजू सैनी, अनिल कुमार, नीरू यादव, प्रत्येक से 10-10 स्वेटर तथा प्रत्येक की लागत 1300 रुपये, विद्यालय स्टाफ से 3 मेज - 3 कुर्सी लकड़ी की लागत 4800 रुपये, गुप्तदानी से 10 स्वेटर लागत 1300 रुपये प्राप्त हुए।

प्रतिध्वनि

पिसनहारी का कुआँ

पिसनहारी का कुआँ शीर्षक पढ़कर आपका चौंकना स्वाभाविक ही है। शिक्षा की पत्रिका में पिसनहारी का कुआँ ! तो पहले शीर्षक की अन्तर्कथा जान लेते हैं। बहुत पुरानी बात है। उत्तर प्रदेश में मथुरा के पास एक बाल विधवा रहती थी। निपट अकेली। साध्वी-सद्चरित्रा। पेट पालने के लिए लोगों का आटा पीसती। जो पिसाई मिलती, उससे अपना पेट भरती और दो-दो पैसे बचाकर जमा करती। छोटी आमदनी पर बड़ा ध्येय– 'शहर के रास्ते पर कुआँ बनाऊँ ताकि आते-जाते लोग पानी पी सके'। यह मंगल भाव फलीभूत हुआ। बूँद-बूँद से घटे भरे की तर्ज पर कुआँ बना सकने जितना पैसा जमा हो गया और इसने पक्का कुआँ बनवाया। दिल्ली-आगरा मार्ग पर वह कुआँ आज भी है; जहाँ यात्री रुककर अपनी प्यास बुझाते हैं, दिल से दुआ देते हैं। यह कुआँ पिसनहारी के कुएँ के नाम से जाना जाता है। मानवीयता की कितनी बड़ी शिक्षा निहित है इस दृष्टान्त में। शिक्षा का उद्देश्य केवल अंक-अक्षर का ज्ञान कराना ही नहीं अपितु दया, करुणा एवं परोपकार भाव का बीजारोपण बच्चों के हृदय में कराना है। इस दृष्टि से इस पिसनहारी के शैक्षिक स्तर का आप अंदाज लगा सकते हैं। हमारे कक्षाकक्षों में मानवीय गुणों का विकास करने का उपक्रम किया जाना चाहिए जिनकी पाठ्यपुस्तक व पाठ्यचर्या स्वयं शिक्षक एवं उनका कार्य व्यवहार होता है।

तीर्थाटन के निकले एक दल के लोग प्यास के मारे जंगल में भटकते रहे। तलाशते-तलाशते आखिर एक पानी के सोते तक पहुँच गए जो सहज ही में राहगीरों के दृष्टव्य नहीं था। सबने पानी पिया। दो घड़ी आराम किया। जब जाने को हुए तो एक ने कहा, ''मैं अब यहीं रहूँगा। आने-जाने वालों को जल का पता बताऊँगा; पानी पिलाऊँगा।'' सब देखते रह गए। वह नहीं गया तो नहीं ही गया। उसका तीर्थ पूर्ण हो गया। तीर्थ का फल मिल गया। वह स्वयं तीर्थ बन गया पिसनहारी की तरह।

हमारे धर्मशास्त्रों एवं नीतिकारों के अनुसार जल का अत्यन्त महत्व है। वेदों में कहा है कि जल अमृत है, जल औषधि है। वह रोगों को नष्ट करने वाला है। चाणक्य कहते हैं, ''अजीर्ण होने पर जल औषधि है, पच जाने पर जल बल देता है। भोजन के समय जल अमृत के समान है।'' जल को लेकर इन दिनों जो चिन्ता व्यक्त की जा रही है, वह बेवजह नहीं है। जिस तरह अंधाधुंध बिना सोचे समझे हम पानी का उपयोग कर रहे हैं, वह कभी-कभी और कहीं-कहीं तो दुरुपयोग लगता है। पानी की एक-एक बूँद बेशकीमती है। जल तो प्रकृति की ओर से मिला अनुपम उपहार है। हमें उसका महत्व समझना चाहिए; अन्यथा भावी सन्तति का भविष्य संकट में होगा। महान अंग्रेजी चिन्तक टॉमस फुलर की चेतावनी कहीं सच न हो जाए। उन्होंने सावधान करते हुए कहा था, ''हम जल की कीमत तब तक नहीं पहचानते, जब तक कुआँ सूख न जाए।''

हमें कुओं को सूखने नहीं देना है बल्कि उन्हें हरा भरा रखना है। जीव मात्र के कल्याण भाव से कुएँ खुदवाने भी हैं मथुरा की उस माँ बनी पिसनहारी की तरह। माँ का काम जन्म देना ही नहीं, सन्तति का भरणपोषण भी करना है। देवकी माँ है, तो यशोदा भी माँ है बल्कि यह कह सकते हैं कि बाल कन्हैया के लिए तो वास्तविक माँ यशोदा है। देवकी माँ, तो यशोदा बड़ी माँ।

यजुर्वेद में जल से प्रार्थना करते हुए कहा है– **यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥** अर्थात् जैसे माँ अपनी सन्तान को दूध पिलाती है, वैसे ही हे जल ! जो तुम्हारा कल्याणतम रस है, उसे हमें प्रदान करो।

राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री अशोक गहलोत वर्षों से नारा दिए हैं– जल बचाओ (Save Water) उन्हें जल का भविष्य दिखाई दे रहा है। इसीलिए नागरिकों से अपील करते हैं पानी बचाओ। जैसे बिजली की बचत ही बिजली का उत्पादन है वैसे ही जल की बचत भी जल का उत्पादन है अतः थोड़े तंग हाथ से पानी का उपयोग करें। जितनी आवश्यकता हो उतना ही पानी काम लें। जितना बचाएँगे, जितना संरक्षण करेंगे एक तरह से उतना ही पानी पैदा करेंगे। विद्यालय प्लेटफार्म जल संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते हैं जिसके पुरोधा शिक्षकों को ही बनना है।

–ओमप्रकाश सारस्वत, वरिष्ठ सम्पादक
opsaraswat58@gmail.com

''हमें कुओं को सूखने नहीं देना है बल्कि उन्हें हरा भरा रखना है। जीव मात्र के कल्याण भाव से कुएँ खुदवाने भी हैं मथुरा की उस माँ बनी पिसनहारी की तरह। माँ का काम जन्म देना ही नहीं, सन्तति का भरणपोषण भी करना है। देवकी माँ है, तो यशोदा भी माँ है बल्कि यह कह सकते हैं कि बाल कन्हैया के लिए तो वास्तविक माँ यशोदा है। देवकी माँ, तो यशोदा बड़ी माँ।''

प्रकाशक, मुद्रक, सम्पादक डॉ. वीना प्रधान द्वारा डिपार्टमेंट ऑफ एज्यूकेशन गवर्नमेंट ऑफ राजस्थान, बीकानेर के लिए माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान, बीकानेर से प्रकाशित एवं कोटावाला ऑफसेट, 82, सुदर्शनपुरा, इण्डस्ट्रियल एरिया, जयपुर से मुद्रित। © प्रधान सम्पादक : डॉ. वीना प्रधान